वाणी

वर्ष : 39 अंक 147 दिसंबर 2025

पत्रिका पढ़ने के लिए, क्यूआर कोड स्कैन करें

इण्डियन ओवरसीज़ बैंक
तिमाही गृह पत्रिका

गतिविधियाँ

राष्ट्रीय एकता दिवस के दौरान शपथ लेते हुए **प्रबंध निदेशक व मुख्य कार्यपालक** अधिकारी एवं साथ में हैं, **कार्यपालक निदेशक** द्वै

सतर्कता निवारक दिवस पर जागरूकता कार्यक्रम में सहभागिता करते विशेष अतिथि **डॉ संदीप मित्तल (आई.पी.एस.)** व **शीर्ष कार्यपालक गण**

इण्डियन ओवरसीज़ बैंक की तिमाही गृह पत्रिका

वाणी

वर्ष : 39 अंक 147 दिसंबर 2025

संदेश

प्रबन्ध निदेशक व मुख्य कार्यपालक अधिकारी का संदेश 3

कार्यपालक निदेशक का संदेश 4

कार्यपालक निदेशक का संदेश 5

महा प्रबंधक का संदेश 6

संपादकीय

राष्ट्रगीत देश की शान 7

विशेष आलेख

वंदे मातरम् राष्ट्र जागरण का गीत 8

अपडेट करिये और सुरक्षित रहिये 17

गांव गंवार 20

आत्म-जागरूकता: अपनी भावनाओं को समझें, अपने व्यवहार को जानें 21

भारतीय संस्कृति और विरासत 26

तमिल और हिंदी: दो धड़कनें, एक भारत 35

वीबी–जी राम जी विधेयक - 2025: ग्रामीण विकास का संवैधानिक और आर्थिक खाका 37

पढ़ने की घटती आदत 42

नौकरियों में बढ़ती निष्क्रियता: डिजिटल कामकाज और स्वास्थ्य 43

विकास: एक आत्ममंथन 49

साइबर अपराध : चुनौतियाँ व सुरक्षा 52

हिंदी सिनेमा के 'ही-मैन' धर्मेंद्र 54

मोबाइल फोन: सुविधा की चमक और चेतना की कीमत 56

बैंकिंग व अन्य लेख

बैंकों के निवेश पोर्टफोलियो की तरलता प्रबंधन में भूमिका 10

"संख्याओं का साहित्य: ब्याज दरों की रामकथा" 12

क्वांटम कम्प्यूटरिंग और बैंकिंग क्षेत्र : अवसर व खतरे 18

उभरते प्रौद्योगिकी परिदृश्य में वित्तीय स्थिरता 22

बैंकिंग में जोखिम प्रबंधन 40

सोशल मीडिया आधारित कस्टमर सर्विस: नई दिशा नए अवसर 45

राष्ट्र निर्माण में सरकारी बैंकों का योगदान 46

ईएसजी की महत्ता और बैंकर्स की भूमिका 48

जब ग्राहक मुस्कुराता है: हिंदी में बैंकिंग की सफलता 50

कविता

हिंदी भाषा – एक सुदृढ़ नींव 11

भ्रष्टाचार 44

साहित्य का सफ़रनामा

मैं धीरे चलता हूँ, ताकि जिंदगी पीछे न छूट जाए 14

फोटो फ़ीचर

क्षेत्रीय कार्यालयों को नराकास से प्राप्त पुरस्कार 28

शाखाओं को नराकास से प्राप्त पुरस्कार 29

वार्षिक कैलेंडर - 2026 32-33

विविधा

शब्द-शब्दांतर 27

हंसी की फुलझड़ियाँ 34

ज्ञान के मोती 51

राजभाषा प्रश्नोत्तरी 58

प्रतिस्पन्दन 59

इण्डियन ओवरसीज़ बैंक
की तिमाही गृह पत्रिका

वाणी

वर्ष : 39 अंक 147 दिसंबर 2025

तुम वहन कर सको जन-मन में मेरे विचार !
वाणी मेरी चाहिए तुम्हें क्या अलंकार ?

मुख्य संरक्षक
अजय कुमार श्रीवास्तव
प्रबंध निदेशक व मुख्य कार्यपालक अधिकारी

संरक्षक
जयदीप दत्ता रॉय
कार्यपालक निदेशक

संरक्षक
धनराज टी
कार्यपालक निदेशक

परामर्शदाता
नितेश कुमार सिन्हा
महा प्रबन्धक

संपादक
कृष्ण कुमार गुप्ता
मुख्य प्रबंधक

संपादन सहयोग
नगेन्द्र कुमार सिंह
वरिष्ठ प्रबंधक
केंद्रीय कार्यालय

संपादन सहयोग
शुभम दीक्षित
प्रबंधक
केंद्रीय कार्यालय

मुद्रक
कृष्णराज प्रिंटर्स
36 देवराजन स्ट्रीट, रॉयपेट्टा
चेन्नै 600 014, तमिलनाडु
दूरभाष : 044-28481125

वाणी में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों के निजी हैं ।
बैंक का इनसे सहमत होना ज़रूरी नहीं है ।

पत्र व्यवहार का पता
इण्डियन ओवरसीज़ बैंक
राजभाषा विभाग, केंद्रीय कार्यालय,
763 अण्णा सालै, चेन्नै 600002
फैक्स : 044-28551618
दूरभाष : 044-28519572
ई-मेल : official@iobnet.co.in

केवल आंतरिक परिचालन हेतु

प्रबंध निदेशक व मुख्य कार्यपालक अधिकारी का संदेश

प्रिय आइओबियन्स,

सबसे पहले आप सभी को नववर्ष की असीम शुभकामनाएं ! आइये बीते वर्ष की मधुर यादों को स्मृतियों में संजोए हुए एवं उनसे प्रेरणा लेकर चलते हुए टीम भावना के साथ एक अद्भुत नववर्ष का शुभारंभ करते हैं । आइओबी परिवार के लिए वर्ष 2025 कई मायनों में काफी यादगार साबित हुआ है, चाहे वो बैंक के शानदार प्रदर्शन से संबंधित हो या पुरस्कारों से जुड़ा हुआ हो, हम सभी उसके साक्षी रहे हैं । हमें अपने उत्साह, क्षमता एवं सकरात्मक ऊर्जा को इस वर्ष भी बनाए रखना है । सभी के साझा योगदान से बैंक को निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर रखना है । संकल्प लें कि नियामकों की अपेक्षाओं के साथ सरल एवं सुगम्य बैंकिंग हर व्यक्ति तक पहुँचानी है । हम समाज के अंतिम पायदान पर बैठे व्यक्ति तक बैंकिंग सेवाएँ पहुँचाने के लिए प्रतिबद्ध हैं ।

आइये कुछ बातें दिसंबर तिमाही की कर लेते हैं । साथियो, दिसंबर तिमाही 2025 का वित्तीय परिणाम आ चुका है । एक बार फिर आपकी अथक मेहनत एवं प्रयासों से बैंक ने इस तिमाही में ₹1365 करोड़ का निवल लाभ अर्जित किया है, सभी को हार्दिक बधाई ! पिछले वित्तीय वर्ष की दिसंबर 2024 तिमाही में बैंक के मुनाफे का आंकड़ा ₹864 करोड़ का था, जिसमें वर्ष-दर-वर्ष 56.18% की वृद्धि दर्ज हुई है । हमें बैंक का लाभार्जन निरंतर बढ़ाते रहने के लिए अनवरत प्रयास करना है । यह भी उल्लेखनीय है कि हमें तिमाही-दर-तिमाही एनपीए की प्रतिशतता घटाने में लगातार सफलता मिल रही है । सितंबर तिमाही में निवल एनपीए का प्रतिशत 0.28% था जो कि दिसंबर तिमाही में घटकर 0.24% हो गया है । एनपीए की प्रतिशतता में गिरावट बैंक के लिए अच्छा संकेत है । स्लीपेज रोकने के क्षेत्र में भी हमारा प्रयास सराहनीय रहा है । ध्यान रहे कि हमें आगामी तिमाही के लिए अभी से डटकर सभी रिकवरी टूल्स का उपयोग करना है और एनपीए की प्रतिशतता में निरंतर गिरावट को बरकरार रखना है ।

हम अपनी डिजिटल आउटरीच लगातार बढ़ा रहे हैं । दिसंबर तिमाही में एटीएम / केश रिसाइकलर की स्थापना की संख्या बढ़ाई गयी, ग्राहकों को व्हाट्सऐप बैंकिंग की सुविधा उपलब्ध करवाई गई, जिससे कि वे खाता में शेष राशि, खाता विवरण, एटीएम / शाखा की लोकेशन, चेक बुक के लिए निवेदन, री-केवाइसी, फार्म-16 सबमिशन आदि की सुविधा आसानी से प्राप्त कर सकें । आइओबी कनेक्ट यानी नवीकृत मोबाइल बैंकिंग नए फीचर्स के साथ उपयोगकर्ताओं के लिए पेश कर दिया गया है । जिसके परिणामस्वरूप हमारे डिजिटल उत्पाद के उपयोगकर्ताओं की संख्या में तिमाही-दर-तिमाही वृद्धि देखी जा रही है । डिजिटल प्लेटफार्म के जरिए कई सारे बेहतरीन उत्पाद एक ही स्थान पर ग्राहकों को उपलब्ध करवाए जा रहे हैं । जिससे बैंक की शुल्क आधारित आय में बढ़ोत्तरी होती है । ग्राहकों को डिजिटल प्लेटफॉर्म से जोड़ने का भरसक प्रयास करें । उन्हें हमारे नए उत्पाद आइओबी ईको सेविंग अकाउंट से परिचित करवाएं कि किस तरह हम बिना किसी पेपर के डिजिटली खाता खोल रहे हैं ।

साथियो, हम वित्तीय वर्ष की अंतिम तिमाही में प्रवेश कर चुके हैं । शाखाओं एवं कार्यालयों को दोगुने प्रयास एवं उत्साह के साथ आबंटित लक्ष्यों को पूरा करने के लिए टीम के रूप में प्रयासरत रहना होगा । निगेटिव शाखाओं की संख्या पर अंकुश लगाने के लिए हर संभव प्रयास करें । आप सभी को मार्च तिमाही की सफलता हेतु शुभकामनाएं देते हुए मुझे राहत इंदौरी साहब की दो पंक्तियां याद आ रही हैं :

"तूफानों से आंख मिलाओ, सैलाबों पर वार करो ।
मल्लाहों का चक्कर छोड़ो, तैर के दरिया पार करो ।"

शुभकामनाओं सहित,

अजय कुमार श्रीवास्तव
प्रबंध निदेशक व मुख्य कार्यपालक अधिकारी

एमडी व सीईओ महोदय को सुनने के लिए,
क्यूआर कोड स्कैन करें

कार्यपालक निदेशक का संदेश

प्रिय सहकर्मियो,

नूतन वर्ष 2026 की मंगलमयी किरणों और दक्षिण भारत के पावन पर्व 'पोंगल' की मधुर सुगंध के बीच, हमारी बैंक की दिसंबर तिमाही की ई-पत्रिका के इस संस्करण के माध्यम से आपसे जुड़ते हुए मुझे अत्यंत हर्ष हो रहा है। सबसे पहले, मैं आप सभी को और आपके परिजनों को नव वर्ष, मकर संक्रांति, पोंगल और लोहड़ी की हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं। जिस तरह पोंगल का पर्व संपन्नता और नई फसल का उत्सव है, उसी तरह वित्तीय वर्ष की यह अंतिम तिमाही हमारे बैंक के लिए भी उपलब्धियों की नई फसल काटने का समय रही है।

वैश्विक अर्थव्यवस्था में उतार-चढ़ाव और बदलती मौद्रिक नीतियों के बीच, हमारे बैंक ने जिस स्थिरता और जुझारूपन का परिचय दिया है, वह सराहनीय है। विगत तिमाहियों के नतीजे हमारी रणनीतिक स्पष्टता और 'ग्राहक-प्रथम' के दृष्टिकोण का प्रमाण हैं। हमारे शास्त्रों में भी कहा गया है: "ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते।" अर्थात्, सृष्टि का सृजक पूर्ण है और यह सृष्टि भी पूर्ण है। पूर्णता से ही पूर्ण की उत्पत्ति होती है। हमारा बैंक भी इसी 'पूर्णता' और 'समग्र विकास' के लक्ष्य को लेकर आगे बढ़ रहा है, जहाँ वित्तीय मजबूती और मानवीय संवेदनाएं साथ-साथ चलती हैं। चालू खाता और बचत खाता के प्रतिशत में सतत वृद्धि दर यह दर्शाती है कि आम जनता का हमारे बैंक पर अटूट विश्वास है। हमें यही विश्वास बनाए रखना है।

एक ओर जहां बैंकिंग की मूल परिभाषा कहती है "बैंकिंग का अर्थ दूसरों के पैसे संरक्षण करते हुए उधार देकर ब्याज अर्जित करना है, ताकि बैंक और उसके ग्राहकों, दोनों को लाभ हो सके" वहीं दूसरी ओर बैंकिंग का स्वर्ण नियम बताता है कि "सही समय पर और सही व्यक्ति को सही ऋण देना" ही सफलता की कुंजी है। हमारे कासा में बढ़ोत्तरी और आस्ति गुणवत्ता में सुधार इस बात का परिचायक है कि पारिभाषिक रूप से नियमानुसार आगे बढ़ते हुए हम नए ग्राहकों को जोड़ने और ऋण मूल्यांकन प्रक्रिया और वसूली तंत्र में अत्यंत प्रभावी ढंग से लागू करने में सफल रहे हैं। हमारा विजन 'शून्य एनपीए' की ओर अग्रसर होना है। शून्य एनपीए की यह संकल्पना केवल कुछ एक शाखाओं अथवा क्षेत्रीय कार्यालयों तक सीमित नहीं रहनी चाहिए। समग्र रूप से यह हमारे बैंक का मुख्य ध्येय होना चाहिए। यद्यपि बैंकिंग व्यवसाय में ऋण जोखिम अंतर्निहित होता है, लेकिन सक्रिय निगरानी और शुरुआती चेतावनी संकेतों के माध्यम से हम दबावग्रस्त खातों को समय रहते प्रबंधित कर सकते हैं। इसके लिए बैंक के प्रत्येक कर्मचारी को, चाहे वह फ्रंट डेस्क पर हो या बैक ऑफिस में, अपना शत प्रतिशत योगदान देना होगा।

आने वाली तिमाही और भी बड़ी संभावनाओं के साथ हमारा इंतजार कर रही है। हमें तकनीकी नवाचार और मानवीय स्पर्श के बीच संतुलन बनाते हुए आगे बढ़ना है। मार्च तिमाही का आगाज उत्सवों के साथ हो रहा है। दक्षिण में पोंगल का उल्लास है तो उत्तर में लोहड़ी की गरमाहट और पूर्व में बिहू की मिठास, यह विविधता ही हमारे बैंक की शक्ति है। अंत में, मैं पुनः प्रार्थना करता हूं कि यह नव वर्ष और पोंगल आपके जीवन में सुख, शांति और समृद्धि लेकर आए। आइए, हम सब मिलकर अपने बैंक को गौरव के नए शिखर पर ले जाएं और राजभाषा हिंदी के गौरव को अक्षुण्ण रखें।

शुभकामनाओं सहित,

जयदीप दत्ता रॉय
कार्यपालक निदेशक

कार्यपालक निदेशक का संदेश

प्रिय साथियो,

किसी भी संगठन की वास्तविक शक्ति उसके निरंतर और संतुलित प्रदर्शन में निहित होती है। मुझे यह कहते हुए अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि दिसंबर तिमाही के दौरान हमारे बैंक ने ₹1365 करोड़ का निवल लाभ अर्जित किया है। यह उल्लेखनीय उपलब्धि हमारे सुदृढ़ व्यावसायिक दृष्टिकोण, प्रभावी जोखिम प्रबंधन, परिचालन दक्षता तथा प्रत्येक आइओबियन के अथक परिश्रम का प्रत्यक्ष प्रमाण है।

बैंक के वित्तीय संकेतकों में निरंतर सुधार यह दर्शाता है कि हमने लाभप्रदता, एनपीए गुणवत्ता और ग्राहक सेवा—तीनों के बीच संतुलन स्थापित किया है। यह सफलता केवल आंकड़ों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह हमारे ग्राहकों, निवेशकों और सभी हितधारकों के विश्वास को और अधिक सुदृढ़ करने वाली है। इस उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए मैं बैंक के समस्त कर्मचारियों को हार्दिक बधाई देता हूँ।

साथियों, वित्तीय सशक्तता के साथ-साथ बैंक ने राजभाषा हिंदी के प्रभावी कार्यान्वयन में भी अपनी विशिष्ट पहचान बनाए रखी है। हिंदी को कार्यभाषा के रूप में प्रोत्साहित करने के हमारे निरंतर प्रयास यह सिद्ध करते हैं कि व्यावसायिक उत्कृष्टता और भाषाई प्रतिबद्धता साथ-साथ आगे बढ़ सकती हैं। इस दिशा में योगदान देने वाले सभी सहकर्मियों, विशेष रूप से राजभाषा विभाग के प्रयास प्रशंसनीय हैं।

वर्ष के इस चरण में हमें न केवल अपनी उपलब्धियों पर गर्व करना है, बल्कि आगामी चुनौतियों के लिए स्वयं को और अधिक सशक्त भी बनाना है। आइए, हम पारदर्शिता, उत्तरदायित्व और गुणवत्ता को अपने कार्य की आधारशिला बनाते हुए बैंक की विकास यात्रा को नई गति प्रदान करें।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि आप सभी के सहयोग, प्रतिबद्धता और व्यावसायिक दक्षता के बल पर हमारा बैंक आने वाले समय में और भी उत्कृष्ट वित्तीय परिणाम प्राप्त करेगा तथा राष्ट्र निर्माण में अपनी भूमिका को और अधिक सुदृढ़ करेगा। 'वाणी' का यह अंक हमारी उपलब्धियों, विचारों और संगठनात्मक ऊर्जा का सशक्त दर्पण है।

इस अंक के प्रकाशन में संलग्न संपादकीय टीम एवं सभी सहयोगियों को मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ।

शुभेच्छाओं सहित,

सादर,

धनराज

धनराज टी
कार्यपालक निदेशक

महा प्रबंधक का संदेश

प्रिय साथियो,

नव वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं!

वाणी के इस नए अंक के माध्यम से आप सभी को संबोधित करते हुए मुझे अति प्रसन्नता हो रही है। यह अंक जब आपके हाथों में होगा तब हम पुराने वर्ष को अलविदा कह नए वर्ष 2026 में प्रवेश कर चुके होंगे। नव वर्ष जीवन में नवीनता का संदेश देता है। ये हम सभी को ऊर्जा से भर देता है। यह हमारे ऊपर निर्भर करता है कि हम अपनी शक्तियों को किस ओर केंद्रित करते हैं। आइए हम सभी संकल्प लें कि नव वर्ष में अपनी सकारात्मकता से स्वयं का तो कल्याण करेंगे ही दूसरों की जिंदगियों में भी आनंद और खुशियों का प्रादुर्भाव करेंगे।

भाषा का इस्तेमाल विशेषत: दो रुपों में होता है। एक कार्यलयीन कार्य हेतु एवं दूसरा बोलचाल की भाषा के रुप में। कार्यालय के आंतरिक कामकाज में हिंदी के प्रयोग हेतु समस्त कार्यालयों द्वारा राजभाषा नियम, अधिनियम एवं अन्य दिशानिर्देशों का पूर्ण अनुपालन करना चाहिए, परंतु साथ ही यह अत्यंत आवश्यक है कि हम ग्राहकों से संबंध स्थापित करने हेतु स्थानीय बोलचाल की भाषा के प्रयोग पर भी गंभीरता से विचार करें। राजभाषा हिंदी का प्रयोग केवल हमारा संवैधानिक दायित्व ही नहीं, बल्कि यह उत्तम ग्राहक सेवा प्रदान करने में भी सहायक है। अत: हमें अपने दिन प्रतिदिन के कार्यों में अधिक से अधिक सरल हिंदी का प्रयोग करना चाहिए।

हम वित्तीय वर्ष 2025–26 की अंतिम तिमाही में प्रवेश कर चुके हैं। वर्तमान में बैंक की मुख्य प्राथमिकता एनपीए की प्रभावी रिकवरी है, परंतु इसके साथ-साथ नया और गुणवत्तापूर्ण व्यवसाय अर्जित करना भी हम सभी की सामूहिक जिम्मेदारी है, ताकि हमारा बैंक प्रत्येक वित्तीय एवं परिचालन मापदंड पर उत्कृष्ट प्रदर्शन कर सके।

यह तथ्य हम सभी भली-भांति जानते हैं कि छोटे-छोटे सतत प्रयास मिलकर ही बड़े परिणामों का आधार बनते हैं। यदि हम समर्पण, अनुशासन और टीम भावना के साथ कार्य करें, तो न केवल निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति संभव है, बल्कि हम अपने बैंक को सफलता के शिखर तक भी पहुँचा सकते हैं।

इस संदर्भ में, महान दार्शनिक लाओत्से ने अत्यंत सार्थक कहा है —

"हजार मील की यात्रा भी एक छोटे से पहले कदम से ही प्रारंभ होती है।"

निश्चय ही, हमारे निरंतर और छोटे प्रयास ही हमारे बैंक के लिए बड़े और स्थायी परिवर्तन का मार्ग प्रशस्त करेंगे।

नव वर्ष, मकर संक्रांति, लोहड़ी, बिहू तथा पोंगल की शुभकामनाओं सहित

सादर,

नितेश कुमार सिन्हा
महा प्रबन्धक

राष्ट्रगीत देश की शान

प्रिय पाठको,

वाणी पत्रिका का 147वाँ अंक आपके समक्ष है । हमारा यह निरंतर प्रयास रहा है कि पत्रिका को रूचिकर, ज्ञानवर्धक व पठनीय रखा जाए । हर बार की तरह इस बार भी हमने कुछ अलग करने का प्रयास किया है । आशा है कि आपको यह अंक पसंद आएगा और आप अपनी प्रतिक्रियाओं से हमें अवगत करवाएंगे ।

हमारा देश राष्ट्रगीत 'वंदे मातरम' की 150वीं वर्षगांठ मना रहा है । यह गीत राष्ट्रप्रेम, आत्मसम्मान और एकता की भावना से ओत-प्रोत हमारे लिए केवल शब्द नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति की आत्मा का संगीत हैं । राष्ट्रीय चेतना का प्रकाश स्तंभ यह अमर कृति आज भी उतनी ही प्रेरक है, जितनी स्वतंत्रता संग्राम के दिनों में थी । राष्ट्रगीत से भारतवंशियों की अस्मिता जुड़ी हुई है । बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय द्वारा रचित राष्ट्रगीत हर भारतीय की शान है । आप सभी के लिए “सुजलाम सुफलाम मलयज शीतलाम......” लता मंगेश्कर जी का कर्णप्रिय संगीत भी क्यूआर कोड के माध्यम से उपलब्ध करवाया गया है ।

हाल ही में, भारतीय सिनेमा के ही-मैन 'धमेंद्र' जी ने मुंबई में अंतिम सांसें लीं । वे 89 वर्ष की आयु में इस जगत को छोड़कर चले गए । उनका जाना न केवल फिल्म जगत के लिए बल्कि उन असंख्य भारतीयों के लिए भी अपूरणीय क्षति है जो उनकी सरलता, उम्दा संवाद शैली और बेमिसाल अभिनय के दीवाने थे । उन्होंने अपने छह दशकों से अधिक लंबे करियर में शोले, चुपके चुपके, धर्मवीर और सत्यकाम जैसी फिल्मों में असंख्य यादगार किरदारों के माध्यम से एक अमिट छाप छोड़ी । उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उन पर एक रचना प्रकाशित की गयी है । दिसंबर महीना साहित्य जगत के लिए भी गमगीन करने वाला रहा । हिंदी साहित्य के प्रसिद्ध कवि, उपन्यासकार एवं कथाकार श्री विनोद कुमार शुक्ल भी हमारे बीच नहीं रहे । उनकी कालजयी कृतियां हमेशा नयी पीढ़ियों के मार्गप्रस्त करेंगी । इस बार के साहित्य के सफरनामा स्तंभ में हमने उनकी साहित्यिक यात्रा को समेटने का प्रयास किया है ।

वाणी के इस अंक में नियमित सभी स्तंभों को स्थान दिया गया है । साथ ही, भाषागत, बैंकिंग एवं साहित्यिक आलेखों को भी शामिल किया गया है । एक ओर 'वंदे मातरम राष्ट्र जागरण का गीत' विषयक आलेख में इस गीत की आवश्यकता और स्वतंत्रता संग्राम में उसके योगदान को रेखांकित किया गया है, 'तमिल और हिंदी: दो धड़कनें, एक भारत' विषयक आलेख में दोनों भाषाओं के ऐतिहासिक यात्रा को समेटने का प्रयास किया गया है, 'वीबी- जी राम जी विधेयक : ग्रामीण विकास का संवैधानिक और आर्थिक खाका” विषयक आलेख विधेयक की मूलभूत विशेषताओं से परिचित करवाएगा, वहीं दूसरी ओर बैंकिंग आलेख में 'बैंकों के निवेश पोर्टफोलियो में तरलता प्रबंधन की भूमिका', 'संख्याओं का साहित्य', 'अपडेट करिये और सुरक्षित रहिये' और 'उभरती बैंकिंग परिदृश्य में वित्तीय स्थिरता' जैसे गंभीर विषयों पर गहन चर्चा की गई है । साथ ही, आपके लिए एमडी व सीईओ महोदय के संदेश का ऑडियो वर्ज़न भी उपलब्ध करवाया गया है, जिसे पृष्ठ सं 3 पर दिये गए क्यूआर कोड स्कैन कर सुन सकते हैं । इस अंक के प्रकाशन में सहयोग देने वाले सभी रचनाकारों को शुभकामनाएं !

आपका,

कृष्ण कुमार गुप्ता
मुख्य प्रबंधक सह संपादक

राष्ट्रगीत सुनने के लिए,
क्यूआर कोड स्कैन करें

वंदे मातरम् राष्ट्र जागरण का गीत

सुरेश कुमार रूंगटा, अंशकालिक निदेशक

'इंकलाब जिंदाबाद' भारत माता की जय' एवं 'वंदे मातरम्' ये कुछ ऐसे नारे हैं जो देश की आजादी की लड़ाई में स्वतंत्रता सेनानियों में साहस एवं जोश भरने में अहम भूमिका निभाते थे। इनमें 'वंदे मातरम्' सबसे ऊपर था। यह वह गीत है, जिसे बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय ने अपने उपन्यास 'आनंद मठ' में प्रकाशित किया था। इस गीत की रचना भारत में ब्रिटिश हुकूमत के दौरान हुई थी। बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय सरकारी सेवा में कार्यरत थे। उसी दौरान ब्रिटिश शासन ने एक ऐसा आदेश जारी किया, जिसके तहत भारत में 'गॉड सेव द क्वीन' नामक विदेशी गीत गाना अनिवार्य कर दिया गया। ब्रिटिश सरकार का यह अड़ियल फैसला बंकिम बाबू को बहुत बुरा लगा। उन्हें यह असहनीय लगा कि भारत की धरती पर एक विदेशी शासन की प्रशंसा में गीत गाया जाये। विरोध और राष्ट्रीय स्वाभिमान की इस भावना ने बंकिम चंद्र को 'वंदे मातरत' गीत की रचना के लिए प्रेरित किया। उन्होंने यह निश्चय किया कि एक ऐसा गीत लिखेंगे जिसमें सिर्फ भारत भूमि का गौरवगान होगा। इस संकल्प को पूरा करते हुए, उन्होंने साल 1875 में 'वंदे मातरम्' कविता की रचना की। देश प्रेम से ओत-प्रोत यह कविता पहली बार साहित्यिक पत्रिका बंगदर्शन में 7 नवम्बर 1875 को प्रकाशित हुई। बाद में 1882 में उनकी यह कविता उनके विख्यात उपन्यास 'आनंद मठ' (जो सन्यासी विद्रोह की पृष्ठभूमि पर आधारित है) में शामिल की गई। यह अमर रचना उस समय स्वतंत्रता संग्राम में शामिल सेनानियों के लिए असीम शक्ति और प्रोत्साहन का स्रोत बन गई।'वंदे मातरम्' के शुरूआती दो छंद संस्कृत भाषा में हैं, जबकि बाकी के चार छंदों की रचना बांग्ला में की गई थी। इस गीत को सुर और ताल देने का श्रेय महान कवि रविन्द्रनाथ टैगोर को जाता है, जिन्होंने सबसे पहले 1896 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन में इसे गाया था। बाद में अरबिंदो घोष ने इसका अंग्रेजी अनुवाद किया और आरिफ मोहम्मद खान ने इसका उर्दू रूपांतर किया। यह गीत देश की सभ्यतागत, राजनीतिक और सांस्कृतिक चेतना का अभिन्न अंग बन गया था। 'वंदे मातरम्' जिसका आशय माँ, मैं तुम्हें प्रणाम करता हूँ' को समझाने के उद्देश्य से इस साल 7 नवम्बर 2025 से इसकी 150वी वर्षगांठ भारत में मनायी जा रही है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने इस मौके पर स्मारक टिकट और सिक्का जारी करने के साथ-साथ एक विशेष वेबसाइट भी लॉन्च की है। जिससे यह पता चलता है कि सरकार इस अवसर को कितना महत्व दे रही है। उन्होंने 'वंदे मातरम्' को एक मंत्र, एक संकल्प, एक साधना एवं एक अराधना बताया।

'वंदे मातरम् 'गीत के शब्द हमारे सामने छंद, रंग और गंध की एक बड़ी सौम्य दुनिया खोलते हैं, 'सुजलाम् सुफलाम् मलयजशीतलाम् कोरी चंदन की बयार नहीं है, न 'शुभ्र ज्योत्स्ना पुलकित यामिनीम्' महज चाँदनी रात के रोमांच का दृश्य बयान करती है। गीत में हर उपमा एक निराला छंद है, वह हमें शब्द और उसके अर्थ की दुनिया के पार ले जाता है या कहें, ले जा सकता है बशर्ते हम जाना चाहें। वास्तव में 'वंदे मातरम्' के दो शब्द ही अपने आप में संपूर्ण काव्य है, जैसे 'सत्यमेव जयते' । अबुल कलाम आजाद और जवाहर लाल नेहरू के सुझाव पर आजादी के बाद नये भारत के लिए बनाये गये संविधान में 'वंदे मातरम्' को राष्ट्रगान और राष्ट्रगीत दोनों का दर्जा नहीं दिया गया। लेकिन संविधान सभा के अध्यक्ष और भारत के पहले राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद ने 24 जनवरी 1950 को 'वंदे मातरम्' को राष्ट्रगीत का दर्जा देने की घोषणा कर दी। परन्तु नेहरू जी के कहने पर गीत के शुरूआती दो पदों को ही 'राष्ट्रगीत के रूप में शामिल किया गया। इस प्रकार आजादी की लड़ाई को नई दिशा देने वाला गील खंडित हो गया।

दुनिया में भारत ही ऐसा पहला देश होगा, जिसमें राष्ट्रगीत और राष्ट्रीय गान अलग-अलग हैं। भारत जैसे विशाल देश को सैकड़ों वर्षों की गुलामी के बाद आजादी के दर्शन हुए। 'वंदे मातरम्' ही वह गीत था जिससे सदियों से सुप्त देश जाग उठा था और अर्द्धशताब्दी तक भारत के स्वतंत्रता संग्राम का प्रेरक बना रहा। इस गीत के कारण बंग-भंग के विरोध की लहर बंगाल की खाड़ी से उठकर इंग्लिश चैनल को पार करती हुई ब्रिटिश संसद तक गूंज उठी थी। जो गीत-गंगा की तरह पवित्र, स्फटिक की तरह पारदर्शी और देवी की तरह प्रणम्य है। दुर्भाग्यवश यह गीत

तुष्टीकरण की भेंट चढ़ गया, जो राष्ट्रीयता का परिहास ही तो है!

'वंदे मातरम्' केवल भारत का राष्ट्रीय गीत ही नहीं, बल्कि यह बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय द्वारा सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की प्रथम उद्घोषणा थी। उन्होंने हमें यह याद दिलाया कि भारत-भूमि केवल जमीन का एक टुकड़ा नहीं, बल्कि यह हमारी माता है। अर्थववेद में कहा गया है- 'माता भूमिः पुत्रो अहं पृथिव्या अर्थात् भूमि मेरी माता है और मैं उसका पुत्र हूँ। वास्तव में यह भूमि केवल एक भूभाग नहीं है, बल्कि तीर्थ है, यह स्मृति, त्याग, शौर्य और मातृत्व से परिपूर्ण पवित्र भूमि है। वाल्मीकि रामायण में भी 'जननी जन्मभूमि' को स्वर्ग के समान कहा गया है।

साउथ अफ्रीका से जब महात्मा गांधी भारत लौटे तो उन्होंने यहाँ आकर 'वंदे मातरम्' गीत की प्रशंसा 'हरिजन' के जुलाई 1938 के अंक में की थी। 1922 में जब गोखले अफ्रीका गये तो हजारों भारतवासियों ने उनका वहां स्वागत 'वंदे मातरम्' गीत से किया था। 1937 में तुर्की के अदान नगर में भारत के मस्जिद पर 'वंदे मातरम्' लिखा गया था। मस्जिद पर भारतीय तिरंगा लगा था और हर नमाज के साथ 'वंदे मातरम्' का घोष किया जाता था। 1920 में लाला लाजपत राय ने दिल्ली से 'वंदे मातरम्' का प्रकाशन शुरू किया था। सन् 1930 में चंद्रशेखर आजाद ने अपने पिताजी को जो पत्र लिखा था उस पत्र की शुरूआत उन्होंने 'वंदे मातरम्' से ही की थी। 1920 का असहयोग आंदोलन एवं नमक सत्याग्रह में 'वंदे मातरम्' का ही उद्घोष होता था। रामचंद्र बिस्मिल को जब काकोरी कांड में फाँसी पर लटका गया था तो उन्होंने अंतिम समय 'वंदे मातरम्' ही बोला था। 1905 में बंग-भंग आंदोलन के दौरान बंगाल में विद्रोह भड़क उठा था। अंग्रेजों ने 'वंदे मातरम्' के सार्वजनिक पाठ पर प्रतिबंध लगा दिया। फिर भी 'वंदे मातरम्' की गूँज मंद नहीं हुई और यह स्वदेशी आंदोलन, क्रांतिकारियों और स्वतंत्रता सेनानियों का प्रेरणास्रोत बना रहा। इसे गाते हुए लोग ब्रिटिश शासन के खिलाफ सड़कों पर सीना ताने उतर पड़ते थे। इस प्रकार यह केवल गीत नहीं रहा, बल्कि भारत के सामूहिक चेतना की आवाज बन गया था।

एक घटना का ज़िक्र किए बिना 'वंदे मातरम्' का यह आलेख अधूरा रह जाएगा। बात 26 अगस्त 1907 को 'वंदे मातरम्' पर लिखे एक लेख की है, जिसे लिखने के कारण बिपिनचंद पॉल को अदालत से राजा हो गई। सजा होने के बाद हजारों लोगों की भीड़ ने उनके समर्थन में सड़क पर 'वंदे मातरम्' का गायन किया। इसे देखकर पुलिस भड़क गई और अंधाधुंध लाठीचार्ज करने लगी। इस भीड़ से निकल कर 15 साल के एक नवयुवक सुशील चंद्र सेन ने एक पुलिस वाले के मुंह पर जोर का मुक्का जड़ दिया। इस कारण उसे पकड़ लिया गया और वीर बालक को 15 वेतों की सजा हुई। सुशील की इस सजा की प्रशंसा में एक लेखा छपा जिससे इस बात की जानकारी सुरेन्द्रनाथ बनर्जी तक पहुंची और उन्होंने उसे सोने का तमगा देकर सम्मानित किया। दूसरी ओर युगांतर पार्टी के सदस्यों ने सुशील को सजा देने वाले अत्याचारी किंग्सफोर्ड को यमलोक भेजने की ठान ली। यह कार्य प्रफुल्ल चंद चाकी और खुदीराम बोस को सौंपा गया। लेकिन प्रयास में असफल हो जाने पर चाकी ने आत्महत्या कर ली और खुदीराम को पकड़ कर फाँसी पर लटका दिया गया। इस प्रकार भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का यह अमर गीत आज भी धमनियों में सिहरन पैदा करता है। यह गीत हमें हमारी प्यारी सांस्कृतिक विरासत, एकता और देश-प्रेम व इसके प्रति कर्तव्य की याद दिलाता है। यह गीत हमें अपनी जड़ों से जुड़े रहने की प्रेरणा देता है।

'वंदे मातरम्' केवल स्वतंत्रता आंदोलन का एक गीत भर नहीं है, बल्कि यह भविष्य के भारत के नवनिर्माण का आह्वान भी है। राष्ट्र की आत्मा से जन्में शब्द कभी समाप्त नहीं होते, वे चिरंजीवी होते हैं, पीढ़ियों तक गूंजते रहते हैं। यह जयघोष युगों और पीढ़ियों में अनंत काल तंक प्रतिध्वनित होता रहेगा। जरूरत है तो केवल इस बात की, कि हम अपने समृद्ध इतिहास, अपनी सभ्यता, अपनी संस्कृति, अपनी मान्यताओं और अपनी परंपराओं को भारतीयता की दृष्टि से देखें। पर अफसोस, जिस गीत की आठ पंक्तियों को नेहरू ने अनुमोदित किया था, ये आठ पंक्तियां ही न केवल विवादित हो गईं, बल्कि इसके दो शब्द 'वंदे मातरम्' भी विवाद का विषय बन गए। जो लोग आज 'वंदे मातरम्' से ऐतराज रखते हैं, उन्हें यह समझना चाहिए कि भारत माता को प्रणाम करना, किसी धर्म की वंदना नहीं, बल्कि उस भूमि के प्रति कृतज्ञता है जिस भूमि पर हम पैदा हुए हैं। जो इस माँ को स्वीकार नहीं करता, वह दरअसल अपने ही अस्तित्व से इंकार कर रहा है।

।। वंदे मातरम् ।।

बैंकों के निवेश पोर्टफोलियो की तरलता प्रबंधन में भूमिका

प्रवीण कुमार, मुख्य प्रबंधक, जोखिम प्रबंधन विभाग, केंद्रीय कार्यालय

परिचय

तरलता प्रबंधन (लिक्विडिटी मैनेजमेंट) बैंकिंग स्थिरता की रीढ़ है। यह सुनिश्चित करता है कि बैंक बिना किसी तनाव के अपनी देनदारियाँ—जैसे जमाकर्ताओं की निकासी और ऋण वितरण—समय पर पूरी कर सकें।

भारत में, जहाँ वित्तीय मध्यस्थता में बैंकों की प्रमुख भूमिका है, निवेश पोर्टफोलियो एक महत्वपूर्ण 'तरलता बफर' के रूप में कार्य करता है। सरकार की प्रतिभूतियों, कॉरपोरेट बॉन्ड और मुद्रा बाज़ार (मनी मार्केट) टूल्स में निवेशों को सावधानी से संरचित करके बैंक फंडिंग तरलता जोखिम और बाज़ार तरलता जोखिम—दोनों का प्रबंधन करते हैं।

बैंक का निवेश पोर्टफोलियो सुरक्षा, लाभप्रदता और नियामकीय अनुपालन के बीच संतुलन बनाकर तरलता प्रबंधन में निर्णायक भूमिका निभाता है।

भारत में बैंक अल्पकालिक दायित्वों को पूरा करने, आरबीआई मानदंडों का पालन करने तथा प्रणालीगत स्थिरता बनाए रखने के लिए सरकारी प्रतिभूतियों और अन्य तरल परिसंपत्तियों पर काफी हद तक निर्भर रहते हैं।

निवेशों के तरलता प्रबंधन में महत्व को समझने से पहले, निवेश पोर्टफोलियो की अवधारणा को संक्षेप में देखते हैं।

निवेश पोर्टफोलियो

एक बैंक के निवेश पोर्टफोलियो में सामान्यतः निम्न घटक शामिल होते हैं:

- सरकारी प्रतिभूतियाँ: अत्यधिक तरल और कम जोखिम (लगभग 'जोखिम-मुक्त'), भारतीय बैंकों के कुल होल्डिंग्स का बड़ा हिस्सा निर्मित करते हैं।
- ट्रेज़री बिल एवं मुद्रा बाज़ार उपकरण: अल्पकालिक साधन जो त्वरित तरलता प्रदान करते हैं।
- कॉरपोरेट बॉन्ड एवं डिबेंचर: अपेक्षाकृत उच्च प्रतिफल, परंतु तरलता सामान्यतः कम होती है।
- इक्विटी एवं म्यूचुअल फंड: अस्थिरता और नियामकीय प्रतिबंधों के कारण सीमित जोखिम-एक्सपोज़र होता है।

पोर्टफोलियो घटक	तरलता स्तर	तरलता प्रबंधन में भूमिका
सरकारी प्रतिभूतियाँ	उच्च	तात्कालीन तरलता, नियामक अनुरूपता
कारपोरेट बॉण्ड	मध्यम	प्रतिफल वृद्धि, माध्यम तरलता
इक्विटी	निम्न	दीर्घकालिक वृद्धि, सीमित
मानी मार्केट टूल	उच्च	अल्पकालिक तरलता बफर

(चित्र-संदर्भ: पोर्टफोलियो संरचना/आस्ति-वर्ग वितरण दर्शाने वाला चार्ट)

पोर्टफोलियो डिज़ाइन के मार्गदर्शक सिद्धांत

पोर्टफोलियो का उद्देश्य 'तरलता, सुरक्षा और लाभप्रदता'—इन तीन स्तंभों के बीच संतुलन बनाए रखना होता है, साथ ही नियामकीय अनुपालन और जोखिम-विविधीकरण पर स्पष्ट फोकस रहता है।

प्रतिभूतियों का चयन निम्न सिद्धांतों के आधार पर होना चाहिए:

☑ **तरलता प्रबंधन:**

दैनिक संचालन और नियामकीय आवश्यकताओं के लिए अत्यधिक तरल आस्तियों (जैसे सरकारी प्रतिभूतियाँ, ट्रेज़री बिल, अल्पकालिक बॉन्ड) में पर्याप्त होल्डिंग्स रखें ताकि अचानक निकासी/फंडिंग मांग का सामना बिना तनाव के किया जा सके।

☑ **सुरक्षा एवं स्थिरता:**

संप्रभु प्रतिभूतियों—जैसे भारत सरकार के बॉन्ड, राज्य विकास ऋण-को प्राथमिकता दें क्योंकि इनमें क्रेडिट जोखिम न्यूनतम होता है और जमाकर्ताओं के धन की सुरक्षा मजबूत रहती है।

☑ **विविधीकरण:**

एक ही क्षेत्र/उधारकर्ता पर अत्यधिक निर्भरता से बचने के लिए विभिन्न क्षेत्रों/उद्योगों में निवेश फैलाएँ, ताकि एकल-क्षेत्रीय दबावों का प्रभाव कम हो।

☑ **प्रतिफल अनुकूलन:**

कम जोखिम वाली सरकारी प्रतिभूतियों और उच्च-प्रतिफल (परंतु अपेक्षाकृत कम तरल) कॉरपोरेट ऋण/चयनित निवेशों के बीच संतुलन बनाकर समग्र प्रतिफल बेहतर करें।

☑ **नियामकीय अनुपालन:**

आरबीआई के एसएलआर (सांविधिक तरलता अनुपात) और सीआरआर (नकद आरक्षित अनुपात) मानदंडों, बेसल III पूँजी पर्याप्तता आवश्यकताओं तथा आंतरिक जोखिम-नीतियों के अनुरूप पोर्टफोलियो बनाए रखें।

निवेश पोर्टफोलियो और तरलता: अंतर्संबंध

निवेश पोर्टफोलियो और तरलता परस्पर गहराई से जुड़े हैं। बैंक का मूल लक्ष्य यह सुनिश्चित करना होता है कि वह जमाकर्ताओं की निकासी तथा अन्य अल्पकालिक दायित्व समय पर पूरा कर सके।

बेसल और भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा प्रमुख तरलता प्रावधान

- निवेश पोर्टफोलियो और तरलता के महत्त्वपूर्ण संबंध को देखते हुए बेसल और आरबीआई ने कुछ प्रमुख मानदंड लागू किए हैं:
- **तरलता कवरेज अनुपात:** बेसल III के तहत बैंकों को 30 दिनों के शुद्ध नकदी आउटफ़्लो को कवर करने हेतु उच्च-गुणवत्ता तरल आस्तियाँ (एचक्यूएलए) रखना अनिवार्य है। भारत में एचक्यूएलए का प्रमुख आधार सरकारी प्रतिभूतियाँ हैं।
- **वैधानिक तरलता अनुपात :** आरबीआई बैंकों को उनकी एनडीटीएल (नेट डिमांड एंड टाइम लायबिलिटी) का एक निश्चित प्रतिशत तरल आस्तियों—मुख्यतः जी- एसईसीएस में बनाए रखने हेतु बाध्य करता है ताकि प्रणालीगत तरलता एवं वित्तीय स्थिरता सुनिश्चित हो सके।

आकस्मिक फंडिंग: तनाव की स्थिति में निवेश पोर्टफोलियो एक 'कुशन' का काम करता है। बैंक प्रतिभूतियाँ बेचकर/रेपो के माध्यम से तरलता जुटाकर महंगे उधार पर निर्भरता घटा सकते हैं।

भारत में पोर्टफोलियो एवं तरलता प्रबंधन की प्रमुख चुनौतियाँ

अगर आप उड़ नहीं सकते तो दौड़िए, दौड़ नहीं सकते तो चलिए,
लेकिन आगे बढ़ते रहिए। – मार्टिन लूथर किंग जूनियर

भारत में बैंकों के सामने कुछ संरचनात्मक और बाज़ार-आधारित चुनौतियाँ रहती हैं:

- **सरकारी उधारी एवं 'क्राउडिंग-आउट' प्रभाव:** उच्च सरकारी उधारी के कारण बैंकों को अधिक धन सरकारी प्रतिभूतियों में लगाना पड़ सकता है, जिससे निजी क्षेत्र को ऋण उपलब्धता सीमित हो सकती है।
- **कॉरपोरेट बॉन्ड बाज़ार की सीमित गहराई:** कॉरपोरेट ऋण बाज़ार अपेक्षाकृत सतही होने से तरल आस्तियों के विविधीकरण में बाधा आती है।
- **परिसंपत्ति-देयता बेमेल:** अल्पकालिक जमा देनदारियों के विरुद्ध दीर्घकालिक निवेश/ऋण रखने से तरलता तनाव बढ़ सकता है।
- **ब्याज दर जोखिम एवं मूल्य अस्थिरता:** ब्याज दर बढ़ने पर प्रतिभूतियों के मूल्य घट सकते हैं, जिससे तरलता बफर का बाज़ार मूल्य कमजोर हो सकता है।

उदाहरण: गलत निवेश/ट्रेज़री निर्णयों के कारण तरलता संकट

- **आइएल व एफ़एस संकट (2018):** कुछ एनबीएफ़सी में अल्पकालिक उधारी पर अत्यधिक निर्भरता और कम-तरल निवेशों के कारण तरलता संकट उत्पन्न हुआ। जिन बैंकों के पास तरल जी- एसईसीएस पर्याप्त थे, वे तुलनात्मक रूप से बेहतर स्थिति में रहे।
- **कोविड-19 महामारी (2020):** आरबीआई की लक्षित दीर्घकालिक रेपो परिचालन जैसी व्यवस्थाओं के तहत बैंकों ने अपने निवेश पोर्टफोलियो का उपयोग कर तरलता जुटाई और तनावग्रस्त क्षेत्रों तक निधि प्रवाह में सहायता की।

प्रभावी तरलता प्रबंधन की रणनीतियाँ

बैंकों को मजबूत गवर्नेंस, जोखिम प्रबंधन समितियों और परिसंपत्ति-देयता समिति के माध्यम से अनुशासित निर्णय-प्रक्रिया अपनानी चाहिए।

मुख्य रणनीतियाँ:

- तरलता जोखिम सहनशीलता (रिस्क एप्टाइट) की स्पष्ट सीमा तय करना और उसका नियमित आकलन।
- वित्तपोषण के स्रोतों में विविधता बनाए रखना और एकल स्रोत पर निर्भरता कम करना।
- नियमित स्ट्रेस टेस्टिंग कर प्रतिकूल परिदृश्यों में नकदी प्रवाह प्रभाव को समझना।
- जमा प्रबंधन को बेहतर बनाना: जमाओं का विविधीकरण ।
- अत्यधिक तरल आस्तियों (जी-एसईसीएस, मनी मार्केट उपकरण) और मध्यम-तरल निवेशों का संतुलित मिश्रण रखना ताकि सुरक्षा व लाभप्रदता दोनों साधे जा सकें।

निष्कर्ष

भारतीय बैंकों में निवेश पोर्टफोलियो तरलता प्रबंधन का 'मूल स्तंभ' है। सरकारी प्रतिभूतियों जैसी तरल आस्तियाँ रखकर बैंक नियामकीय मानकों का पालन करते हैं, प्रणालीगत झटकों से सुरक्षा प्राप्त करते हैं और जमाकर्ताओं का विश्वास बनाए रखते हैं।

तरलता प्रबंधन पोर्टफोलियो प्रबंधन से अलग नहीं है—यह उसी में अंतर्निहित है। प्रत्येक निवेश निर्णय लेते समय यह विचार अनिवार्य है कि संबंधित आस्ति को बिना बड़े नुकसान के कितनी जल्दी नकदी में बदला जा सकता है।

हिंदी भाषा – एक सुदृढ़ नींव

बच्चों की खिलखिलाहट से,
जो पहली आवाज निकले, उसे व्यक्त करती है भाषा !
दो लोगों में जो वार्तालाप हो.,
उसे व्यक्त करती है भाषा !
स्वयं की संवेदना को सबके सम्मुख,
व्यक्त करती है भाषा !
कुछ ना कह कर भी, जो सब कुछ व्यक्त कराये,
उसे भी कहते हैं भाषा ॥

इस भाषा के भी अनेक रूप, कोई बोलचाल की भाषा,
तो कोई मूक भाषा,
कोई सम्पर्क भाषा,
तो कोई कामकाज़ी भाषा !!

संस्कृति अनेक, सभ्यता अनेक, धर्म अनेक, बोली अनेक,
पर, असीमित संस्कृति के सौहार्दपूर्ण मिलान का माध्यम है
हिंदी भाषा ॥
कामकाज़ी क्षेत्र अनेक, व्यवसायिक माध्यम अनेक,
पर, कामकाज़ी वातावरण को सभी से मिलनसार बनाती है
हिंदी भाषा॥

राज्य अनेक, भौगोलिक वातावरण अनेक,
पर, विभिन्न राज्यवासियों के सौहार्दपूर्ण मिलन का माध्यम है
हिंदी भाषा !
शिक्षक अनेक, शिक्षा अनेक, डिग्री अनेक, विद्यार्थी अनेक,
पर, विभिन्न विद्वानों के ज्ञान के प्रचार – प्रसार का माध्यम है
हिंदी भाषा !

गंगोत्री की तरह,
विभिन्न नदियों (भाषाओं) को समेकित करते हुये,
कश्मीर से कन्याकुमारी तक,
पूरब से पश्चिम, उत्तर से दक्षिण तक
अविरल धारा के समान बहते हुये
अनेकता में एकता का परिचय कराती है,
हिंदी भाषा॥

विधान कुमार झा
परिवीक्षाधीन अधिकारी
रायपुर क्षेत्र

"संख्याओं का साहित्य: ब्याज दरों की रामकथा"

जितेंद्र सिंह, सहायक महा प्रबंधक, क्षेत्रीय कार्यालय दिल्ली

भारतीय समाज में धन और ऋण को कभी भी केवल हिसाब-किताब का विषय नहीं माना गया। यह जीवन, मर्यादा और संतुलन से जुड़ा हुआ विचार रहा है। हमारे दर्शन और साहित्य इस बात के साक्षी हैं कि मनुष्य की आवश्यकताएँ, उसकी सीमाएँ और उसका अनुशासन—तीनों को साथ लेकर चलना ही सही मार्ग माना गया। गीता में कर्म और संयम का संदेश है, रामायण में मर्यादा और संतुलन की कथा है, और महाभारत में यह स्पष्ट किया गया है कि संसाधनों का सही उपयोग ही धर्म है। आधुनिक बैंकिंग व्यवस्था भी इन्हीं मूल विचारों को आर्थिक भाषा में आगे बढ़ाती है।

ऋण को अक्सर नकारात्मक दृष्टि से देखा जाता है, लेकिन भारतीय चिंतन में ऋण को अवसर के रूप में भी स्वीकार किया गया है। लोकायत परंपरा की प्रसिद्ध उक्ति -"ऋणं कृत्वा घृतं पिबेत"- यह दर्शाती है कि जीवन की आवश्यकताओं को पूरा करना भी उतना ही महत्वपूर्ण है, बशर्ते विवेक और उत्तरदायित्व बना रहे। आज के संदर्भ में इसका अर्थ यह नहीं कि बिना सोचे-समझे ऋण लिया जाए, बल्कि यह कि ऋण जीवन को आगे बढ़ाने का साधन बन सकता है - चाहे वह शिक्षा हो, कृषि हो, आवास हो या व्यवसाय।

यहीं से आधुनिक मौद्रिक व्यवस्था की भूमिका शुरू होती है। जब हम ब्याज दरों की बात करते हैं, तो यह केवल प्रतिशत का खेल नहीं होता। यह तय करता है कि अर्थव्यवस्था की गति कितनी होगी और आम व्यक्ति के सपने कितनी आसानी से पूरे हो पाएंगे। इसी व्यवस्था के केंद्र में भारतीय रिज़र्व बैंक और उसकी नीतिगत दरें आती हैं। जब बैंक अपनी अल्पकालिक आवश्यकताओं के लिए आरबीआई से धन लेते हैं, तो जिस दर पर यह धन मिलता है, वही रेपो रेट कहलाती है। रेपो रेट में बदलाव का असर धीरे-धीरे पूरे समाज तक पहुँचता है आवास ऋण, शिक्षा ऋण , वाहन ऋण और उद्योगों के निवेश तक।

रेपो रेट को समझना ठीक वैसा ही है जैसे शरीर की धड़कन को समझना। धड़कन तेज होगी तो शरीर में उत्तेजना बढ़ेगी, धीमी होगी तो शिथिलता आएगी। जब रेपो रेट कम होती है, तो बाजार में पैसा सस्ता होता है, लोग खर्च और निवेश करते हैं, और अर्थव्यवस्था में गति आती है। जब यह दर बढ़ती है, तो संदेश स्पष्ट होता है कि अब संयम की आवश्यकता है। ठीक इसी संतुलन को बनाए रखने के लिए रिवर्स रेपो रेट का सहारा लिया जाता है, जिसमें आरबीआई बैंकों से धन उधार लेता है ताकि बाजार में अतिरिक्त धन को नियंत्रित किया जा सके। गीता में जिस संयम की बात की गई है, वही दर्शन यहाँ आर्थिक नीति के रूप में दिखाई देता है।

अल्पकालिक संतुलन के साथ-साथ दीर्घकालिक दृष्टि भी उतनी ही आवश्यक है। जब आरबीआई बैंकों को लंबे समय के लिए ऋण देता है, तो उस पर लगने वाली दर बैंक रेट कहलाती है। इसका असर उन परियोजनाओं पर पड़ता है जिनका फल तुरंत नहीं, बल्कि वर्षों बाद मिलता है-जैसे सड़कें, बिजली, शिक्षा संस्थान और औद्योगिक ढांचा। यह दर बताती है कि देश भविष्य को कितनी गंभीरता से देख रहा है। स्थिर और संतुलित बैंक दर दीर्घकालिक विकास की नींव बनती है।

लेकिन केवल रेपो रेट बदल देने से काम पूरा नहीं होता। आवश्यक यह भी है कि उसका असर समय पर और स्पष्ट रूप से ग्राहकों तक पहुँचे। इसी आवश्यकता से आरएलएलआर की अवधारणा सामने आई जो सीधे रेपो रेट से जुड़ा होता है। अब जैसे ही रेपो रेट बदलती है, ग्राहकों के ऋण की ब्याज दर भी लगभग तुरंत बदल जाती है। यह व्यवस्था उस भरोसे को मजबूत करती है कि नीति का लाभ केवल कागज़ों तक सीमित न रहकर आम व्यक्ति तक पहुँचे।जब ऋण सीधे रेपो रेट से जुड़ जाता है, तो आरबीआई के एक निर्णय का प्रभाव सीधे आम व्यक्ति की ईएमआई पर दिखाई देने लगता है। इससे ब्याज दरों में पारदर्शिता आती है और यह भरोसा बनता है कि नीतियाँ केवल फाइलों तक सीमित नहीं हैं, बल्कि ज़मीनी स्तर पर असर दिखा रही हैं।

समय के साथ यह महसूस किया गया कि केवल नीतिगत दरें बदलना पर्याप्त नहीं है, यदि उनका लाभ सीधे ग्राहकों तक न पहुँचे। इसी सोच से एमसीएलआर की अवधारणा आई, जिसने यह तय किया कि बैंक एक निश्चित सीमा से नीचे ऋण नहीं देंगे और रेपो रेट में बदलाव का असर ब्याज दरों पर दिखेगा। इसे मर्यादा के आर्थिक रूप में देखा जा सकता है - एक ऐसी सीमा, जो व्यवस्था को पारदर्शी और अनुशासित बनाए रखती है।

कल्पना कीजिए, भारतीय रिज़र्व बैंक किसी सारथी की तरह है। उसके हाथ में मौद्रिक नीति की लगाम है और सामने पूरी अर्थव्यवस्था का रथ। ज़रा-सी लगाम ढीली होती है, तो रथ तेज़ दौड़ने लगता है - ऋण सस्ते होते हैं, बाज़ार में चहल-पहल बढ़ती है, नए घरों की नींव पड़ती है, कारख़ानों की चिमनियाँ धुआँ छोड़ने लगती हैं। और जब लगाम थोड़ी खिंचती है, तो रथ संयम

से चलता है, ताकि महँगाई का उच्छृंखल घोड़ा बेलगाम न हो जाए।

लेकिन यह रथ केवल नीति से नहीं चलता, इसमें यात्रियों की भूमिका भी उतनी ही अहम है। आरएलएलआर ने यह सुनिश्चित किया कि सारथी का हर संकेत सीधे यात्रियों तक पहुँचे। अब नीति बदली और ईएमआई बदली—बीच में कोई पर्दा नहीं। यह पारदर्शिता भरोसे को जन्म देती है, और भरोसा ही बैंकिंग की असली पूंजी है।

यहीं पर व्यक्ति का प्रवेश होता है—अपने सिबिल स्कोर के साथ। यह स्कोर किसी कुंडली की तरह भविष्य नहीं बताता, बल्कि कर्मपत्र की तरह अतीत दर्ज करता है। जिसने अनुशासन रखा, समय पर भुगतान किया, उसने सस्ती ब्याज दरों का द्वार खोल लिया। जिसने लापरवाही बरती, उसने स्वयं अपने लिए रास्ता कठिन कर लिया। ब्याज दर यहाँ दंड नहीं बनती, बल्कि आईना बन जाती है—जो दिखाता है कि हम वित्तीय रूप से कितने जिम्मेदार इस प्रकार ब्याज दर और सिबिल स्कोर एक-दूसरे से गहराई से जुड़े हैं। रेपो रेट यह तय करती है कि ऋण का आधार मूल्य क्या होगा, लेकिन सिबिल स्कोर यह तय करता है कि उस आधार पर व्यक्ति को कितना भरोसा दिया जाएगा। समय पर भुगतान, सीमित उधारी और अनुशासित व्यवहार ब्याज दर को व्यक्तिगत स्तर पर सस्ता बनाते हैं। इस तरह ब्याज दर केवल नीति का विषय नहीं रहती, बल्कि व्यक्ति के चरित्र से जुड़ जाती है।

जैसे व्यक्ति के लिए सिबिल स्कोर महत्वपूर्ण है, वैसे ही संस्थानों और कंपनियों के लिए रेटिंग एजेंसियाँ वही भूमिका निभाती हैं। क्रिसिल, इकरा, केयर जैसी एजेंसियाँ यह आकलन करती हैं कि कोई कंपनी अपने ऋण को चुकाने में कितनी सक्षम है। उनकी दी गई रेटिंग सीधे यह तय करती है कि कंपनी को बैंक से ऋण किस ब्याज दर पर मिलेगा। अच्छी रेटिंग वाली कंपनी कम ब्याज दर पर पूंजी जुटा सकती है, जबकि कमजोर रेटिंग वाली कंपनी को ऊँची ब्याज दर चुकानी पड़ती है।

यहाँ भी वही सिद्धांत काम करता है—ब्याज दर जोखिम की कीमत होती है। जिस पर भरोसा अधिक, उसके लिए ऋण सस्ता; जिस पर भरोसा कम, उसके लिए ऋण महँगा। इस तरह सिबिल स्कोर और रेटिंग एजेंसियाँ मिलकर ब्याज दरों को न्यायसंगत बनाती हैं। वे सुनिश्चित करती हैं कि नीति दरों का लाभ उन्हीं तक पहुँचे जो वित्तीय अनुशासन का पालन करते हैं।

भारतीय साहित्य में बार-बार संतुलन और उत्तरदायित्व पर ज़ोर दिया गया है। कबीर का "साईं इतना दीजिए, जामे कुटुंब समाय" आज की बैंकिंग में आदर्श ब्याज दर का दर्शन बन सकता है—इतनी न कम कि जोखिम बढ़ जाए, और इतनी न अधिक कि प्रगति रुक जाए। तुलसीदास का "परहित सरिस धर्म नहि भाई" यह स्मरण कराता है कि जब ब्याज दरें संतुलित होती हैं, तभी समाज के सभी वर्ग—किसान, छात्र, व्यापारी और उद्योग—आगे बढ़ पाते हैं।डिजिटल बैंकिंग ने इस पूरी प्रक्रिया को और पारदर्शी बना दिया है। आज ग्राहक तुरंत देख सकता है कि रेपो रेट बदली या नहीं, उसकी ईएमआई क्यों बदली, और उनका सिबिल स्कोर किस स्थिति में है। जैसे प्राचीन काल में दूत संदेश लाते थे, वैसे ही आज डिजिटल प्लेटफॉर्म ब्याज दरों और विश्वास का संदेश तुरंत पहुँचाते हैं।

आने वाले समय में तकनीक और नीति का यह संबंध और गहरा होगा। ग्रीन फाइनेंस, डेटा आधारित क्रेडिट स्कोरिंग और नई वित्तीय प्रणालियाँ ब्याज दरों को और अधिक व्यवहारिक बनाएँगी। लेकिन मूल सिद्धांत वही रहेगा—विश्वास, अनुशासन और संतुलन।इस प्रकार ब्याज दरों की यह पूरी यात्रा आरबीआई की नीति से शुरू होकर व्यक्ति के चरित्र और संस्थानों की साख तक पहुँचती है। यह केवल अर्थशास्त्र नहीं, बल्कि सामाजिक अनुशासन और सांस्कृतिक समझ की कहानी है। जब ब्याज दरें संतुलित होती हैं और विश्वास के साथ लागू होती हैं, तभी अर्थव्यवस्था भी स्थिर रहती है और समाज भी आगे बढ़ता है।

जब हम ऋण और ब्याज दरों की इस पूरी यात्रा को पीछे मुड़कर देखते हैं, तो यह किसी सूखे आर्थिक अध्याय की तरह नहीं, बल्कि एक जीवंत कथा की तरह सामने आती है। यह कथा काग़ज़ों पर लिखे प्रतिशतों से शुरू होकर इंसान के सपनों, निर्णयों और भविष्य तक पहुँचती है। रेपो रेट, आरएलएलआर, सिबिल स्कोर और रेटिंग एजेंसियाँ—ये सब केवल तकनीकी शब्द नहीं, बल्कि इस कथा के पात्र हैं, जो मिलकर अर्थव्यवस्था का मंच सजाते हैं। इस पूरी कहानी में भारतीय साहित्य किसी मौन मार्गदर्शक की तरह साथ चलता है। कबीर का संतुलन आज ब्याज दर नीति में दिखाई देता है, तुलसी का परहित सामाजिक बैंकिंग में, और गीता का कर्मयोग हर ईएमआई में झलकता है। यह संयोग नहीं है कि हमारी बैंकिंग व्यवस्था अनजाने में ही हमारे सांस्कृतिक मूल्यों की प्रतिध्वनि बन गई है।

अंत में यही कहा जा सकता है कि ब्याज दरें किसी नदी की तरह हैं। अगर वे संतुलित बहें, तो खेतों को सींचती हैं, शहरों को जीवन देती हैं और सभ्यताओं को जन्म देती हैं। अगर वे अनियंत्रित हो जाएँ या सूख जाएँ, तो विनाश भी ला सकती हैं। इसलिए ब्याज दरों को समझना केवल वित्तीय ज्ञान नहीं, बल्कि भविष्य को समझने की कला है।

मैं धीरे चलता हूँ, ताकि जिंदगी पीछे न छूट जाए

नगेन्द्र कुमार सिंह, वरिष्ठ प्रबंधक, केंद्रीय कार्यालय

हमारा विपुल साहित्य अपने भीतर न सिर्फ विभिन्न कालखंडों के सामाजिक वातावरण में व्यापत ज्वलंत मुद्दों को समेटे हुए है, बल्कि असामयिक समस्याओं से जूझने और उससे उभरने का मार्ग भी प्रशस्त करता रहा है । साहित्य समाज की दशा और दिशा दोनों बदलने की ताकत रखता है । स्वाधीनता संग्राम से लेकर अन्य कई महत्वपूर्ण घटनाएँ एवं समसामयिक विषयों पर मुखर होकर लिखने की साहित्यकारों की क्षमता से भला कौन परिचित नहीं है । उनकी लेखनी ने देशवासियों में सुषुप्ता अवस्था से निकलकर तत्कालीन सरकार से आँख से आँख मिलाने की क्षमता उत्पन्न की । साहित्यकार महीन से महीन विषयों पर शब्दों का कुछ ऐसा ताना-बाना बुनते हैं, जो संवेदनशील पाठकों को झकझोरने का सामर्थ्य रखते हैं । कलमकारों ने आर्थिक विषमता, युवाओं की समस्याएं, ग्रामीण व शहरी परिवेश चित्रण, लोगबाग की अकुलाहट, जिजीविषा, प्रकृति आदि विषयों पर जमकर लिखा है । अपने परिवेश के प्रति जागरूकता एवं उसे अपनी लेखनी में बढ़-चढ़ कर स्थान देना साहित्यकारों की वातावरण के प्रति संवेदनशीलता को दर्शाता है । आइये इस अंक में एक ऐसे साहित्यकार से परिचित होते हैं, जिन्हें भोपाल के प्रबुद्ध कलावादी साहित्यकारों के एक कुनबा ने कवि मानने भर से भी इंकार कर दिया था । पर, उन्होंने अपने धारदार लेखन और जादुई यथार्थवाद को बड़े सलीके से साहित्य में गढ़ते रहने के कारण प्रतिष्ठित साहित्य अकादमी एवं ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्ति तक की यात्रा पूरी की है । उनके साहित्य में ग्रामीण परिवेश, भारतीय किसानों, खेतिहर मजदूरों, श्रमशील महिलाओं की दास्तान, कुपोषण के शिकार बच्चे, बेरोजगार नौजवानों के सपनों को बड़ी आसानी से देखा जा सकता है । उन्हें ख्याति भले उपन्यास विधा ने दिलवायी हो पर वे शानदार कवि, कहानीकार एवं अनुवादक भी रहे हैं । वे हरिशंकर परसाई एवं गजानन माधव मुक्तिबोध के बेहद प्रिय रहे हैं । शायद आपने अंदाजा लगा लिया होगा कि यह भूमिका हिंदी साहित्य के लब्धप्राप्त साहित्यकार विनोद कुमार शुक्ल जी के लिए गढ़ी गई है । आइये एक संवेदनशील कवि, कथाकार, उपन्यासकार एवं अनुवादक के रूप में अपनी विशिष्ट छाप छोड़ने वाले लेखक के साहित्यिक सफ़र एवं उनके समृद्ध साहित्य में उठाए गए ज्वलंत विषयों को समझने का प्रयास करते हैं ।

विनोद कुमार शुक्ल का जन्म अविभाजित मध्यप्रदेश के छत्तीसगढ़ अंचल के राजनांदगांव में 01 जनवरी 1937 को श्री शिवगोपाल शुक्ल एवं श्रीमती रुकमणि देवी के घर हुआ । राजनांदगांव को छत्तीसगढ़ की संस्कारधानी नगरी कहा जाता है । इस धरती को पदुमलाल पन्नालाल बख्शी, डॉ बलदेव प्रसाद मिश्र एवं गजानन माधव मुक्तिबोध जैसे रचनाकारों ने अपनी कर्मभूमि बनाया था । अल्पायु में ही पिता का देहांत होने के कारण वे बचपन में ही प्रौढ़ बन गये और परिपक्व की तरह सोचने लगे । पिता के मृत्यु के कारण इन्हें पिता की सुखद छाया और स्नेह अधिक नहीं मिल सका । किंतु इस कमी को मां की प्रगाढ़ ममता ने पूरा किया । स्वयं विनोद कुमार शुक्ल कहते हैं "मेरा बचपन राजनांदगांव में ही बीता । पिता की अकाल मृत्यु होने से मैं बचपन में ही प्रौढ़ बन गया था । बड़ों की तरह सोचने से बचपन गुजरा । बचपन में दुख अच्छे से समझना आता था । सुख बहुत अच्छे से समझना नहीं आता था । बचपन कुछ खास नहीं बीता ।" उनकी शिक्षा का भार चाचा किशोरीलाल शुक्ल ने उठाया, जिन्होंने आगे चलकर मध्य प्रदेश की राजनीति में प्रवेश किया और मध्य प्रदेश सरकार में कैबिनट मंत्री भी रहे । राजनांदगांव से इंटरमीडियट तक शिक्षा ग्रहण करने के बाद, वे बीएससी करने के लिए कृषि महाविद्यालय जबलपुर गये एवं एमएससी कृषि विषय से उत्तीर्ण की । बचपन में उनकी मां उन्हें क्रांतिकारियों की कहानियां सुनाती थीं । जिसका गहरा असर उनके मस्तिष्क पर पड़ा । वे क्रांतिकारियों से संबंधित पुस्तकें फुटपाथ से खरीदते और उन्हें पढ़ते थे । घर में 'चांद' और 'माधुरी' साहित्यिक पत्रिकाएं आती थीं । वे इन साहित्यिक पत्रिकाओं को मन लगाकर पढ़ते थे । परिणामस्वरूप उनके मन में साहित्य के प्रति अनुराग पैदा हुआ और हिंदी साहित्य को एक होनहार साहित्यकार मिला । सबसे बड़ी बात यह है कि उन्हें लेखन का पहला पाठ घर की पाठशाला में ही सीखने को मिला । चचेरे भाई भगवती प्रसाद शुक्ल स्वयं लिखते पढ़ते रहते थे, उनसे वे सहज रूप से जुड़े हुए थे । इसके बाद उनके बड़े भाई संतोष कुमार शुक्ल ने उनके लेखन के प्रति रुझान को देखकर, उनका गजानन माधव मुक्तिबोध से परिचय करवाया । उनकी रचनाधर्मिता से प्रभावित होकर मुक्तिबोध ने उन्हें हरिशंकर परसाई से मिलवाया । उनके लिए यह सुखद संयोग था कि उनकी रचनायात्रा के आरंभिक चरण में ही उन्हें मुक्तिबोध एवं परसाई जी जैसे आधुनिक चेतना संपन्न और सुलझे हुए रचनाकारों का सहज सान्निध्य मिला । स्वयं विनोद कुमार शुक्ल लिखते हैं "मेरे पीछे मुक्तिबोध और हरिशंकर परसाई की प्रेरणा रही । मुक्तिबोध की कविताओं को सुनने के बाद मैं पारदर्शी बन जाता था और नशे में झूमता था । जहां पैर रखता था अधिक गहराई में जाता था । अजीब सा लगता था । मन पर मुक्तिबोध की कविताएं छा जाती थीं ।" मुक्तिबोध की प्रेरणा से ही उनकी आरंभिक कविताएं 'कृति' पत्रिका में प्रकाशित हुईं । प्रकाशन के साथ ही 'कृति' पत्रिका के संपादक श्रीयुत श्रीकांत वर्मा से परिचय भी बढ़ा ।

रचना किसी भी रचनाकार का सबसे बड़ा परिचय हुआ करती है । उन्हें लेखन की शुरुआत में ही, मुक्तिबोध और परसाई के सान्निध्य से जो सही दिशा बोध मिला, उसका परिणाम हुआ कि उनकी रचना में

सही संवेदात्मक समझ का विकास दिखाई पड़ने लगा, तो दूसरी ओर श्रीयुत श्रीकांत वर्मा और अशोक वाजपेयी के साथ आत्मीय भाव बोध भी बढ़ा। उल्लेखनीय है कि अशोक वाजपेयी भारतीय प्रशासनिक सेवा के दायित्वों का निर्वहन करते हुए भी राष्ट्रीय क्षितिज पर कवि और समीक्षक के रूप में एक प्रख्यात व्यक्तित्व हैं। जब वे छत्तीसगढ़ में जिलाधीश के रूप में कार्यरत थे, उन्हीं दिनों उन्होंने 'पहचान' सीरिज निकाली थी जिसके माध्यम से युवा कवि समीक्षक के रूप में समकालीन कविता के रचनाकारों- मुक्तिबोध, कमलेश, धूमिल, विनोद कुमार शुक्ल आदि की काव्य विशेषताओं को सही रोशनी मिली। विनोद कुमार शुक्ल को उनकी प्रेरणा भी मिली। इन विद्वानों की प्रेरणा के कारण ही वे हिंदी साहित्य के एक श्रेष्ठ कवि, कहानीकार और उपन्यासकार बने।

विनोद कुमार शुक्ल का पहला काव्य-संग्रह 'लगभग जयहिंद' वर्ष 1971 में प्रकाशित हुआ। उनकी कविताओं की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वे बहुत ही सरल शब्दों में जीवन की गहरी सच्चाइयों को रख देते हैं। उनकी कविताएँ 'बौद्धिक' होने का दावा नहीं करतीं, बल्कि वे 'सहज' होती हैं। उनकी कविताएँ दिखाती है कि कैसे मानवता बिना किसी परिचय के एक-दूसरे से जुड़ सकती है। वे अपनी एक प्रसिद्ध कविता "हताशा से एक व्यक्ति बैठ गया था" में लिखते हैं:

"हताशा से एक व्यक्ति बैठ गया था

मैं उस व्यक्ति को नहीं जानता था जो बैठ गया था

पर मैं उसकी हताशा को जानता था।"

इसी क्रम में, वर्ष 1981 में उनका दूसरा काव्य-संग्रह 'वह आदमी चला गया नया गरम कोट पहनकर विचार की तरह' प्रकाशित हुआ। इस काव्य-संग्रह को आधुनिक हिन्दी कविता के सबसे महत्वपूर्ण मोड़ों में से एक माना जाता है। इस संग्रह के शीर्षक ने ही साहित्य जगत में एक नई हलचल पैदा कर दी थी। इस कविता की शुरुआती पंक्तियाँ ही इसकी जान हैं:

"वह आदमी चला गया

नया गरम कोट पहनकर

विचार की तरह।"

यहाँ 'कोट' (एक भौतिक वस्तु) की तुलना 'विचार' से की गई है। इसका गहरा अर्थ यह है कि जिस तरह एक नया गरम कोट शरीर को नई गर्माहट और सुरक्षा देता है, उसी तरह एक नया विचार व्यक्ति के व्यक्तित्व और उसके जीने के ढंग को पूरी तरह बदल देता है। आदमी अब वैसा नहीं रहा जैसा वह कोट पहनने से पहले था। उनकी कविताओं में नायक कोई बड़ा महापुरुष नहीं, बल्कि वह साधारण आदमी है जिसे सर्दी लगती है, जिसे कोट की जरूरत है और जो अपने विचारों में मगन है। इस संग्रह की कविताओं में अक्सर ऐसा होता है कि एक बहुत ही वास्तविक स्थिति अचानक से जादुई बन जाती है। 'विचार की तरह चले जाना' इसी जादुई यथार्थ का हिस्सा है, जहाँ वस्तु और विचार के बीच की दीवार गिर जाती है। यह रचना हमें सिखाती है कि कविता केवल बड़े शब्दों या कठिन उपमाओं में नहीं होती, बल्कि वह हमारे आसपास की छोटी चीजों और हमारे भीतर उठने वाले विचारों में बसी होती है।

वर्ष 2000 में उनका दुर्लभ काव्य-संग्रह 'अतिरिक्त नहीं' प्रकाशित हुआ। इस काव्य-संग्रह के पठन के बाद पाठको के लिए यह जायजा लगाना कठिन हो जाता है कि वे असल में किस भू-भाग के कवि हैं। वे आदिवासी जीवन के चितेरे कवि भी लगते हैं और ऐतिहासिक काल के गायक भी। आश्चर्यजनक रूप से यह संग्रह इतिहास, परंपरा, स्मृति, संस्कृति, अध्यात्म का अन्वेषण तो करता ही है, उसकी खुदाई भी करता है। वे उच्च वर्ग के साथ मध्यवर्ग की सुविधाभोगी दुनिया की धज्जियाँ उड़ाते हैं। वे लिखते हैं:

"तंदूर में बनती हुई रोटी

सबके हिस्से की बनती हुई रोटी नहीं है

जो सबकी घड़ी में बज रहा है

वह सबके हिस्से का समय नहीं है।"

विनोद कुमार शुक्ल की पहली कहानी संग्रह 'पेड़ पर कमरा' वर्ष 1988 में प्रकाशित हुई। यह कहानी हिन्दी साहित्य की सबसे अनूठी और कल्पनाशील कृतियों में से एक है। यह संग्रह उनकी कहानियों के जादुई संसार को समझने के लिए सबसे उत्तम है। यहाँ पेड़ पर कमरा होना कोई अचरज की बात नहीं, बल्कि एक सामान्य घटना की तरह आता है। उनकी कहानियों में प्रकृति और मनुष्य के बीच का पर्दा हट जाता है। उनकी कहानियों का संसार अक्सर मध्यमवर्गीय या निम्न-मध्यमवर्गीय परिवारों के इर्द-गिर्द बुना गया है। नायक अक्सर एक क्लर्क, एक टीचर या एक साधारण घरेलू व्यक्ति होता है। वे गरीबी या अभाव का रोना नहीं रोते, बल्कि अपनी छोटी सी दुनिया में कल्पना के सहारे खुशियाँ ढूँढ लेते हैं। इस संग्रह की कहानियाँ 'देखने की नजरिया' की प्रक्रिया पर ज़ोर देती हैं। एक खिड़की से बाहर देखना, एक दोस्त का घर आना या पेड़ के नीचे बैठना—इन छोटी क्रियाओं को वे बहुत विस्तार और गहराई देते हैं। यह संग्रह हमें संदेश देता है कि मनुष्य को अपनी जड़ों से जुड़े रहना चाहिए, लेकिन उसकी सोच और कल्पना ऊँची होनी चाहिए। यह 'एकांत' और 'प्रकृति' के साथ मनुष्य के गहरे संबंध की वकालत करता है।

उनका पहला उपन्यास 'नौकर की कमीज' वर्ष 1979 में प्रकाशित हुआ। यह रचना हिंदी साहित्य जगत में खूब ख्याति बटोर चुकी है। हिन्दी साहित्य की एक ऐसी अनूठी रचना है, जो अपनी सादगी के लिए जानी जाती है। यह उपन्यास मध्यमवर्गीय जीवन की विडंबनाओं, शोषण और मानवीय गरिमा के संघर्ष को एक बेहद 'अकिंचन' नजरिए से देखता है। उपन्यास की कहानी एक बेहद साधारण क्लर्क, संतु के इर्द-गिर्द घूमती है। कहानी

तब शुरू होती है जब संतु के साहब उसे एक पुरानी कमीज देते हैं, जो वास्तव में उनके पिछले नौकर की थी । पूरा उपन्यास इस बात पर टिका है कि वह कमीज संतु को फिट आती है या नहीं । यदि फिट आ गई, तो वह साहब की नजर में 'नौकर' बन जाएगा, और यदि नहीं आई, तो वह अपनी पहचान बचा पाएगा । यह कमीज केवल एक कपड़ा नहीं, बल्कि सत्ता और गुलामी का प्रतीक बन जाती है । संतु का पात्र उस मध्यम वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है जो अपनी अस्मिता बचाना चाहता है, लेकिन आर्थिक तंगी और सामाजिक दबाव के आगे विवश है । क्या एक इंसान की पहचान उसके पद से होती है या उसकी आत्मा से? 'कमीज' यहाँ एक ऐसा सांचा है जिसमें सत्ता आम आदमी को फिट करना चाहती है । 'नौकर की कमीज' केवल एक क्लर्क की कहानी नहीं है, बल्कि यह हर उस व्यक्ति की कहानी है जो व्यवस्था के बनाए हुए सांचों में फिट होने से इनकार करता है । यह उपन्यास हमें सिखाता है कि स्वाभिमान किसी भी 'कमीज' या 'पद' से बड़ा होता है ।

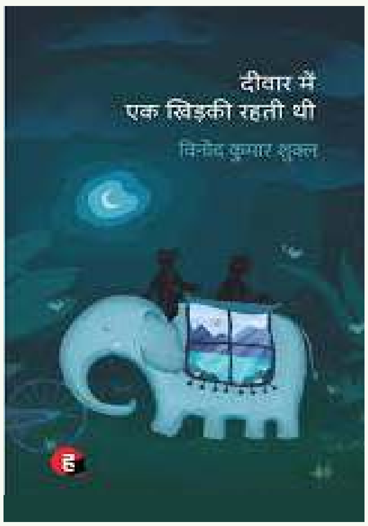

उनका दूसरा बहुचर्चित उपन्यास 'दीवार में एक खिड़की रहती थी' वर्ष 1997 में प्रकाशित हुआ । इस उपन्यास के लिए उन्हें 1999 में साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया था । यह उपन्यास अपनी अनोखी शैली, जादुई यथार्थवाद और मानवीय संवेदनाओं के लिए प्रसिद्ध है । उपन्यास का मुख्य पात्र रघुवर प्रसाद है, जो एक कॉलेज में अध्यापक है । वह अपनी पत्नी सोनसी के साथ एक छोटे से घर में रहता है । पूरी कहानी उनके सरल, मध्यमवर्गीय जीवन और उनके छोटे-छोटे सपनों, कल्पनाओं और आपसी प्रेम के इर्द-गिर्द घूमती है । 'दीवार' वास्तविकता, अभावों और जीवन की सीमाओं का प्रतीक है । 'खिड़की' कल्पना, संभावनाओं और मुक्ति की प्रतीक है । यह उपन्यास संदेश देता है कि कठिन और सीमित परिस्थितियों (दीवार) के बीच भी मनुष्य अपनी कल्पना और प्रेम के जरिए एक रास्ता (खिड़की) निकाल सकता है । इस उपन्यास की सबसे बड़ी खूबी यह है कि इसमें साधारण यथार्थ के साथ फंतासी या कल्पना इस कदर घुली-मिली है कि वे अलग नहीं लगते । जैसे—खिड़की से आकाश का घर के अंदर आ जाना या बादलों का कमरे में तैरना । यह पाठकों को एक अद्भुत लोक में ले जाता है । यह उपन्यास सिखाता है कि खुश रहने के लिए बहुत अधिक भौतिक सुख-सुविधाओं की आवश्यकता नहीं है । यदि आपके पास कल्पना करने की शक्ति और एक-दूसरे के प्रति संवेदनशीलता है, तो आप एक बंद कमरे में भी पूरी दुनिया का आनंद ले सकते हैं । जो लोग लेखक विनोद कुमार शुक्ल के निजी जीवन के सुख-दुख से वाकिफ नहीं हैं, उन्हें उनका यह बहुचर्चित उपन्यास जरूर पढ़ना चाहिए ।

उनका रचना संसार काफी विकसित एवं समुन्नत है । 65 सालों से भी अधिक समय से लिखते हुए भी वो कहते थे- "मैं जब भी कोई नई कविता लिखता हूं तो पहली कविता की तरह ही लिखता हूं । अब भी मैं जो कविता लिखता हूं, तो मैं उसी तरह लिखता हूं, जैसे मैं पहली कविता लिख रहा हूं । कविता लिखते समय हर बार ज़ेहन में यही बात रहती है कि मैंने अपना सर्वश्रेष्ठ तो कभी नहीं लिखा और कोई भी लिखने वाला, अपने जीवन में सर्वश्रेष्ठ कभी नहीं लिखता । सर्वश्रेष्ठ तो हमेशा लिखा जाना बचा हुआ है ।" यही उनके लिखे का रहस्य था । वे हर बार शुरु से शुरुआत करते थे, जैसे अभी-अभी लिखना सीखा हो ।

उनकी कई रचनाएं मराठी, मलयालम, अंग्रेजी, उड़िया, जर्मन, इतालवी आदि भाषाओं अनूदित में हो चुकी हैं । उनके उपन्यास और कहानियों पर फिल्में भी बनायी गयी हैं । मणिकौल द्वारा वर्ष 1999 में 'नौकर की कमीज' पर फिल्म का निर्माण किया गया । 'आदमी की औरत' और 'पेड़ पर कमरा' सहित कुछ कहानियों पर अमित दत्ता के निर्देशन में बनी फिल्म 'आदमी की औरत' को वेनिस फिल्म फेस्टिवल के 66वें समारोह (2009) में स्पेशल इवेंट पुरस्कार प्राप्त हुआ । उन्हें 'गजानन माधव मुक्तिबोध फेलोशिफ', 'राष्ट्रीय मैथिलीशरण गुप्त सम्मान', मध्य प्रदेश प्रशासन द्वारा 'शिखर सम्मान', उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान द्वारा 'हिंदी गौरव सम्मान', मध्य प्रदेश कला परिषद द्वारा 'रज़ा पुरस्कार', 'रघुवीर सहाय स्मृति पुरस्कार' प्राप्त हुए हैं । उनकी प्रसिद्ध कृति 'दीवार में एक खिड़की रहती थी' के लिए वर्ष 1999 में 'साहित्य अकादमी' पुरस्कार प्राप्त हुआ है तथा अन्तरराष्ट्रीय साहित्य में उपलब्धि के लिए 2023 के 'पेन अमेरिका नाबोकोव अवॉर्ड' से सम्मानित किया गया है । वर्ष 2024 में उन्हें हिंदी साहित्य जगत में अभूतपूर्व योगदान देने के लिए 59वाँ ज्ञानपीठ पुरस्कार दिया गया ।

सार्वभौमिक सत्य है कि हर दौर का अंत होता है । विनोद कुमार शुक्ल ने लंबे समय से स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं के कारण 23 दिसंबर 2025 को 88 वर्ष की आयु में अपनी अंतिम सांसे लीं । उनका असमय जाना साहित्य जगत के लिए एक अपूरणीय क्षति है । उनके निधन पर **माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी** शोक संवेदना प्रकट करते हुए ट्वीट किया "ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित प्रख्यात लेखक विनोद कुमार शुक्ल जी के निधन से अत्यंत दुख हुआ है । हिंदी साहित्य जगत में अपने अमूल्य योगदान के लिए वे हमेशा स्मरणीय रहेंगे ।" जी हाँ, उनके द्वारा गढ़े गए शब्द पाठकों के बीच हमेशा जीवित रहेंगे ।

आइये साहित्य की विभिन्न विधाओं में दिए उनके योगदान से रूबरू होते हैं –

कविता संग्रह : लगभग जयहिंद (1971), वह आदमी चला गया गरम कोट पहनकर विचार की तरह (1981), सब कुछ होना बचा रहेगा (1992), अतिरिक्त नहीं (2000), कविता से लंबी कविता (2001), आकाश धरती को खटखटाता है (2006)

कहानी संग्रह : पेड़ पर कमरा (1988), महाविद्यालय (1996), एक कहानी (2021)

उपन्यास : नौकर की कमीज (1979), खिलेगा तो देखेंगे (1996), दीवार में एक खिड़की रहती थी (1997), हरी घास की छप्पर वाली झोपड़ी और बौना पहाड़ (2011), एक चुप्पी जगह (2018)

अपडेट करिये और सुरक्षित रहिये

अभिषेक तिवारी, प्रबंधक, स्टाफ जवाबदेही कक्ष, केंद्रीय कार्यालय

हममें से कई लोगों के पास पुराने मोबाइल फ़ोन हैं और वे नया फ़ोन नहीं लेना चाहते, क्योंकि पुराने मोबाईलअच्छी स्थिति में हैं और नए फ़ोन में कोई नया ध्यान देने योग्य फ़ीचर नहीं जोड़ा गया है।

लेकिन बदलती तकनीक के माहौल में पुराने फ़ोन का इस्तेमाल करने के कुछ नुकसान भी हैं क्योंकि पुराने फ़ोन बाद में सुरक्षा जोखिम और हैकिंग का कारण बन सकते हैं।

हाल ही में मेरे दोस्त के साथ एक घटना घटी। मेरे दोस्त के पास लगभग 6 साल पुराना फ़ोन था और वह इसे बदलना नहीं चाहता था। चूँकि उसे कोई नया फ़ोन नहीं मिला जिसमें अतिरिक्त फ़ीचर हों, इसलिए वह फ़ोन इस्तेमाल करता रहा। लेकिन एक दिन उसे पता चला कि वह अपने फ़ोन पर अपना व्हाट्सएप एक्सेस नहीं कर पा रहा है और बाद में उसने पाया कि उसकी डिस्प्ले प्रोफ़ाइल (डीपी) तस्वीर बदल दी गई है। किसी ने डीपी में उसकी तस्वीर लगा दी है और अवैध गतिविधि में शामिल विभिन्न प्रकार के समूह बनाने शुरू कर दिए हैं। मेरा दोस्त डर गया और घबरा गया और उसने अपने व्हाट्सएप का एक्सेस वापस पाने की बहुत कोशिश की। लेकिन जब भी उसने व्हाट्सएप के प्रमाणीकरण के लिए जाने की कोशिश की, तो कुछ मौकों पर ओटीपी उसके पास आ गया। ओटीपी के साथ जब उन्होंने व्हाट्सएप में प्रवेश करने की कोशिश की, तो फोन ने गलत ओटीपी के रूप में त्रुटि संदेश दिखाया। तब उन्हें एहसास हुआ कि एक बार उन्हें एक व्यक्ति का फोन आया था जिसमें कहा गया था कि वह एक कूरियर फर्म का कर्मचारी है, जो अपना पार्सल देने के लिए बाहर है, वह अपने पते पर पहुंचने में असमर्थ है। कॉल करने वाले ने उन्हें एक संपर्क नंबर दिया जो *401# से शुरू होता है, उसके बाद एक मोबाइल फोन नंबर था। यह नंबर देखने के बाद वह भ्रमित हो गया, लेकिन फिर सोचा कि कुछ निजी कंपनियां आंतरिक संचार के लिए ऐसे नंबर दे सकती हैं और उसने इसे डायल कर दिया। लेकिन इस नंबर को डायल करने के बाद कॉल अग्रेषण सक्रिय हो गया। स्कैमर्स आने वाली कॉल को अपने डिवाइस पर डायवर्ट कर सकते हैं, जिससे उनके फोन नंबर तक पहुंच मिल जाती है। इससे वे उसके बैंक खातों और मैसेजिंग ऐप आदि में लॉग इन करने का प्रयास कर सकते हैं, या फोन पर भेजे गए वन-टाइम पासवर्ड (ओटीपी) प्राप्त कर सकते हैं। अंत में, उन्होंने साइबर अपराध विभाग में पुलिस शिकायत दर्ज करने का फैसला किया पूरी घटना सुनकर साइबर एक्सपर्ट चौंक गए और उन्हें बताया कि उनके फोन में लेटेस्ट सिक्योरिटी अपडेट नहीं है और उन्हें तुरंत फोन बदलने की सलाह दी। सलाह के अनुसार मेरे दोस्त ने अपना फोन बदल दिया और समस्या हल हो गई। अब देखते हैं कि इस मामले में क्या हुआ और फोन बदलने के बाद उन्हें फिर से अपने व्हाट्सएप तक पहुंच क्यों मिल गई। जब फोन पुराना हो जाता है, तो कुछ सालों के बाद (आमतौर पर दो साल के बाद) मोबाइल फोन कंपनियां ऑपरेटिंग सिस्टम अपडेट, सिक्योरिटी अपडेट और एप्लीकेशन अपडेट देना बंद कर देती हैं। इसलिए, इस मामले में, जब उन्होंने फोन बदला, तो उन्हें सभी तरह के लेटेस्ट अपडेटेड सॉफ्टवेयर मिले और इस वजह से हैकर को नए फोन को हैक करना मुश्किल हो गया क्योंकि नए फोन में खामियों को दूर किया जाता है। जब हम आम तौर पर नया फोन खरीदते हैं, तो हम देखते हैं कि हमें मोबाइल में तीन तरह के अपडेट मिल रहे हैं जो इस प्रकार हैं:- 1. ऑपरेटिंग सिस्टम (ओएस) अपडेट - मेजर अपडेट 2. सिक्योरिटी अपडेट 3. एप्लीकेशन (ऐप्स) अपडेट अब हम मेजर अपडेट से शुरू करते हैं, जो ओएस अपडेट है। इसमें निर्माता पैच जारी करते हैं, जो ऑपरेटिंग सिस्टम में बड़े बदलाव प्रदान करता है जो सुरक्षा जोखिम सहित फोन के कामकाज में कई खामियों को दूर करता है। यह हैकर्स के लिए उपलब्ध भेद्यताओं को रोकता है जो हमारे फोन तक अनधिकृत पहुंच प्राप्त करना चाहते हैं। यह अपडेट आम तौर पर साल में एक बार आता है। दूसरा अपडेट है सुरक्षा अपडेट। यह अपडेट आम तौर पर तीन या चार महीने में एक बार आता है और यह अपडेट आपके फोन को हैकर्स से सुरक्षित रखता है क्योंकि मोबाइल फोन कंपनी बाजार में संभावित खतरों के अनुसार फोन की सुरक्षा में लगातार सुधार करती है। तीसरा अपडेट हमारे द्वारा उपयोग किए जा रहे ऐप्स के लिए एप्लिकेशन अपडेट है और यह व्हाट्सएप, फेसबुक, टेलीग्राम, स्काइप आदि जैसी कंपनी से हो सकता है। ये कंपनियां अपने ऐप को हैकर्स से सुरक्षित रखने के लिए सुरक्षा खामियों को लगातार अपडेट करती रहती हैं और आखिरकार हमें हैकर्स का शिकार होने से बचाती हैं। ये अपडेट तब भी आते हैं जब ऐप निर्माता सॉफ़्टवेयर एप्लिकेशन को अपडेट करने के लिए रिलीज़ करते हैं। ये सभी अपडेट महत्वपूर्ण हैं, और हमें अपने फोन को हमेशा तीनों तरह के अपडेट के साथ अपडेट करते रहना चाहिए। अगर संबंधित कंपनियों द्वारा जारी किए गए अपडेट को डाउनलोड नहीं किया जाता है तो हमारे फोन के हैक होने का खतरा रहता है।

क्वांटम कम्प्यूटरिंग और बैंकिंग क्षेत्र : अवसर व खतरे

विवेक कुमार, सहायक प्रबंधक, क्षेत्रीय कार्यालय बड़ौदा

प्रस्तावना: बदलाव की एक नई आहट

आज हम जिस दौर में जी रहे हैं, वहां बैंकिंग का मतलब बैंक की लंबी लाइनों में खड़े होना नहीं, बल्कि मोबाइल की स्क्रीन पर एक क्लिक करना है। पिछले कुछ दशकों में तकनीक ने बैंकिंग की दुनिया को पूरी तरह बदल दिया है। पहले बही-खाते (Ledgers) थे, फिर कंप्यूटर आए, फिर इंटरनेट बैंकिंग आई, और अब हम मोबाइल बैंकिंग और यूपीआई के दौर में हैं। लेकिन, तकनीक की दुनिया में एक ऐसा तूफान आने वाला है, जो अब तक के सारे बदलावों को बौना साबित कर सकता है। उस तकनीक का नाम है - 'क्वांटम कम्प्यूटिंग'।

अक्सर हम साइंस फिक्शन फिल्मों में देखते हैं कि भविष्य के कंप्यूटर पलक झपकते ही दुनिया की सबसे मुश्किल पहेलियों को सुलझा देते हैं। क्वांटम कम्प्यूटिंग वही भविष्य है। बैंकिंग सेक्टर के लिए यह तकनीक "अलादीन के चिराग" जैसी हो सकती है, जो अपार धन और सुविधाएं ला सकती है, लेकिन साथ ही यह "विस्फोटक" भी हो सकती है जो बैंकों की सुरक्षा दीवारों को गिरा दे। इस आलेख में हम सरल भाषा में समझेंगे कि क्वांटम कम्प्यूटिंग क्या है और यह बैंकिंग सेक्टर के लिए वरदान है या अभिशाप।

क्वांटम कम्प्यूटिंग आखिर है क्या? (सरल शब्दों में)

आगे बढ़ने से पहले, यह समझना जरूरी है कि यह तकनीक काम कैसे करती है।

हमारे आज के कंप्यूटर (जिन्हें क्लासिकल कंप्यूटर कहते हैं) बहुत ही सरल नियम पर चलते हैं - या तो 0 या 1 (इसे 'बिट्स' कहते हैं)। यह बिल्कुल बिजली के स्विच जैसा है, जो या तो 'ऑन' होगा या 'ऑफ'।

लेकिन, क्वांटम कंप्यूटर इससे बिल्कुल अलग हैं। वे 'क्यूबिट्स' का इस्तेमाल करते हैं। इसे आप एक सिक्के के उदाहरण से समझ सकते हैं। आज का कंप्यूटर एक ऐसा सिक्का है जो या तो हेड है या टेल। लेकिन क्वांटम कंप्यूटर उस घूमते हुए सिक्के जैसा है, जो एक ही समय में हेड भी है और टेल भी।

इस क्षमता के कारण, क्वांटम कंप्यूटर उन गणनाओं (कैलकुलेशंस) को कुछ सेकंड में कर सकते हैं, जिन्हें करने में आज के सबसे तेज सुपरकंप्यूटर को भी हजारों साल लग जाएंगे। यही असीमित रफ़्तार बैंकिंग सेक्टर के लिए सबसे बड़ा आकर्षण और सबसे बड़ा डर दोनों है।

बैंकिंग सेक्टर के लिए सुनहरे अवसर

बैंकिंग का पूरा काम आंकड़ों (डाटा) और गणनाओं पर टिका है। क्वांटम कम्प्यूटिंग की रफ़्तार बैंकों के लिए कई नए दरवाजे खोल सकती है:

1. निवेश और ट्रेडिंग में तेजी

शेयर बाजार और निवेश की दुनिया में एक-एक मिली-सेकंड की कीमत करोड़ों में होती है। आज के कंप्यूटर बाजार के उतार-चढ़ाव का विश्लेषण करने में थोड़ा समय लेते हैं। क्वांटम कंप्यूटर हजारों-लाखों संभावनाओं का एक साथ विश्लेषण कर सकते हैं। इससे बैंक और वित्तीय संस्थान पलक झपकते ही सबसे बेहतरीन निवेश का फैसला ले सकेंगे, जिससे मुनाफा कई गुना बढ़ सकता है।

2. जोखिम प्रबंधन

बैंक जब किसी को बड़ा ऋण देते हैं या कहीं निवेश करते हैं, तो वे जोखिम का आकलन करते हैं। इसे 'मोंटे कार्लो सिमुलेशन' कहा जाता है। आज के कंप्यूटर सीमित डेटा को ही देख पाते हैं। क्वांटम कंप्यूटर बाजार की हर छोटी-बड़ी हलचल, वैश्विक घटनाओं और पुराने डेटा को एक साथ जोड़कर यह बता सकेगा कि जोखिम कितना है। इससे बैंकों का डूबने वाला पैसा (एनपीए) बहुत कम हो सकता है।

3. सटीक क्रेडिट स्कोरिंग

आज ऋण लेने के लिए सिबिल (सीआइबीआइएल) स्कोर देखा जाता है, जो कुछ सीमित जानकारी पर आधारित होता है। कई बार सही व्यक्ति को ऋण नहीं मिलता और गलत व्यक्ति को मिल जाता है। क्वांटम कंप्यूटर ग्राहक के खर्च करने के तरीके, आदतों और डिजिटल फुटप्रिंट का इतनी गहराई से विश्लेषण कर सकता है कि बैंक सही मायनों में ग्राहक की नीयत और क्षमता को परख सकेंगे। इससे ऋण प्रक्रिया आसान और सुरक्षित होगी।

4. धोखाधड़ी पकड़ना

आजकल ऑनलाइन फ्रॉड बहुत बढ़ गए हैं। वर्तमान सिस्टम फ्रॉड होने के बाद या उसके दौरान प्रतिक्रिया देते हैं। क्वांटम कंप्यूटर में मशीन लर्निंग की क्षमता इतनी तेज होगी कि वह

फ्रॉड होने से पहले ही पैटर्न को पहचान लेगा। जैसे, अगर आपके खाते से कोई असामान्य ट्रांजेक्शन होने वाला है, तो क्वांटम एआई (एआई) उसे होने से पहले ही ब्लॉक कर सकता है क्योंकि उसने लाखों पुराने फ्रॉड के तरीकों को सेकंड्स में स्कैन कर लिया होगा।

बैंकिंग सेक्टर के लिए खतरे

हर सिक्के का दूसरा पहलू भी होता है। क्वांटम कम्प्यूटिंग बैंकिंग जगत के लिए जितनी बड़ी खुशखबरी है, उससे कहीं ज्यादा बड़ा खतरा भी है। यह खतरा इतना बड़ा है कि दुनिया भर के केंद्रीय बैंक (जैसे भारत में आरबीआई) अभी से चिंतित हैं।

1. एन्क्रिप्शन का टूटना

यह सबसे बड़ा डर है। आज हमारी पूरी बैंकिंग व्यवस्था 'एन्क्रिप्शन' पर टिकी है। जब आप अपना पासवर्ड डालते हैं या पैसा भेजते हैं, तो वह एक कोड में बदल जाता है। यह कोड गणित की एक बहुत मुश्किल पहेली जैसा होता है, जिसे आज के कंप्यूटर सुलझा नहीं सकते।

लेकिन, क्वांटम कंप्यूटर के लिए यह पहेली सुलझाना बच्चों का खेल होगा। जिस पासवर्ड या सुरक्षा दीवार (Firewall) को तोड़ने में आज लाखों साल लगेंगे, क्वांटम कंप्यूटर उसे कुछ मिनटों में तोड़ सकता है। अगर ऐसा हुआ, तो हैकर्स बैंकों के लॉकर, लोगों के खाते और गोपनीय डेटा तक आसानी से पहुंच जाएंगे। इसे विशेषज्ञों ने "क्यू-डे" का नाम दिया है—वह दिन जब क्वांटम कंप्यूटर वर्तमान सुरक्षा को तोड़ देंगे।

2. "अभी चुराओ, बाद में पढ़ो" (हार्वेस्ट नाओ, डीक्रिप्ट लेटर)

हैकर्स अभी शांत नहीं बैठे हैं। वे जानते हैं कि क्वांटम कंप्यूटर आने में अभी कुछ साल (शायद 5-10 साल) लगेंगे। इसलिए वे अभी से बैंकों का एन्क्रिप्टेड (कोड भाषा वाला) डेटा चुरा कर जमा कर रहे हैं। वे इसे अभी पढ़ नहीं सकते, लेकिन जैसे ही उनके हाथ में क्वांटम तकनीक आएगी, वे इस सारे पुराने डेटा को डीकोड कर लेंगे। इसका मतलब है कि आज का सुरक्षित डेटा भी भविष्य में सुरक्षित नहीं है।

3. वित्तीय असमानता

क्वांटम कंप्यूटर बनाना और इस्तेमाल करना बहुत महंगा होगा। शुरुआत में केवल बड़े देश और बड़े बैंक ही इसे वहन कर पाएंगे। इससे छोटे बैंक और विकासशील देशों के वित्तीय संस्थान पिछड़ सकते हैं। बड़े बैंक बाजार पर एकतरफा कब्जा कर सकते हैं, जिससे प्रतिस्पर्धा खत्म हो सकती है।

4. क्रिप्टोकरेंसी पर खतरा

आजकल ब्लॉकचेन और क्रिप्टोकरेंसी (जैसे बिटकॉइन) का काफी चलन है। लोग इसे बहुत सुरक्षित मानते हैं। लेकिन क्वांटम कंप्यूटर ब्लॉकचेन के गणितीय आधार को भी चुनौती दे सकते हैं, जिससे पूरी क्रिप्टो-करेंसी मार्केट धराशायी हो सकती है।

तैयारी और समाधान: आगे की राह

खतरा बड़ा है, लेकिन इंसान हमेशा समाधान ढूंढ लेता है। बैंकिंग सेक्टर हाथ पर हाथ धरे नहीं बैठा है। इस "क्वांटम खतरे" से निपटने के लिए तैयारियां शुरू हो चुकी हैं।

1. पोस्ट-क्वांटम क्रिप्टोग्राफी (पीक्यूसी): वैज्ञानिक अब ऐसे नए गणितीय लॉक (लॉक्स) या कोड बना रहे हैं, जिन्हें क्वांटम कंप्यूटर भी न तोड़ सकें। इसे 'पोस्ट-क्वांटम क्रिप्टोग्राफी' कहते हैं। इसके लिए बैंकों को अपने पुराने सिस्टम को हटाकर इस नए सिस्टम को अपनाना होगा।

2. सरकारी नियम: सरकारों को सख्त नियम बनाने होंगे कि क्वांटम तकनीक का इस्तेमाल कौन और कैसे कर सकता है, ताकि यह गलत हाथों में न जाए।

3. क्वांटम कम्युनिकेशन: बैंक अपनी संचार व्यवस्था (कम्यूनिकेशंस) को सुरक्षित करने के लिए 'क्वांटम की डिस्ट्रीब्यूशन' (क्यूकेडी) का उपयोग कर सकते हैं, जो हैकिंग को लगभग नामुमकिन बना देता है।

निष्कर्ष

क्वांटम कम्प्यूटिंग बैंकिंग सेक्टर के लिए एक "दुधारी तलवार" है। एक तरफ यह बैंकिंग को इतना तेज, सटीक और ग्राहक-केंद्रित बना सकती है जिसकी हमने कल्पना भी नहीं की थी। वहीं दूसरी तरफ, यह हमारी जमा-पूंजी और गोपनीयता के लिए अब तक का सबसे बड़ा खतरा भी पैदा कर सकती है। भविष्य इस बात पर निर्भर नहीं करता कि क्वांटम कंप्यूटर कब आएंगे, बल्कि इस बात पर निर्भर करता है कि हम उनके स्वागत के लिए कितने तैयार हैं। यदि बैंकों ने समय रहते अपनी सुरक्षा प्रणाली को 'क्वांटम-प्रूफ' बना लिया, तो यह तकनीक वरदान साबित होगी। लेकिन अगर इसमें देरी हुई, तो परिणाम भयानक हो सकते हैं। संक्षेप में कहें तो, बैंकिंग का भविष्य रोमांचक भी है और डरावना भी। हमें बस अपनी 'डिजिटल तिजोरियों' के ताले बदलने की जरूरत है, इससे पहले कि कोई नई चाबी (क्वांटम कंप्यूटर) बाजार में आ जाए।

गांव गंवार

गौतम मोहन चौरसिया, सहायक प्रबंधक, वाराणसी क्षेत्र

मैं शहर हूँ। गांव से बड़ा। गांव से बेहतर। मैं वह विलासिता हूँ जो गाँव की सादगी का मज़ाक उड़ाकर फलती-फूलती है। मेरे पास एयरपोर्ट के रनवे जैसी लंबी जुबान है और मेट्रो जैसी तेज़ रफ़्तार चालाकी। मैं अमिताभ बच्चन बनकर खड़ा हूँ, क्योंकि मुझे पता है कि 'शशि कपूर' की बानगी ओढ़े गाँव आज भी उसी पुराने 'मां' और 'ईमानदारी' के डायलॉग पर अटका है। क्या है गांव के पास? मेरे मॉल की कांच वाली दीवारों में जब गाँव अपनी फटी बिवाई वाले पैर देखता है, तो उसे शर्म आती है, और बस, ये शर्म ही मेरा सबसे बड़ा मुनाफ़ा है।

गांव हैं नादान, नासमझ जिसे मैं जम के बेवकूफ बनाता हूँ। वैसे तो असलियत में उनके पास सब कुछ है, मुझसे कहीं ज्यादा है। बस मेरी कोशिश रहती है कि इतना चकाचौध कर दूं कि गांव धूमिल हो जाए बस। गांव जितना धुंधला होगा मैं उतना ज्यादा प्रगाढ़। मैं करता क्या हूँ? मैं गांव से गांव की खासियत को बेकार, गंवार, पिछड़ा बता कर खत्म करता हूँ। जब वो खत्म हो जाए तो उसे नए पैकेज में पैक करके उसका बिजनेस करता हूँ। मेरी पहली चाल यह है कि मैं गाँव की सहजता पर 'नादान और पिछड़ेपन' का लेबल लगाता हूँ और फिर उसे मुनाफे लिए भुनाता हूँ।

मेरे ऊंची-ऊंची बिल्डिंगों के पीछे दरअसल एक बहुत गहरा अंधेरा है। मेरी कोशिश बस इतनी है कि अपनी लाइटें इतनी तेज़ कर दूँ कि गाँव को अपनी झोपड़ी का दीपक भी 'पिछड़ापन' लगने लगे। मैं जानता हूँ कि जिस दिन गाँव को अपनी खुली हवा की कीमत समझ आ गई, मेरी एयर-कंडीशनर की दुकानें बंद हो जाएंगी। इसलिए मैं विज्ञापन बनाता हूँ, मैं फ़िल्में दिखाता हूँ, मैं यकीन दिलाता हूँ कि "सभ्य" होने का मतलब है—अपनी जड़ों को काटकर मेरे कंक्रीट के गमले में सज जाना। मैं बहुत शातिर तरीके से गाँव की संस्कृति की चोरी करता हूँ। कल तक जो गाँव का 'मट्ठा' था पहले मैंने उसे 'देहाती' कहकर चिढ़ाया। आज मैंने उसी मट्ठे को कांच की बोतल में भरकर, उस पर 'प्रोबायोटिक स्मूदी' का स्टिकर लगाया और नौजवानों के हाथों में 'हेल्थ ड्रिंक' कहकर पकड़ा दिया। मैं वह जादूगर हूँ जो गाँव की जेब काटता है और फिर उसे 'पर्स' खरीदने की सलाह देता है।

अब देखो न,

गांव सबसे ज्यादा बाजरा, मक्का, जौ वगैरह मोटे अनाज खाता था। लेकिन, मैंने धीरे धीरे उन्हें गंवार खाना बता कर मैदे वगैरह के सफेद, क्रिस्पी विकल्प के पीछे पागल कर दिया। और आज! हाई फाइबर फूड। सुपर हेल्दी। जागरूक और बड़े लोगों का खाना। उसी मोटे अनाज की नई ब्रांडिंग। डिजाइनदार पैकेजिंग। लेकिन महंगा। गांव का तीसी या अलसी का देहाती घोरूआ आज ओमेगा3 का ग्रेट रिसोर्स 'फ्लेक्ससीड्स' कैसे बन गया? मैं गाँव की चीज़ों को गाँव से छीनता हूँ, उस पर अंग्रेजी नाम का 'मेकअप' लगाता हूँ और फिर उसे एक नए 'एक्सपीरियंस' के तौर पर गाँव को ही नीचा दिखाकर बेचता हूँ। गांव बेचारा गोबर वगैरह का खाद प्रयोग करता था। उसे यूरिया, पोटास और बाकी कैमिकल किसने दिए? मैंने। और जब गोबर की कहानी खत्म हो गई तो फिर वही पुराना खेल, नया कॉन्सेप्ट। नई ब्रांडिंग। ऑर्गेनिक फूड। महंगा। नया.. मॉर्डन।

पागल गांव, सुबह सुबह दौड़ता था, कुश्ती करता था। लेकिन मैंने उसे दिखाया बेड टी मांगते विनोद खन्ना, सलमान खान, श्रीदेवी। बस फिर क्या था? शुरू हो गया मोटापा, खत्म हो गई कुश्ती, छूट गया मैदान। लेकिन उसी सलमान खान की बॉडी दिखा कर मैंने शुरू की जिम। मेम्बरशिप, वर्कआउट, प्रोटीन, सपलमेंट्स। और तो और ओपन जिम, खुली हवा के नाम पर और मोटा बिजनेस। गाँव, घुटने मोड़ के बैठता था टॉयलेट के लिए। मैंने दे दी आराम से बैठने के लिए कुर्सी। मॉडर्न, वेस्टर्न। बेटर लाइफस्टाइल। मस्त बैठो आधे-आधे घंटे। शरीर को नुकसान होता है तो हो जाने दो। लेकिन शहरी दबदबा चलना चाहिए गांव के ऊपर। बाद में लाएंगे वही घुटने मोड़ के बैठने का स्टाइल लेकिन नए मॉडल में। महंगा करके। बस बेवकूफ गांव को अभी 100% कन्वर्ट तो होने दो। गांव के लोगों को शहर बुलाओ, शहर के बीचोबीच साडा पिंड, चोखी ढाणी बनाके गांव दिखाओ। हा हा हा। रिसोर्ट बनाओ, फार्म हाउस बनाओ। सरल भाषा में, बेवकूफ बनाओ।

बड़े-बड़े आंगन में रहने वाले गांव को 800-900 स्क्वायर फुट के फ्लैट में समेट दो। उसे खरीदने के लिए रेवड़ियों की तरह लोन दे दो। और बना लो ज़िन्दगी भर लोन चुकाता बंधुआ मजदूर। और जिस दिन ये दुनिया कंक्रीटों का गुलाम बन जाए, उसी दिन एक नया रिसर्च कर के घोषणा कर दो कि सीमेंट के घर मे रहने से कैंसर होता है। फिर शुरू होगा एक नया प्रीमियम कॉन्सेप्ट। मिट्टी का घर, खप्पर की छत, पतहर की बॉउंड्री और अहाते में नीम का पेड़। जिसे अफोर्ड कर पाएंगे सिर्फ सबसे अमीर लोग। और जब बड़े-बड़े लोग ऐसे लाइफस्टाइल को जीने लगेंगे तो शुरू होगा अल्ट्रामॉडर्न शहर का कॉन्सेप्ट। जो कुछ और नही बल्कि होगा तो 'गाँव' ही लेकिन नई ब्रांडिंग में। अफोर्डबिलिटी से बाहर।

मै कभी कभी डरता हूँ की ये गाँव कहीं मेरे 'छोटा परिवार सुखी परिवार' के छलावे को समझ न जाए। क्योंकि जिस दिन परिवार में दादा-दादी, चाचा-चाची, फुफवा-सास, बड़की-माई, छोटकी-माई, दादा-परदादा; अठारह बीस घर वापस सातपुश्तिया खानदान बनकर रहने लगा, मेरा सारा प्लान चौपट हो जाएगा।

आत्म-जागरूकता: अपनी भावनाओं को समझें, अपने व्यवहार को जानें

एहषान अहम्मद, वरिष्ठ प्रबंधक(संकाय), रुबटेक, कोयंबत्तूर

आप यह नहीं समझ सकते कि अपनी भावनाओं को कैसे संभालें, जब तक आप यह नहीं जानते कि वे वास्तव में क्या हैं। भावनात्मक बुद्धिमत्ता—यानी अपनी और दूसरों की भावनाओं को पहचानने, समझने और नियंत्रित करने की क्षमता—आज के कार्यस्थल में एक अत्यंत महत्वपूर्ण कौशल बन चुकी है। फिर भी, इसकी अहमियत के बावजूद, बहुत से लोग भावनात्मक बुद्धिमत्ता का सही उपयोग नहीं कर पाते। इसके दो प्रमुख कारण हैं: पहला, लोगों को यह स्पष्ट रूप से समझ नहीं होती कि भावनाएँ वास्तव में क्या हैं, और दूसरा, भले ही कोई व्यक्ति भावनाओं को सैद्धांतिक रूप से समझ ले, अपनी भावनात्मक अवस्थाओं से निपटना फिर भी कठिन होता है।

सबसे पहले यह समझना ज़रूरी है कि भावनाएँ और अनुभूतियाँ एक जैसी नहीं हैं। सामान्य बातचीत में हम अक्सर इन शब्दों को एक-दूसरे के स्थान पर उपयोग करते हैं, लेकिन मनोवैज्ञानिक इन दोनों के बीच स्पष्ट अंतर करते हैं। अनुभूतियाँ—जिन्हें मनोविज्ञान में अफेक्ट कहा जाता है—हमारे प्रेरक तंत्र (मोटिवेश्नल सिस्टम) से उत्पन्न होने वाली मूलभूत संवेदनाएँ हैं। जब हम अपने लक्ष्यों में सफल होते हैं, तो हमें अच्छा महसूस होता है, और जब हम असफल होते हैं, तो बुरा। इन अनुभूतियों की तीव्रता इस बात पर निर्भर करती है कि हम किसी परिस्थिति में कितनी गहराई से भावनात्मक रूप से जुड़े हुए हैं।

लेकिन हमारा प्रेरक तंत्र मस्तिष्क के उन हिस्सों से बहुत अच्छी तरह नहीं जुड़ा होता जो दुनिया को समझने और कहानियाँ बनाने का कार्य करते हैं। यहीं पर भावनाएँ आती हैं। भावनाएँ दरअसल उन अनुभूतियों की व्याख्या) हैं; वे हमें यह समझने में मदद करती हैं कि हम अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने में कितने सफल हैं। उदाहरण के लिए, जब आप सड़क पार कर रहे हों और अचानक एक गाड़ी आपकी ओर आ जाए, तो जो तीव्र नकारात्मक अनुभूति होती है, उसे हम डर के रूप में समझते हैं। इसी तरह कि जब कोई सहकर्मी आपकी प्रशंसा करता है, तो जो गर्मजोशी महसूस होती है, वह गर्व होती है।

समस्या तब आती है जब भावनाओं की व्याख्या इतनी सरल नहीं होती। मान लीजिए, सुबह आपका किसी पारिवारिक सदस्य से झगड़ा हो गया और दिन में कार्यालय पहुँचने पर आप खुद को किसी प्रोजेक्ट को लेकर चिड़चिड़ा या परेशान महसूस करते हैं। हो सकता है कि आप अपने खराब मूड का कारण उस प्रोजेक्ट को मान लें, जबकि असल में यह सुबह की घटना का प्रभाव हो। इस तरह की भावनात्मक भ्रम की स्थिति बहुत आम है—और हानिकारक भी।

कई लोग नकारात्मक भावनाओं से बचने की कोशिश करते हैं, उन्हें नज़रअंदाज़ कर आगे बढ़ते रहते हैं। लेकिन यह तरीका आत्म-जागरूकता का अवसर खो देता है। भावनाएँ हमारे प्रेरक तंत्र की स्थिति के संकेत देती हैं। उन्हें नज़रअंदाज़ करना वैसा ही है जैसे बिना नक्शा, जीपीएस या विंडशील्ड देखे कार चलाना—आप आगे तो बढ़ रहे हैं, लेकिन पता नहीं कहाँ जा रहे हैं। वहीं, अगर आप अपनी भावनाओं पर ही अटक जाएँ और कोई कदम न उठाएँ, तो यह भी उतना ही बेकार है—जैसे कार चालू किए बिना सिर्फ नक्शे को देखते रहना।

बेहतर तरीका है संतुलन और चिंतन का। जब आप खुद को तनावग्रस्त, चिंतित या क्रोधित महसूस करें, तो रुकें। पाँच या दस मिनट के लिए गहरी साँसें लें और अपने शरीर को शांत करें। गहरी साँसें लेने से आपके भीतर की उत्तेजना कम होती है और आपका मस्तिष्क अधिक स्पष्टता से सोच पाता है। फिर अपने दिन के बारे में सोचें—कौन-सी घटनाएँ आपकी भावनाओं को प्रभावित कर रही हैं? ध्यान दें कि किन परिस्थितियों में आपकी भावनाएँ बेहतर या बदतर होती हैं। हो सकता है, पहले प्रयास में आप सब कुछ न समझ पाएँ, लेकिन अभ्यास के साथ आप यह जानने में निपुण हो जाएँगे कि आपकी नकारात्मक भावनाएँ कब और कहाँ उत्पन्न होती हैं।

जब आप यह समझ लें कि आपको वास्तव में क्या परेशान कर रहा है, तब सोच-समझकर कार्रवाई करें। किसी समस्या पर लगातार विचार करते रहना, लेकिन कुछ नहीं करना , नकारात्मक भावनाओं को और गहरा बना देता है। इसके बजाय, अपने विचारों का उपयोग करते हुए एक ठोस योजना बनाएँ जिससे आप अपनी परेशानी के मूल कारण को संबोधित कर सकें। हालांकि, अगर आपकी भावनाएँ अभी भी बहुत तीव्र हैं, तो कार्रवाई करने से पहले खुद को शांत होने का समय दें—जो निर्णय गुस्से या आवेग में ठीक लगते हैं, वे बाद में गलत भी साबित हो सकते हैं।

इस प्रकार आत्म-जागरूकता विकसित करने के कई स्थायी लाभ हैं। यह आपको उन परिस्थितियों की पहचान करने में मदद करती है जो बार-बार नकारात्मक भावनाएँ उत्पन्न करती हैं, जिससे आप बेहतर प्रतिक्रिया दे सकते हैं और अपनी भावनाओं को गलत दिशा में जाने से रोक सकते हैं। उदाहरण के लिए, यदि आपको पता चलता है कि आपका व्यक्तिगत तनाव आपके कार्यस्थल के मूड को प्रभावित कर रहा है, तो आप अपने काम को अनुचित रूप से दोष देने से बच सकते हैं।

अंततः, भावनात्मक बुद्धिमत्ता की शुरुआत आत्म-जागरूकता से होती है। जब आप यह समझने के लिए समय निकालते हैं कि भावनाएँ वास्तव में क्या हैं और अपनी अनुभूतियों की सटीक व्याख्या करना सीखते हैं, तो आप अपने व्यवहार को नियंत्रित करने, मजबूत रिश्ते बनाने और समझदारीपूर्ण निर्णय लेने की शक्ति हासिल करते हैं। इस प्रकार, आप न केवल अपनी भावनाओं को अधिक प्रभावी ढंग से संभालते हैं, बल्कि उन्हें व्यक्तिगत और व्यावसायिक विकास के उपकरण में बदल देते हैं।

विश्वास वह शक्ति है जिससे उजड़ी हुई दुनिया में भी प्रकाश लाया जा सकता है। – टोनी रॉबिंस

उभरते प्रौद्योगिकी परिदृश्य में वित्तीय स्थिरता

ऋतुश्री प्रधान, प्रबंधक, क्षेत्रीय कार्यालय विशाखापट्टणम

"प्रौद्योगिकी वह विज्ञान, ज्ञान, प्रक्रियाएं, औजार और प्रणालियाँ हैं, जिनका उपयोग किसी समस्या को हल करने, मानव जीवन को बेहतर बनाने या व्यावहारिक उद्देश्य को पूरा करने के लिए किया जाता है। इस में पत्थर के औजारों से लेकर कंप्यूटर और इंटरनेट जैसी जटिल प्रणालियों तक सब कुछ शामिल है, जो समाज में महत्वपूर्ण परिवर्तन लाती हैं, आर्थिक विकास में योगदान देती हैं, लेकिन इसके नकारात्मक सामाजिक और पर्यावरणीय प्रभाव भी हो सकते हैं।"

"थॉमस एडिसन ने दुनिया की पहली औद्योगिक अनुसंधान प्रयोगशाला बनाई और उन्हें प्रौद्योगिकी का जनक कहा जाता है।"

प्रौद्योगिकी की विशेषताएं:

यह मानव कार्य को आसान बनाने के साथ-साथ उसे अधिक कुशल और प्रभावी भी बनाती है। इस प्रकार, प्रौद्योगिकी को मानवीय क्षमताओं का विस्तार माना जाता है।

प्रौद्योगिकी की सबसे बड़ी उपलब्धि यह नहीं है कि यह जीवन को कैसे बदलती है, बल्कि यह है कि यह इसे कैसे बेहतर बनाती है।" - **सत्य नडेला**, माइक्रोसॉफ्ट के सीईओ

प्रौद्योगिकी का महत्व:

प्रौद्योगिकी हमारे जीवन के लगभग हर पहलू में सुधार करती है, जिससे उत्पादकता बढ़ती है, संचार सुगम होता है, अर्थव्यवस्था को बढ़ावा मिलता है, और शिक्षा, स्वास्थ्य, और मनोरंजन के क्षेत्रों में नए अवसर पैदा होते हैं। यह जीवन को आसान और अधिक कुशल बनाती है, और दुनिया भर में लोगों को आपस में जोड़ती है, जिससे सुविधा, विलासिता और बेहतर ज्ञान का मार्ग प्रशस्त होता है।

जीवन को बेहतर बनाने में प्रौद्योगिकी का महत्व:

- **सुविधा और उत्पादकता:**

प्रौद्योगिकी विभिन्न उपकरणों, तकनीकों और ऊर्जा स्रोतों का उपयोग करके कार्यों को आसान बनाती है। यह हमें स्वचालन, अनुस्मारक सेट करने, ऑनलाइन बिल भुगतान और खरीदारी करने में मदद करती है, जिससे हमारा दैनिक जीवन अधिक कुशल बनता है।

- **संचार और कनेक्टिविटी:**

इंटरनेट और डिजिटल प्लेटफॉर्म ने संचार को अभूतपूर्व रूप से बदला है। अब लोग वास्तविक समय में किसी भी स्थान पर किसी से भी जुड़ सकते हैं, जिस से दुनिया एक वैश्विक गाँव बन गई है।

- **अर्थव्यवस्था का विकास:**

प्रौद्योगिकी उत्पादन और उत्पादकता को बढ़ाती है, और नए उत्पादों और सेवाओं के निर्माण को बढ़ावा देती है। यह बहु राष्ट्रीय कंपनियों की स्थापना और व्यापार के विस्तार में भी सहायता करती है।

- **शिक्षा का आधुनिकीकरण:**

कक्षा के भीतर प्रौद्योगिकी का उपयोग सीखने को अधिक रोचकऔर प्रभावी बनाता है। इंटरैक्टिव गेम, मल्टीमीडिया प्रोजेक्ट्स और वर्चुअल रियलिटी तथा ऑगमेंटेड रियलिटी (एआर) जैसे उपकरण सीखने के अनुभवोंको समृद्ध करते हैं।

- **स्वास्थ्य और कल्याण:**

स्वास्थ्य सेवा में प्रौद्योगिकी ने डायग्नोस्टिक्स, उपचार और रोगी निगरानी को बेहतर बनाया है। बायोमेट्रिक स्कैन और ब्लड ग्लूकोज़ मॉनिटर जैसे हार्डवेयर उपकरणों से स्वास्थ्य प्रबंधन आसान हो गया है।

- **ज्ञान का विस्तार:**

प्रौद्योगिकी ने दुनिया और बाहरी अंतरिक्ष के बारे में हमारे ज्ञान को बढ़ाया है। इसने शोध और विकास को बढ़ावा दिया है, जिससे नई खोजें और आविष्कार संभव हुए हैं।

- **सुरक्षा और स्थिरता:**

प्रौद्योगिकी शहरी स्थिरता को बढ़ाकर संसाधनों को अनुकूलित करती है, और साइबर हमलों से बचाव के लिए सुरक्षा उपाय प्रदान करती है।

प्रौद्योगिकी के मुख्य पहलू:

- **वैज्ञानिक ज्ञान का अनुप्रयोग:**

प्रौद्योगिकी विज्ञान के सिद्धांतों और ज्ञान को व्यावहारिक समस्याओं के समाधान के लिए लागू करती है।

- **मानव संस्कृति का हिस्सा:**

प्रौद्योगिकी को अक्सर मानव संस्कृति की एक अभिव्यक्ति का रूप माना जाता है, जो मानवीय मूल्यों से जुड़ी होती है।

- **सामाजिक और आर्थिक प्रभाव:**

यह आर्थिक विकास को बढ़ावा देती है और जीवन स्तर में सुधार करती है, लेकिन इसके साथ ही बेरोजगारी, प्रदूषण और संसाधनों की कमी जैसे नकारात्मक पहलू भी हो सकते हैं।

उभरती हुई प्रौद्योगिकी क्या है? –

उभरती हुई प्रौद्योगिकियाँ वे नई और अभूतपूर्व प्रौद्योगिकियाँ हैं जो समाज, संस्कृति और अर्थव्यवस्था पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालने की क्षमता रखती हैं, भले ही उन्हें अभी व्यापक रूप से अपनाया न गया हो या वे महँगी हों। इनमें कृत्रिम बुद्धिमत्ता, क्वांटम कंप्यूटिंग और उन्नत जैव प्रौद्योगिकी जैसी प्रौद्योगिकियाँ शामिल हैं, जो महत्वपूर्ण परिवर्तनों और नवाचारों को लाने के लिए तैयार हैं। ये प्रौद्योगिकियाँ या तो पूरी तरह से नई होती हैं या मौजूदा तकनीकों के तीव्र विकास के परिणाम स्वरूप बनती हैं, जो उन्हें वर्तमान में स्थापित प्रौद्योगिकियों से अलग करती हैं।

उभरती प्रौद्योगिकियों की मुख्य विशेषताएँ:

- **नवीनता:** ये प्रौद्योगिकियाँ मौलिक रूप से नई होती हैं या मौजूदा प्रौद्योगिकियों में सुधार लाती हैं, जिससे वे अद्वितीय और अभिनव बन जाती हैं।

- **तीव्र विकास:** ये प्रौद्योगिकियाँ तेजी से विकसित हो रही हैं, जो दर्शाता है कि वे अभी विकास के चरण में हैं और अभी तक अपनी पूरी क्षमता तक नहीं पहुँची हैं।
- **प्रमुख प्रभाव:** इनमें समाज और अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों जैसे शिक्षा, स्वास्थ्य, परिवहन और वित्तमे क्रांत लाने की क्षमता होती है।
- **विघटनकारी क्षमता:** ये पारंपरिक तकनीकों को प्रतिस्थापित कर सकती हैं, उदाहरण के लिये ऑटोमोबाइल द्वारा घोडा-गाड़ी की जगह लेना नई तकनीक और एक नया प्रतिमान स्थापित कर सकती हैं।
- **अनिश्चितता और अस्पष्टता:** क्योकि यह तकनीक नई होती हैं, इसलिए इसके प्रभाव, उपयोग और जोखिमों के बारे में अनिश्चितता हो सकती है, जो इसके विकास को और भी चुनौतीपूर्ण बनाता है।

उभरती प्रौद्योगिकियों के कुछ उदाहरण

- **कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence):** मशीनों को मनुष्यों की तरह सोचने और सीखने में सक्षम बनाना।
- **क्वांटम कंप्यूटिंग (Quantum Computing):** अभूतपूर्व गणना शक्ति के लिए क्वांटम यांत्रिकी के सिद्धांतों का उपयोग करना।
- **जैवप्रौद्योगिकी (Biotechnology):** आनुवंशिक इंजीनियरिंग और आणविक संरचनाओं के अध्ययन के माध्यम से दवा खोज और स्वास्थ्य सेवा में सुधार।
- **डिजिटल प्रौद्योगिकियाँ:** इटरनेट ऑफ थिंग्स (IoT), ब्लॉक चेन और उन्नत क्लाउड कंप्यूटिंग जैसी प्रौद्योगिकियाँ।

उभरती प्रौद्योगिकियों के प्रभाव:

ये प्रौद्योगिकियाँ स्टार्टअप्स की दक्षता में सुधार, उत्पादकता बढ़ाने और लागत कम करने के नए अवसर प्रदान करती हैं। उदाहरण के लिए, रोबोटिक्स और स्वचालन थकाऊ और दोहराव वाले कार्यों को स्वचालित कर सकती हैं, जिससे कर्मचारियों के लिए अधिक रणनीतिक पहलों पर ध्यान केंद्रित करने के लिए बहुमूल्य समय बच जाता है।

पांच उभरती हुई प्रौद्योगिकियां कौन सी हैं?

उभरती हुई प्रौद्योगिकियों में शैक्षिक प्रौद्योगिकी, सूचना प्रौद्योगिकी, नैनो प्रौद्योगिकी, जैव प्रौद्योगिकी, रोबोटिक्स और कृत्रिम बुद्धिमत्ता जैसी विभिन्न प्रौद्योगिकियां शामिल हैं। समान लक्ष्यों की ओर विकसित हो रही विभिन्न प्रणालियों के तकनीकी अभिसरण से नए तकनीकी क्षेत्र उभर सकते हैं।

दुनिया का सबसे उन्नत प्रौद्योगिकी वाला देश कौन सा है?

दुनिया में टेक्नोलॉजी के मामले में कोई एक "सबसे" उन्नत देश नहीं है, क्योंकि अलग-अलग देश विभिन्न क्षेत्रों में अग्रणी हैं, लेकिन कुछ प्रमुख देश हैं जो तकनीकी विकास में सबसे आगे हैं। इसमें संयुक्त राज्य अमेरिका (AI, बायोटेक्नोलॉजी), दक्षिण कोरिया (चिप, रोबोटिक्स), जापान (रोबोटिक्स, ऑटोमेशन), चीन (एआई, 5 जी, इलेक्ट्रिक व्हीकल), जर्मनी (इंजीनियरिंग), इजराइल (साइबर सुरक्षा, मेडिकल टेक), और स्वीडन (ग्रीनटेक) शामिल हैं।

भारत : सॉफ्टवेयर, फिनटेक और स्पेसटेक में तेजी से उभर रहा है, और यहां की टेक टैलेंट विश्व प्रसिद्ध है। यह ध्यान रखन महत्वपूर्ण है कि तकनीकी प्रगति का आकलन एक जटिल प्रक्रिया है, और यह विभिन्न कारकों पर निर्भर करती है, जैसे अनुसंधान एवं विकास में निवेश, तकनीकी नवाचार और डिजिटल बुनियादी ढांचे की उपलब्धता। यह उपलब्धता भारत को अन्य देशों के बीच अलग पहचान प्रदान करती है।

वित्तीय स्थिरता क्या है?

वित्तीय स्थिरता एक स्थिर वित्तीय प्रणाली होती है जिसमें वित्तीय मध्यस्थ, बाज़ार और बाज़ार का बुनियादी ढाँचा बचतकर्ताओं और निवेशकों के बीच धन के सुचारू प्रवाह को सुगम बनाते हैं और इस प्रकार आर्थिक गतिविधियों में वृद्धि को बढ़ावा मिलता है।

वित्तीय स्थिरता उस स्थिति को कहते हैं जिसमें वित्तीय प्रणाली प्रभावी ढंग से संचालित होती है, विश्वास बनाए रखती है और उन व्यवधानों को रोकती है जो गंभीर आर्थिक मंदी का कारण बन सकते हैं।इसमें वित्तीय संस्थानों और बाज़ारों के जोखिमों का प्रबंधन करने और झटकों को झेलने की क्षमता शामिल है, जिससे अर्थ व्यवस्था का समग्र स्वास्थ्य सुनिश्चित होता है।

मिंस्की (1982) एलन और वुड (2006) ने नोट किया कि " वित्तीय स्थिरता " शब्द (मूल्य स्थिरता से एक स्वतंत्र उद्देश्य के रूप में) का पहली बार उपयोग 1994 में बैंक ऑफ इंग्लैंड द्वारा किया गया था। हालांकि यह शब्द काफी नया है, अवधारणा पुरानी है। वोल्कर (1984) ने नोट किया कि "फेडरल रिजर्व की स्थापना का मुख्य कारण [1913 में] स्थिर और सुचारू रूपसे काम करने वाली वित्तीय और भुगतान प्रणालियों को आश्वस्त करना है"।

वित्तीय स्थिरता के लाभ :

1. जोखिम प्रबंधन : वित्तीय स्थिरता व्यवसायों को जोखिमों को प्रबंधित करने और अनिश्चितताओं से निपटने में मदद करती है।

2. निवेश आकर्षित करना : वित्तीय रूप से स्थिर व्यवसाय निवेशकों को आकर्षित करने और पूंजी जुटाने में अधिक सफल होते हैं।

3. व्यवसायिक विकास : वित्तीय स्थिरता व्यवसायों को नए अवसरों का लाभ उठाने और विकास करने में सक्षम बनाती है।

वित्तीय स्थिरता बनाए रखने के लिए व्यवसायों को निम्नलिखित रणनीतियों को अपनाना चाहिए:

1. वित्तीय योजना: व्यवसायों को एक ठोस वित्तीय योजना बनानी चाहिए जो उनके लक्ष्यों और उद्देश्यों को परिभाषित करे।

2. नकदी प्रवाह प्रबंधन: व्यवसायों को अपने नकदी प्रवाह को प्रभावी ढंग से प्रबंधित करना चाहिए ताकि वे अपने वित्तीय दायित्वों को पूरा कर सकें।

3. जोखिम प्रबंधन: व्यवसायों को जोखिमों को पहचानना और प्रबंधित करना चाहिए जो उनकी वित्तीय स्थिरता को प्रभावित कर सकते हैं।

वित्तीय स्थिरता रिपोर्ट

वित्तीय स्थिरता रिपोर्ट भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा जारी एक द्विवार्षिक रिपोर्ट है।

प्रमुख विशेषताएँ

वित्तीय प्रणाली का आकलन: एफएसआर भारतीय वित्तीय प्रणाली के लचीलेपन का व्यापक मूल्यांकन प्रदान करता है।

जोखिमों की पहचान: यह घरेलू एवं वैश्विक दोनों तरह से वित्तीय स्थिरता के लिए संभावित जोखिमों की पहचान एवं विश्लेषण करता है।

व्यापक आर्थिक विश्लेषण: रिपोर्ट में उन समष्टि आर्थिक कारकों का विश्लेषण शामिल है, जो वित्तीय प्रणाली को प्रभावित कर सकते हैं।

तनाव परीक्षण: यह विभिन्न परिदृश्यों के तहत उनकी आधात सहनीयता का आकलन करने के लिए वित्तीय प्रणाली के विभिन्न क्षेत्रों पर तनाव परीक्षण करता है।

महत्त्व

प्रारंभिक चेतावनी प्रणाली: एफएसआर संभावित वित्तीय संकटों केलिए प्रारंभिक चेतावनी प्रणाली के रूप में कार्य करता है।

नीति मार्ग दर्शन: यह नीति निर्माता ओं, नियाम कों एवं बाजार सहभागियों को मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान करता है।

पारदर्शिता एवं जवाबदेही: यह वित्तीय प्रणाली के भीतर पारदर्शिता एवं जवाबदेही को बढ़ाता है।

हालिया एफएसआर: दिसंबर 2024 में जारी नवीनतम एफएसआर ने वैश्विक चुनौतियों के बावजूद भारतीय वित्तीय प्रणाली की आघात सहनीयता पर प्रकाश डाला।

वित्तीय स्थिरता और विकास परिषद (एफ़एसडीसी):

यह वित्त मंत्रालय के तहत एक गैर सांविधिक शीर्ष परिषद है तथा इसकी स्थापना वर्ष 2010 में एक कार्यकारी आदेश द्वारा की गई थी।

संरचना:

इसकी अध्यक्षता वित्तमंत्री द्वारा की जाती है तथा इसके सदस्यों में वित्तीय क्षेत्र के सभी नियामकों के प्रमुख, वित्तसचिव, आर्थिक मामलों के विभाग के सचिव, वित्तीय सेवाएं विभाग के सचिव और मुख्यआर्थिक सलाहकार शामिल हैं।

वर्ष 2018 में सरकार ने आर्थिक मामलों के विभाग के ज़िम्मेदार राज्य मंत्री, इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी विभाग के सचिव, भारतीय दिवाला एवं दिवालियापन बोर्ड के अध्यक्ष तथा राजस्व सचिव को शामिल करने के उद्देश्य से इसका पुनर्गठन किया।

उप-समिति की अध्यक्षता **आरबीआई के गवर्नर द्वारा** की जाती है।

आवश्यकता पड़ने पर यह परिषद **विशेषज्ञों को भी अपनी बैठक में आमंत्रित** कर सकती है।

आरबीआई द्वारा हालिया रिपोर्ट (2024) में उठाई गई चिंताएँ

- ✓ **बढ़ती बैंकिंग धोखाधड़ी:** धोखाधड़ी के मामलों में उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की गई, अप्रैल-सितंबर 2024 के दौरान ₹21,367 करोड़ की राशि के 18,461 मामले सामने आए, जबकि पिछले वर्ष ₹2,623 करोड़ की राशि के 14,480 मामले थे।
- ✓ **साइबर सुरक्षा खतरे:** डिजिटल लेनदेन में वृद्धि के कारण साइबर धोखाधड़ी में वृद्धि हुई है, जिससे मजबूत उपायों, सार्वजनिक जागरूकता एवं म्यूल खातों की पहचान की आवश्यकता पर प्रकाश डाला गया है।
- ✓ **वैश्विक आर्थिक कमजोरियाँ:** लगातार मध्यम अवधि के जोखिम जैसे कि परिसंपत्ति मूल्यांकन में वृद्धि, उच्च सार्वजनिक ऋण, भू-राजनीतिक तनाव और उभरती प्रौद्योगि की जोखिम को वित्तीय स्थिरता के लिए संभावित चुनौतियों के रूप में देखा गया।
- ✓ **परिचालन एवं प्रतिष्ठा संबंधी जोखिम:** बढ़ते धोखाधड़ी के मामले और तकनीकी खतरे वित्तीय संस्थाओं की प्रतिष्ठा और परिचालन अखंडता के लिए खतरा उत्पन्न करते हैं, जिसके लिए गहन नियामक सतर्कता की आवश्यकता होती है।
- ✓ **उभरते प्रौद्योगिकी जोखिम:** कृत्रिम बुद्धिमत्ता और डिजिटल प्लेटफॉर्म जैसी प्रौद्योगिकियों को तेजी से अपनाने के लिए संबंधित सुरक्षा और प्रणालीगत जोखिमों का समाधान करना आवश्यक है।

रिपोर्ट में आरबीआई द्वारा सुझाए गए उपाय (2024)

साइबर सुरक्षा बढ़ाना

साइबर धोखाधड़ी के बारे में लोगों को शिक्षित करने के लिए बड़े पैमाने पर निवारक जागरूकताअभियान चलाना।

धोखाधड़ी गतिविधियों में इस्तेमाल किए जाने वाले म्यूल खातों की पहचान करना और उन्हें समाप्त करने के प्रयासों को मजबूत करना।

वित्तीय मध्यस्थों को सुदृढ़ बनाना:

बैंकों, एनबीएफसी और अन्य वित्तीय संस्था ओं के लिए जोखिम प्रबंधन ढाँचे को बेहतर बना कर कि आघात सहनीयता बढ़ाना।

मैक्रोस्ट्रेसटेस्ट द्वारा मान्य पूँजी पर्याप्तता और तरलता मानदंडों का पालन सुनिश्चित करना।

नियामक सतर्कता एवं अनुकूलन शीलता:

परिचालनऔर प्रतिष्ठा संबंधी जोखिमों को कम करने के लिए निगरानी और विनियामक तंत्र को सुदृढ़ बनाना।

उभरते वित्तीय परिदृश्यों और उभरती तकनीकी चुनौतियों के प्रति अनुकूलन शीलता को बढ़ावा देना।

वित्तीय स्थिरता पर ध्यान देना:

उच्च सार्वजनिक ऋण और भू-राजनीतिक जोखिम जैसी मध्यम अवधि की कमजोरियों को संबोधित करके वित्तीय प्रणालियों में आधात सहनीयता बढ़ाना।

म्यूचुअल फंड और क्लियरिंग कॉरपोरेशन सहित सभी क्षेत्रों में प्रणाली गत स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए तनाव परीक्षण जारी रखना।

हालिया घटना क्रम और वित्तीय स्थिरता पर उनके प्रभाव:

उभरती प्रौद्योगिकियों के वित्तीय स्थिरता पर हालिया प्रभाव में परिचालन जोखिमों में वृद्धि, जैसे साइबर हमले और डेटा उल्लंघनों, के

साथ-साथ वित्तीय प्रणालियों में तेजी से डिजिटलीकरण शामिल है। इसके अतिरिक्त, विभिन्न क्षेत्रों में नियमन की कमी और उभरते बाजार के जोखिमों के कारण नियामक और पर्यवेक्षी चुनौतियाँ पैदा हुई हैं, जब कि भू-राजनीतिक तनाव और उच्च ब्याज दरों ने इन प्रणालियों में भेद्यता बढ़ा दी है। वैश्विक वित्तीय स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए, वित्तीय नियामकों और संस्थानों को सक्रिय रूप से निगरानी, मजबूत सहयोग और नियामक उपकरणों पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है, जो यह सुनिश्चित करते हैं कि प्रौद्योगिकी का विकास वित्तीय स्थिरता के साथ तालमेल बिठाए।

- **बढ़ता परिचालन जोखिम :** साइबर हमले और डेटा उल्लंघनों की बढ़ती जटिलता और आवृत्ति वित्तीय संस्थानों को परिचालन जोखिमों के प्रति अधिक संवेदनशील बना रही है। ये हमले वित्तीय नुकसान, प्रतिष्ठा को नुकसान और सेवा ओं में व्यवधान पैदा कर सकते हैं, जिससे वित्तीय स्थिरता कम हो सकती है।
- **डिजिटलीकरण की चुनौतियाँ:** वित्तीय क्षेत्र का तेजी से डिजिटलीकरण एक तरफ परिचालन दक्षता बढ़ाता है, वहीं यह साइबर हमलों और प्रणालियों के विफल होने का जोखिम भी बढ़ाता है, खास कर जब अंतर्निहित पुरानी प्रणालियाँ मौजूद हों।
- **नियामक और पर्यवेक्षी चुनौतियाँ:** उभरते बाजारों में वित्तीय सेवा प्रदाताओं का तेजी से विस्तार, विनियामक ढांचे और निरीक्षण की कमी से वित्तीय प्रणालियों को तनाव के प्रति अधिक संवेदनशील बनाता है।
- **भू-राजनीतिक तनाव और वित्तीय विखंडन:** हाल के भू-राजनीतिक तनावों, जैसे यूक्रेन में युद्ध, ने वैश्विक वित्तीय प्रणाली के विखंडन को गहरा कर दिया है। इससे पूंजीप्रवाह में व्यवधान आ सकता है, सीमा-पार भुगतान प्रभावित हो सकते हैं, और अंतरराष्ट्रीय जोखिम विविधीकरण के अवसर सीमित हो सकते हैं।
- **बढ़ती ब्याज दरें और ऋण स्थिरता:** उच्च मुद्रा स्फीति के बीच वैश्विक मौद्रिक स्थितियों में सख्ती, खास कर बढ़ती ब्याज दरों के कारण, उधारकर्ताओं की ऋण चुकाने की क्षमता को कम कर रही है। इस से ऋण चक्र धीमा हो रहा है और वैश्विक वित्तीय स्थिरता के लिए जोखिम पैदा हो रहा है।
- **मजबूत नियामक और निगरानी:** वित्तीय नियामकों को बढ़ते परिचालगत जोखिमों से निपटने और वित्तीय प्रणालियों में भेद्यता की पहचान करने के लिए अपनी निगरानी और प्रतिक्रिया को मजबूत करने की आवश्यकता है।
- **नीति निर्माण और अंतरराष्ट्रीय सहयोग:** भू-राजनीतिक तनाव से उत्पन्न जोखिमों को कम करने के लिए नीति-निर्माताओं को घरेलू नीतियों और राष्ट्रीय सुरक्षा प्राथमिकताओं को संतुलित करते हुए वैश्विक वित्तीय एकीकरण को बढ़ावा देने के लिए अंतरराष्ट्रीय सहयोग बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए।
- **प्रौद्योगिकी विकास और जोखिम प्रबंधन का तालमेल:** यह महत्वपूर्ण है कि प्रौद्योगिकी का विकास वित्तीय स्थिरता के साथ तालमेल बिठाए। नीति-निर्माताओं और वित्तीय संस्थानों को प्रौद्योगिकी के लाभों का उपयोग करने और संभावित जोखिमों को कम करने के बीच सही संतुलन बनाना होगा।

उभरते प्रौद्योगिक परिदृश्य में वित्तीय स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए डिजिटल परिवर्तन से उत्पन्न वित्तीय प्रणाली की गहनता, जोखिमों और भेद्यताओं को समझना महत्वपूर्ण है। वित्तीय सेवाओं के आधुनिकीकरण के लिए उभरती प्रौद्योगिकियाँ, जैसे फिनटेक, अधिक बुद्धिमान और चुस्त प्रणालियाँ प्रदान करती हैं, लेकिन वे नए जोखिम भी पैदा करती हैं। इसलिए ,वित्तीय स्थिरता बनाए रखने के लिए नियामक ढांचे को इन तकनीकी नवाचारों के साथ लगातार अनुकूलित करना, जोखिम प्रबंधन के लिए मजबूत उपकरण बनाना और अंतरराष्ट्रीय सहयोग को बढ़ाना आवश्यक है।

उभरते प्रौद्योगिकियों का वित्तीय स्थिरता पर प्रभाव

- **आधुनिकीकरण और दक्षता:** फिनटेक और अन्य डिजिटल प्रौद्योगिकियाँ वित्तीय प्रणाली को अधिक कुशल, सुरक्षित और उत्तरदायी बनाने में मदद करती हैं।
- **नए जोखिम और भेद्यताएँ:** वित्तीय बाजारों की गहनता और डिजिटल भुगतान प्रणालियों के प्रसार से नई प्रकार की भेद्यताएँ उत्पन्न होती हैं, जिन्हें प्रबंधित करने की आवश्यकता होती है।
- **नियामक चुनौतियाँ:** बदलती प्रौद्योगिकी के साथ तालमेल बिठाने के लिए मौजूदा नियामक ढांचे को लगातार अनुकूलित करने की आवश्यकता होती है,खास कर उभरती अर्थव्यवस्थाओं में वित्तीय स्थिरता के लिए रणनीतियाँ।
- **जोखिमों का प्रबंधन :** तकनीकी नवाचारों से उत्पन्न होने वाले जोखिमों की शीघ्र पहचान और प्रबंधन के लिए उपकरणों और प्रक्रियाओं को विकसित करना महत्वपूर्ण है।
- **नियामक अनुकूलन:** नियामक निकायों को उभरती प्रौद्योगिकियों के अनुकूल नीतियों का लगातार विकास करना चाहिए ताकि वित्तीय प्रणाली को सुरक्षित और लचीला बनाया जा सके।
- **अंतरराष्ट्रीय सहयोग:** वैश्विक वित्तीय स्थिरता बनाए रखने के लिए देशों के बीच सहयोग को बढ़ाना महत्वपूर्ण है, खासकर उन क्षेत्रों में जहाँ वित्तीय विखंडन (financial fragmentation) और पूंजी प्रवाह के उलटाव के जोखिम हैं।
- **ढांचे का सुदृढ़ीकरण:** गैर-बैंक वित्तीय मध्यस्थों से संबंधित जोखिमों को कम करने के लिए वृहद-विवेक पूर्ण उपायों को मजबूत करना और वित्तीय निगरानी को बढ़ाना आवश्यक है।

निष्कर्ष:

प्रौद्योगिकी परिदृश्य में वित्तीय स्थिरता एक महत्वपूर्ण कारक है जो व्यवसायों की सफलता और विकास को निर्धारित करती है।वित्तीय स्थिरता न केवल व्यवसायों को आर्थिक अनिश्चितता ओं से निपटने में मदद करती है, बल्कि उन्हें नए अवसरों का लाभ उठाने औ रप्रतिस्पर्धी बने रहने में भी सक्षम बनाती है।

भारतीय संस्कृति और विरासत

आकांक्षा पल्लव, सहायक प्रबंधक, क्षेत्रीय कार्यालय देहरादून

भारतीय संस्कृति और विरासत विश्व की प्राचीनतम और समृद्ध संस्कृतियों में से एक है। यह संस्कृति विविधता और एकता का अद्वितीय उदाहरण प्रस्तुत करती है, जिसमें विभिन्न धर्मों, भाषाओं और रीति-रिवाजों का समावेश है।

भारतीय संस्कृति और विरासत का महत्व:

सांस्कृतिक पहचान: भारतीय संस्कृति और विरासत देश की सांस्कृतिक पहचान को प्रदर्शित करती है। यह संस्कृति हमें हमारी जड़ों से जोड़ती है और हमें अपने पूर्वजों की परंपराओं और रीति-रिवाजों को समझने में मदद करती है ।

एकता: भारतीय संस्कृति और विरासत देश की एकता को बढ़ावा देती है।

विविधता: भारतीय संस्कृति और विरासत देश की विविधता को प्रदर्शित करती है।

पर्यटन: भारतीय संस्कृति और विरासत देश के पर्यटन उद्योग को बढ़ावा देती है।

एकता

भारतीय संस्कृति और विरासत देश की एकता को बढ़ावा देती है। यह संस्कृति विभिन्न धर्मों, भाषाओं और रीति-रिवाजों के लोगों को एक साथ लाती है और उन्हें एक साझा पहचान प्रदान करती है।भारतीय संस्कृति और एकता के बीच एक गहरा संबंध है। भारतीय संस्कृति विविधता में एकता का अद्वितीय उदाहरण प्रस्तुत करती है ।

भारतीय संस्कृति में एकता के तत्व:

साझा विरासत: भारत की सांस्कृतिक विरासत साझा है, जिसमें विभिन्न धर्मों और समुदायों का योगदान है जिसमें विभिन्न धर्मों, भाषाओं और रीति-रिवाजों का समावेश है।

सामाजिक एकता: भारतीय संस्कृति सामाजिक एकता को बढ़ावा देती है, जिसमें विभिन्न वर्गों और समुदायों के लोगों के बीच समानता और भाईचारे की भावना को बढ़ावा मिलता है।

राष्ट्रीय एकता: भारतीय संस्कृति राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देती है, जिसमें देश के विभिन्न हिस्सों के लोगों के बीच एकता और भाईचारे की भावना को बढ़ावा मिलता है।

भारतीय संस्कृति एकता के लाभ:-

सामाजिक स्थिरता: भारतीय संस्कृति एकता सामाजिक स्थिरता को बढ़ावा देती है, जिसमें विभिन्न वर्गों और समुदायों के लोगों के बीच सहजीविता और परस्पर प्रेम व सौहार्द की भावना को बढ़ावा मिलता है।

आर्थिक विकास: भारतीय संस्कृति एकता आर्थिक विकास को बढ़ावा देती है, जिसमें देश के विभिन्न हिस्सों के लोगों के बीच सहयोग और एकता की भावना को बल मिलता है।

विविधता

भारतीय संस्कृति और विरासत देश की विविधता को प्रदर्शित करती है। यह संस्कृति विभिन्न धर्मों, भाषाओं और रीति-रिवाजों का समावेश है, जो इसे विश्व की सबसे विविधता पूर्ण संस्कृतियों में से एक बनाती है।

संस्कृतिक विविधता: संस्कृति की विविधता हमें नए दृष्टिकोण और विचारों से परिचित करवाती है।

विविधता में एकता: विविधता में एकता की भावना को बढ़ावा देने से हम एक मजबूत और समृद्ध समाज का निर्माण कर सकते हैं।

विविधता और संस्कृति के लाभ

नए दृष्टिकोण और विचार: विविधता और संस्कृति हमें नए दृष्टिकोण और विचारों से परिचित कराती है।

सांस्कृतिक समृद्धि: विविधता और संस्कृति हमारे समाज को सांस्कृतिक रूप से समृद्ध बनाती हैं।

व्यक्तिगत विकास: विविधता और संस्कृति हमें व्यक्तिगत रूप से विकसित होने का अवसर प्रदान करती हैं।

पर्यटन

भारतीय संस्कृति और विरासत देश के पर्यटन उद्योग को बढ़ावा देती है। देश के ऐतिहासिक स्थल, स्मारक और सांस्कृतिक कार्यक्रम पर्यटकों को आकर्षित करते हैं और उन्हें भारतीय संस्कृति की समृद्धि का अनुभव करने का अवसर प्रदान करते हैं।

आर्थिक विकास

भारतीय संस्कृति और आर्थिक विकास के बीच एक गहरा संबंध है। प्राचीन भारतीय ग्रंथों में धन अर्जित करने को बुरा नहीं माना गया है, बल्कि इसे समाज के हित में उपयोग करने पर जोर दिया गया है। अर्थशास्त्र में नैतिकता का पालन होना चाहिए, जैसा कि कौटिल्य के अर्थशास्त्र और नारद की नारद स्मृति में कहा गया है।

भारतीय संस्कृति से आर्थिक विकास के तरीके

पर्यटन उद्योग: भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, विविध वास्तुकला, धार्मिक विविधता और ऐतिहासिक स्थल पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। इससे रोजगार के अवसर पैदा होते हैं और स्थानीय अर्थव्यवस्था को बढ़ावा मिलता है।

सांस्कृतिक और रचनात्मक उद्योग: भारत में सांस्कृतिक और रचनात्मक उद्योग जैसे कि संगीत, नृत्य, फ़ाइन-आर्ट्स, खाद्य संस्कृति, सिनेमा और सांस्कृतिक पर्यटन का विकास हो रहा है। इससे निर्यात बढ़ता है और रोजगार के अवसर पैदा होते हैं।

कला और शिल्प: भारत की पारंपरिक कला और शिल्प को बढ़ावा देने से रोजगार के अवसर पैदा होते हैं और स्थानीय अर्थव्यवस्था को बढ़ावा मिलता है।

धार्मिक पर्यटन: भारत के धार्मिक स्थलों का संरक्षण और प्रचार करने से पर्यटन उद्योग को बढ़ावा मिलता है और रोजगार के अवसर पैदा होते हैं।

निष्कर्ष

भारतीय संस्कृति और विरासत देश की सांस्कृतिक पहचान, एकता, विविधता और आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। हमें अपनी संस्कृति और विरासत का संरक्षण और प्रचार करना चाहिए, ताकि आने वाली पीढ़ियों को इसका लाभ मिल सके।

शब्द-शब्दांतर

शब्द	उच्चारण	उद्भव	अर्थ
Le temoin	luh tay-mwan	फ्रेंच	गवाह
Une facture	"oon fahk-toor	फ्रेंच	बिल
Geburtsdatum	geh-boortss-dah-toom	जर्मनी	जन्मतिथि
Cupidity	Kyoo-PID-i-tee	लैटिन	लालच
Cognition	Kog-NISH-uhn	लैटिन	समझ /ज्ञान
Un bilan	uhn bee-lahn	फ्रेंच	तुलन पत्र
Part and Parcel	PAART uhnd PAR-suhl	लैटिन	अनिवार्य हिस्सा
Per diem	pur DEE-em	लैटिन	प्रतिदिन
La Prime	lah preem	फ्रेंच	अधिलाभ
Danke	DAHN-Kuh	जर्मनी	धन्यवाद
Rapport annuel	rah-por ahn-noo-el	फ्रेंच	वार्षिक रिपोर्ट
Mayor	may-ur	मध्यकालीन अंग्रेजी	महा पालिकाध्यक्ष
Un benefice	uhn ben-eh-feess	फ्रेंच	लाभ
die Malerei	Dee mah-leh-RYE	जर्मनी	चित्रकारी
clandestine	klan-DES-tin	लैटिन	गुप्त /अवैध
Kapital	Kah-pee-tahl	जर्मनी	पूंजी
Nota bene (N.B.)	No-tah bee-nee	लैटिन	ध्यान देना
Pari Passu	Pah-ree pah-soo	लैटिन	समरूप
Einkommensquelle	EYE-n-kom-uns-kvell-uh	जर्मनी	आय का स्रोत
Echeance	Ay-shay-ance	फ्रेंच	नियत तारीख

संकलनकर्ता
पी राजशेखर
वरिष्ठ प्रबंधक
क्षेत्रीय कार्यालय बेंगलुरु

क्षेत्रीय कार्यालयों को नराकास से प्राप्त पुरस्कार

क्षेत्रीय कार्यालय चंडीगढ़ (प्रथम पुरस्कार)

क्षेत्रीय कार्यालय मंगलुरु (प्रथम पुरस्कार)

क्षेत्रीय कार्यालय बेंगलुरु (द्वितीय पुरस्कार)

क्षेत्रीय कार्यालय कोयंबत्तूर (द्वितीय पुरस्कार)

क्षेत्रीय कार्यालय देहरादून (द्वितीय पुरस्कार)

क्षेत्रीय कार्यालय गुवाहाटी (द्वितीय पुरस्कार)

क्षेत्रीय कार्यालय पुणे (द्वितीय पुरस्कार)

क्षेत्रीय कार्यालय सिलीगुड़ी (द्वितीय पुरस्कार)

क्षेत्रीय कार्यालय तिरुवनंतपुरम (द्वितीय पुरस्कार)

क्षेत्रीय कार्यालय वाराणसी (द्वितीय पुरस्कार)

क्षेत्रीय कार्यालय विशाखापट्टणम (तृतीय पुरस्कार)

क्षेत्रीय कार्यालय अहमदाबाद (प्रोत्साहन पुरस्कार)

उस काम का चयन कीजिए जिसे आप पसंद करते हैं, फिर आप पूरी ज़िंदगी एक दिन भी काम नहीं करेंगे । – कन्फ़्यूसियस

शाखाओं को नराकास से प्राप्त पुरस्कार

फिरोजपुर शाखा, लुधियाना क्षेत्र (प्रथम पुरस्कार)

कोल्लम शाखा, तिरुवनंतपुरम क्षेत्र (प्रथम पुरस्कार)

सूरत शाखा, बड़ौदा क्षेत्र (प्रथम पुरस्कार)

बेलगावी शाखा, गोवा क्षेत्र (द्वितीय पुरस्कार)

भरुच शाखा, बड़ौदा क्षेत्र (द्वितीय पुरस्कार)

गुरुग्राम शाखा, एनसीआर-दिल्ली क्षेत्र (द्वितीय पुरस्कार)

जालंधर शाखा, लुधियाना क्षेत्र (द्वितीय पुरस्कार)

कोटकपुरा शाखा, लुधियाना क्षेत्र (द्वितीय पुरस्कार)

सोलापुर शाखा, पुणे क्षेत्र (द्वितीय पुरस्कार)

बर्धमान शाखा, कोलकाता-2 क्षेत्र (तृतीय पुरस्कार)

दुलियाजान शाखा, गुवाहाटी क्षेत्र (तृतीय पुरस्कार)

तिरुवल्ला शाखा, तिरुवनंतपुरम क्षेत्र (तृतीय पुरस्कार)

इण्डियन ओवरसीज़ बैंक

राजभाषा कीर्ति पुरस्कार ग्रहण करते हुए हमारे एमडी व सीईओ श्री अजय कुमार श्रीवास्तव

बैंक द्वारा प्रकाशित भाषा ज्ञान क्षितिज पर हिंदी पुस्तक का विमोचन करते हुए केंद्रीय गृह मंत्री माननीय अमित शाह

जनवरी 2026 पौष माघ 2082

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि
				1	2	3
4	5	6	7	8	9	10
11	12	13	14	15	16	17
18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	31

फरवरी 2026 माघ फाल्गुन 2082

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि
1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28

मार्च 2026 फाल्गुन चैत्र 2083

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि
1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28
29	30	31				

अप्रैल 2026 चैत्र बैशाख 2083

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि
			1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30		

मई 2026 बैशाख ज्येष्ठ 2083

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि
31					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30

जून 2026 ज्येष्ठ आषाढ़ 2083

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि
	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28	29	30				

जुलाई 2026 चैत्र श्रावण 2083

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि
			1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30	31	

अगस्त 2026 श्रावण भाद्रपद 2083

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि
30	31					1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	29

सितम्बर 2026 भाद्रपद आश्विन 2083

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30			

अक्टूबर 2026 आश्विन कार्तिक 2083

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि
				1	2	3
4	5	6	7	8	9	10
11	12	13	14	15	16	17
18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	31

नवम्बर 2026 कार्तिक मार्गशीर्ष 2083

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि
1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28
29	30					

दिसम्बर 2026 मार्गशीर्ष पौष 2083

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30	31		

हंसी की फुलझड़ियाँ

वाइफ: सुनो, आज AI से पूछा कि तुम्हारा प्यार कितना गहरा है?
हसबैंड: क्या बोला?
वाइफ: बोला - "Error 404: Feelings not found!"

लड़की: तुम्हें मेरी सबसे ज्यादा क्या पसंद है?
लड़का: तुम्हारी मुस्कान!
लड़की: अच्छा? तो फिर मोबाइल चार्जर लौटा दो, मुस्कान के साथ!

आज मैंने पैरासिटामोल की गोली को ही बेवकूफ बना डाला..
बिना बुखार के ही गोली खा ली अब वह पूरे शरीर में बुखार ढूंढती फिरेगी।

आजकल चाय की दुकान पर कप इतने छोटे हो गए हैं कि
चाय पीने से ज़्यादा तो
मुँह खोलो... दो बूंद!" वाला एहसास आता है
लगता है दुकानदार नहीं,
पोलियो टीम वाले भैया खड़े हैं

पति - पत्नी पार्टी में...
पत्नी - आज तो स्टेज पर आग लगा देंगे।
पति - अरे मैं माचिस लाना भूल गया।
पत्नी- अरे मैं डांस की बात कर रही हूं।
पति - हां लेकिन तुम्हारे डांस करने पर लोग ही स्टेज को आग लगा देंगे ।

पत्नी: अगर मैं रूठ जाऊँ तो क्या करोगे?
पति: कुछ नहीं।
पत्नी: क्यों?
पति: क्योंकि अनुभव कहता है—शांत रहो, खाना खुद बन जाएगा!

ऑफिस में सबसे ज़्यादा इस्तेमाल होने वाले शब्द:
"देखते हैं"
मतलब: कभी नहीं!

चाय पीते हुए रिश्तेदार घरवालों से बोले –
आपकी लड़की कितनी अच्छी है Facebook यूज़ ही नहीं करती..
घरवाले – इनको भी ब्लॉक कर रखा है तुमने..!

बीएलओ को सबसे ज्यादा टेंशन लव मैरिज करके आई बहुएं दे रही हैं।
डिटेल्स मांगने पे बता रही हैं कि हमारी बोलचाल ही बंद है पापा से।

नरक में जाकर यमराज को बोल दिया !
ज्यादा ज्ञान ना दो तुम भी नरक में ही हो !
अब कढ़ाई में तेल गरम कर रहे है, शायद जलेबी खिलाएंगे !

बाराती बेहोश होते होते बचे...
जब विदाई के समय रोते हुए लड़की ने दूल्हे से कहा...
आपके कारण मेरे घरवाले रो रहे हैं...
अब मैं आपको पूरा जीवन रुलाऊंगी

चमन- डॉक्टर साहब क्या आप मेरी बीमारी का पता लगा सकते हैं।
डॉक्टर- हाँ! तुम्हारी आँखें बहुत कमजोर हैं।
चमन- इतनी जल्दी आपको कैसे पता चला ?
डॉक्टर- तुमने बाहर बोर्ड पर नहीं पढ़ा कि मैं जानवरों का डॉक्टर हूँ।

एक महीने से हीटर चला रहा था
आज बिजली का बिल देखा तब से
ठंड लगनी ही बंद हो गई

टीचर: अगर 50 आदमियों को खिलाने के लिए 5 किलो दाल लगती है
तो 75 आदमियों को खिलाने के लिए कितनी दाल लगेगी
बंटी: मैडम जी, दाल उतनी ही लगेगी बस पानी थोड़ा और डालना पड़ेगा।

एक बहुत ही ताजा रिसर्च से यह
पता चला है कि महिलायें अपने बच्चों को तेज आवाज में इसलिए डांटती हैं
ताकि पतियों में खौफ बना रहे"

वकील: तलाक करवाने के 5000 रूपये लगेंगे !
पति: पागल हो क्या? पंडित जी ने 1,100 रूपये में शादी करवाई थी !
वकील: देख लिया न सस्ते काम का नतीजा

तमिल और हिंदी: दो धड़कनें, एक भारत

अभिषेक आर्या, मुख्य प्रबन्धक, जोखिम प्रबंधन विभाग, केंद्रीय कार्यालय

प्रस्तावना

भारत की आत्मा उसकी विविधता में बसती है। यहाँ नदियाँ अलग-अलग दिशाओं से बहती हैं, ऋतुएँ अपने-अपने स्वरूप में खिलती हैं, और भाषाएँ अपनी-अपनी धुन में गाती हैं। इस विविधता के बीच एक गहरी एकता है, जो भारत को अद्वितीय बनाती है। हिंदी और तमिल इस एकता के दो ऐसे स्तंभ हैं, जो उत्तर और दक्षिण भारत की सांस्कृतिक धड़कनों का प्रतिनिधित्व करते हैं। एक ओर हिंदी है, जो गंगा-यमुना की धरती पर खिली और जनमानस की भाषा बनकर भारत की आत्मा का संगीत बनी। दूसरी ओर तमिल है, जिसकी जड़ें हजारों वर्षों की सांस्कृतिक परंपरा में गहरी धँसी हुई हैं और जिसने अपने संगम साहित्य से लेकर आधुनिकता तक विश्व को चमत्कृत किया है।

हिंदी और तमिल दोनों भाषाएँ न केवल भाषायी दृष्टि से बल्कि सांस्कृतिक और साहित्यिक दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। दोनों का मिलन भारत की विविधता में एकता की सबसे सुंदर तस्वीर पेश करता है। यह लेख इन्हीं दो भाषाओं की समानताओं और असमानताओं को समझने का प्रयास है, ताकि हम यह जान सकें कि हमारी भाषाएँ भले ही अलग-अलग दिशा में जन्मी हों, पर उनकी आत्मा एक ही है - भारत की आत्मा।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

भारत की भाषाओं का इतिहास अत्यंत पुराना और समृद्ध है। हिंदी और तमिल दोनों इस इतिहास की दो महत्त्वपूर्ण धाराएँ हैं।

हिंदी की ऐतिहासिक यात्रा

हिंदी का जन्म संस्कृत से हुआ। संस्कृत से प्राकृत और अपभ्रंश होते हुए हिंदी विकसित हुई। मध्यकालीन भारत में जब अवधी, ब्रज, बुंदेली जैसी बोलियाँ प्रमुख थीं, तभी धीरे-धीरे खड़ी बोली का उद्भव हुआ, जिसने आधुनिक हिंदी को जन्म दिया। कबीर, तुलसी और सूर ने जिस भाषा में अपनी रचनाएँ रचीं, वह हिंदी के आरंभिक स्वरूप की जीवंत झलक है।

18वीं और 19वीं शताब्दी में हिंदी साहित्य ने आधुनिकता की ओर कदम बढ़ाए। भारतेंदु हरिश्चंद्र ने हिंदी को नवजागरण की भाषा बनाया। प्रेमचंद ने इसे किसान और आम जनता की आवाज़ दी। आज हिंदी विश्व में तीसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है, जिसे करोड़ों लोग बोलते और समझते हैं।

तमिल की ऐतिहासिक यात्रा

तमिल का इतिहास और भी प्राचीन है। संगम युग, जिसे लगभग दो हजार वर्ष पूर्व माना जाता है, इसका साहित्यिक आधार है। तमिल का गर्व यह है कि यह भाषा आज भी अपनी प्राचीनता और मौलिकता को बनाए हुए है।

तमिल को विश्व की सबसे पुरानी जीवित भाषा कहा जाता है। तिरुक्कुरल जैसे ग्रंथ न केवल साहित्यिक बल्कि नैतिक और दार्शनिक दृष्टि से भी अमूल्य हैं। संगम साहित्य में प्रकृति, प्रेम और समाज के गहरे चित्रण मिलते हैं। आधुनिक युग में सुब्रमण्यम भारती जैसे कवियों ने तमिल को स्वतंत्रता और क्रांति का स्वर भी दिया।

समानताएँ और अंतर

हिंदी और तमिल की ऐतिहासिक यात्रा अलग-अलग दिशा से चली है। हिंदी ने संस्कृत और मध्यकालीन बोलियों से आकार लिया, जबकि तमिल ने अपने स्वतंत्र शास्त्रीय स्वरूप को बनाए रखा। फिर भी दोनों भाषाओं में एक समानता यह है कि दोनों ने अपने-अपने समय में समाज की आत्मा को आवाज़ दी। हिंदी ने उत्तर भारत के किसान, साधु और आमजन का स्वरूप गढ़ा तो तमिल ने दक्षिण भारत के साहित्य, दर्शन और संस्कृति को जीवित रखा।

व्याकरण व लिपि

भाषा की आत्मा उसके व्याकरण और लिपि में बसती है।

हिंदी का व्याकरण और लिपि

हिंदी देवनागरी लिपि में लिखी जाती है, जो अत्यंत वैज्ञानिक मानी जाती है। इसमें स्वर (अ, आ, इ, ई...) और व्यंजन (क, ख, ग...) का संतुलित मेल है। देवनागरी की विशेषता यह है कि इसका उच्चारण और लेखन लगभग समान होते हैं।

हिंदी व्याकरण अपेक्षाकृत लचीला है। इसमें वाक्य संरचना 'कर्ता + क्रिया + कर्म' पर आधारित है, किंतु शब्द क्रम बदलने पर भी अर्थ अक्सर स्पष्ट रहता है। हिंदी में संज्ञा, विशेषण और क्रिया रूप में लिंग और वचन का समन्वय दिखता है।

तमिल का व्याकरण और लिपि

तमिल की लिपि ब्राह्मी से विकसित हुई है। इसमें 12 स्वर और 18 व्यंजन हैं, और इनसे मिलकर 247 ध्वनियाँ बनती हैं। तमिल भाषा

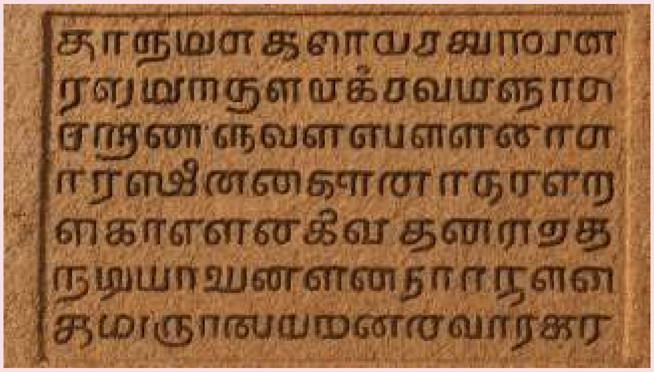

की व्याकरणिक संरचना 'अग्लूटिनेटिव' है, यानी छोटे-छोटे शब्दांश मिलकर लंबे और जटिल शब्द बनाते हैं।

तमिल वाक्य संरचना अधिक सुसंगठित होती है। इसमें क्रिया सामान्यतः वाक्य के अंत में आती है। यह संरचना हिंदी से भिन्न है, पर इससे भाषा की सौंदर्यता और अनुशासन झलकता है।

समानता और अंतर

दोनों भाषाओं की लिपियाँ भिन्न हैं। हिंदी देवनागरी में है तो तमिल अपनी विशिष्ट लिपि में। हिंदी का व्याकरण सरल और लचीला है, जबकि तमिल का अनुशासित और गहन। किंतु दोनों की ध्वन्यात्मकता, संगीतात्मकता और भावनाओं की अभिव्यक्ति अद्भुत रूप से समान है।

"भाषाएँ भिन्न हो सकती हैं, किंतु जब वे हृदय की ध्वनि बनती हैं, तो उनमें एक ही संगीत गूँजता है।"

साहित्यिक धारा

भारत की आत्मा को यदि शब्दों में देखना हो तो हमें उसके साहित्य में झाँकना चाहिए। हिंदी और तमिल साहित्य दोनों ही अपने-अपने युगों में भारतीय चेतना के मार्गदर्शक बने।

हिंदी साहित्य

हिंदी साहित्य को मोटे तौर पर तीन कालों में बाँटा गया है:

1. **आदिकाल** – वीरगाथाओं का काल, जहाँ रणभूमि और शौर्य का वर्णन हुआ।

2. **भक्तिकाल** – कबीर, तुलसी, सूर और मीरा ने भक्ति को सहज भाषा में गाया। यह काल हिंदी साहित्य का स्वर्ण युग है।

3. **रीतिकाल और आधुनिक काल** – यहाँ प्रेम, श्रृंगार और फिर सामाजिक यथार्थ का स्वर प्रबल हुआ। भारतेंदु से लेकर प्रेमचंद और प्रगतिशील कवियों तक हिंदी साहित्य ने समाज के हर पहलू को आवाज़ दी।

तमिल साहित्य

तमिल साहित्य का इतिहास और भी लंबा है।

1. **संगम साहित्य** – प्रेम, युद्ध, प्रकृति और समाज का अद्भुत चित्रण।

2. **भक्ति साहित्य** – आलवार और नयनार संतों ने ईश्वर के प्रति अपनी भावनाएँ गीतों में व्यक्त कीं।

3. **आधुनिक साहित्य** – सुब्रमण्यम भारती जैसे कवियों ने स्वतंत्रता संग्राम में तमिल को जनता का स्वर बनाया।

समानता और अंतर

दोनों साहित्यिक धाराएँ भिन्न होते हुए भी समान मूल्यों को व्यक्त करती हैं — भक्ति, प्रेम, करुणा और मानवता। हिंदी के तुलसीदास और तमिल के तिरुवल्लुवर दोनों ने समाज को धर्म और नैतिकता का मार्ग दिखाया।

"साहित्य केवल शब्द नहीं, वह आत्मा का स्पंदन है। हिंदी और तमिल साहित्य दो अलग नदी-धाराओं की तरह हैं, जो अंततः एक ही समुद्र — भारतीय संस्कृति — में मिलती हैं।"

सांस्कृतिक प्रभाव

भाषाएँ केवल व्याकरण या साहित्य तक सीमित नहीं होतीं। वे संस्कृति का जीवंत रूप होती हैं।

हिंदी का सांस्कृतिक प्रभाव

हिंदी आज न केवल उत्तर भारत की प्रमुख भाषा है, बल्कि यह फिल्मों, मीडिया और साहित्य के माध्यम से पूरे देश की साझा भाषा भी बन चुकी है। हिंदी फिल्मों के गीत, कवियों की पंक्तियाँ और लोकगीत हर भारतीय के हृदय को छूते हैं।

तमिल का सांस्कृतिक प्रभाव

तमिल ने अपनी सांस्कृतिक धारा को सदियों तक जीवित रखा है। मंदिरों की वास्तुकला, भरतनाट्यम नृत्य, संगम कविताएँ और लोकगीत आज भी तमिल संस्कृति की पहचान हैं। तमिल भाषा केवल बोलचाल का माध्यम नहीं, बल्कि एक सांस्कृतिक धरोहर है।

साझा संस्कृति का बोध

हिंदी और तमिल दोनों संस्कृत से प्रभावित हैं, किंतु दोनों ने अपनी मौलिकता को बनाए रखा है। हिंदी व्यापकता की प्रतीक है तो तमिल प्राचीनता की। हिंदी जनमानस की भाषा है तो तमिल गहन विद्वता और सांस्कृतिक गौरव की। पर दोनों का ध्येय एक ही है — भारतीय संस्कृति को जीवित रखना।

"भाषाओं की विविधता भारत की सबसे बड़ी ताकत है। हिंदी और तमिल का मिलन यही सिखाता है कि अलग-अलग स्वर मिलकर भी एक ही राग बना सकते हैं।"

निष्कर्ष

तमिल और हिंदी भले ही अलग परिवारों से आती हों, परंतु उनकी आत्मा भारतीय है। एक ओर तमिल हमें अपनी प्राचीन जड़ों की याद दिलाती है, दूसरी ओर हिंदी हमें आधुनिकता और व्यापकता का बोध कराती है।

भाषाओं में अंतर होना स्वाभाविक है। किंतु यह अंतर विभाजन का नहीं, बल्कि सौंदर्य का प्रतीक है। जैसे इंद्रधनुष में हर रंग अलग होते हुए भी एक ही आकाश को सजाता है, वैसे ही हिंदी और तमिल भारत की सांस्कृतिक इंद्रधनुष के दो रंग हैं।

आज आवश्यकता है कि हम इन भाषाओं को केवल क्षेत्रीय दृष्टि से न देखें, बल्कि राष्ट्रीय धरोहर मानें। हिंदी और तमिल मिलकर हमें यह सिखाती हैं कि भारत की असली पहचान उसकी विविधता में एकता है।

वीबी–जी राम जी विधेयक - 2025: ग्रामीण विकास का संवैधानिक और आर्थिक खाका

नेहा रंजन, प्रबन्धक, क्षेत्रीय कार्यालय भोपाल

भारत की ग्रामीण अर्थव्यवस्था और सामाजिक सुरक्षा के ढांचे में एक युगांतरकारी परिवर्तन का सूत्रपात करते हुए, भारत के राष्ट्रपति ने विकसित भारत-रोज़गार और आजीविका के लिए गारंटी मिशन (ग्रामीण) : वीबी–जी राम जी (विकसित भारत-जी राम जी) विधेयक, 2025 को अपनी औपचारिक स्वीकृति प्रदान कर दी है । यह अधिनियम न केवल दो दशक पुराने महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोज़गार गारंटी अधिनियम (मनरेगा), 2005 को प्रतिस्थापित करता है, बल्कि भारत की ग्रामीण विकास नीति को विकसित भारत@2047 के व्यापक विज़न के साथ समेकित करने का एक महत्वाकांक्षी प्रयास है ।

ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य और नीतिगत विकास का विकासक्रम

स्वतंत्रता के बाद से, भारत में ग्रामीण विकास की नीतियों का केंद्रबिन्दु निर्धनता कम करने, खेती की पैदावार को बेहतर बनाने और अधिशेष तथा कम काम वाले ग्रामीण मज़दूरों के लिए रोजगार सृजन रहा है। स्वतंत्रता के पश्चात के प्रारंभिक दशकों में, नीतियां मुख्य रूप से कृषि उत्पादकता बढ़ाने और भूमिहीन श्रमिकों को तात्कालिक राहत प्रदान करने पर केंद्रित थीं । 1960 के दशक के ग्रामीण श्रमबल कार्यक्रम और 1971 की ग्रामीण रोज़गार के लिए क्रैश स्कीम (Crash Scheme for Rural Employment) ने इस दिशा में प्रारंभिक नींव रखी थी । 1980 के दशक में नीतिगत दृष्टिकोण अधिक संरचित हुआ, जिसके परिणामस्वरूप राष्ट्रीय ग्रामीण रोज़गार कार्यक्रम (NREP) और ग्रामीण भूमिहीन रोज़गार गारंटी कार्यक्रम (आरएलईजीपी) जैसे महत्वपूर्ण कार्यक्रम शुरू किए गए ।

1993 में इन कार्यक्रमों को जवाहर रोज़गार योजना (जेआरवाई) में विलय कर दिया गया, जो बाद में 1999 में सम्पूर्ण ग्रामीण रोज़गार योजना (एसजीआरवाई) के रूप में संघटित हुई । इन सभी योजनाओं का उद्देश्य ग्रामीण बुनियादी ढांचे को सुदृढ़ करना और मौसमी बेरोज़गारी के दौरान आय का स्रोत प्रदान करना था । हालांकि, यह एक वास्तविक वैधानिक परिवर्तन 1977 के महाराष्ट्र रोज़गार गारंटी अधिनियम से प्रेरित था, जिसने पहली बार काम करने के वैधानिक अधिकार की अवधारणा को जन्म दिया । इसी ऐतिहासिक यात्रा की परिणति 2005 में महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोज़गार गारंटी अधिनियम (मनरेगा) के रूप में हुई, जिसने मांग-आधारित रोज़गार की कानूनी गारंटी प्रदान कर दुनिया भर का ध्यान आकर्षित किया ।

ग्रामीण रोज़गार लगभग दो दशकों से भारत की सामाजिक सुरक्षा संरचना की आधारशिला रही है। 2005 में कार्यान्वित होने के बाद से, महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम (मनरेगा) ने मज़दूरों को रोजगार प्रदान करने, ग्रामीण आय को स्थिर करने और मूलभूत अवसंरचना निर्माण में अहम भूमिका निभाई है। हालांकि, समय के साथ, ग्रामीण भारत की संरचना और लक्ष्य अत्यधिक बदल गए हैं। बढ़ती आय, बढ़ी हुई कनेक्टिविटी, व्यापक स्तर पर डिजिटल पहुंच और अलग-अलग तरह की आजीविका ने ग्रामीण रोज़गार की आवश्यकताओं की प्रकृति बदल दी है।

इस पृष्ठभूमि में, दिसंबर 2025 में भारत की राष्ट्रपति द्वारा विकसित भारत–गारंटी फॉर रोज़गार एंड आजीविका मिशन (ग्रामीण) विधेयक, 2025 को स्वीकृति प्रदान की गई है। यह कानून मनरेगा में व्यापक वैधानिक बदलाव का प्रतिनिधित्व करता है, जो ग्रामीण रोज़गार को विकसित भारत 2047 के दीर्घकालिक विजन के साथ संयोजित करता है तथा जवाबदेही, बुनियादी ढांचे के परिणामों और आय सुरक्षा को सुदृढ़ करता है।

अधिनियम की प्रमुख विशेषताएं

रोज़गार की वैधानिक गारंटी में वृद्धि (धारा 5(1))

अधिनियम की धारा 5(1) के तहत, प्रत्येक ग्रामीण परिवार को अब प्रति वित्तीय वर्ष कम से कम 125 दिनों के मज़दूरी रोज़गार की वैधानिक गारंटी प्रदान की गई है । यह प्रावधान पूर्ववर्ती 100 दिनों की सीमा को 25 प्रतिशत तक बढ़ाकर ग्रामीण परिवारों की आय स्थिरता को एक नया आयाम प्रदान करता है । यह वृद्धि विशेष रूप से उन परिवारों के लिए महत्वपूर्ण है जो कृषि के अतिरिक्त आय के लिए पूरी तरह से अकुशल शारीरिक श्रम पर निर्भर हैं ।

कृषि और ग्रामीण श्रम के बीच संतुलन (धारा 6)

अधिनियम का एक अत्यंत नवीन और व्यावहारिक प्रावधान धारा 6 के तहत 'कृषि-विराम' (Agri-Pause) की व्यवस्था है । राज्यों को यह अधिकार दिया गया है कि वे बुवाई और कटाई के चरम सीजन के दौरान एक वित्तीय वर्ष में कुल 60 दिनों की समेकित विराम अवधि अधिसूचित कर सकते हैं । इस प्रावधान का उद्देश्य कृषि कार्यों के लिए श्रम की उपलब्धता सुनिश्चित करना और ग्रामीण क्षेत्रों में मज़दूरी की कृत्रिम मुद्रास्फीति को रोकना है । यह सुनिश्चित किया गया है कि श्रमिकों के 125 दिनों के अधिकार में कोई कटौती नहीं होगी और उन्हें शेष 305 दिनों की अवधि में यह रोज़गार उपलब्ध कराया जाएगा ।

समय पर मज़दूरी भुगतान

यह अधिनियम मज़दूरी का भुगतान साप्ताहिक आधार पर अथवा

किसी भी स्थिति में कार्य की समाप्ति के पंद्रह दिनों के भीतर किए जाने को अनिवार्य करता है (धारा 5(3))। निर्धारित अवधि से अधिक विलंब होने की स्थिति में, अनुसूची–II में उल्लिखित प्रावधानों के अनुसार विलंब मुआवज़ा देय होगा, जिससे मज़दूरी सुरक्षा को सुदृढ़ता मिलती है और श्रमिकों को भुगतान में होने वाले विलंब से संरक्षण प्राप्त होता है।

टिकाऊ और उपयोगी ग्रामीण अवसंरचना से जुड़ा रोजगार(धारा 4(2), अनुसूची–I के साथ पठित):

इस अधिनियम के अंतर्गत मज़दूरी रोज़गार को चार प्राथमिक विषयगत क्षेत्रों में टिकाऊ सार्वजनिक परिसम्पत्तियों के सृजन के साथ जोड़ा गया है :

1. **जल सुरक्षा एवं जल से संबंधित कार्य:** जल संचयन, भूजल पुनर्भरण और सिंचाई संरचनाओं का निर्माण।
2. **मुख्य ग्रामीण अवसंरचना:** ग्रामीण सड़कें, कनेक्टिविटी और सार्वजनिक भवनों का निर्माण ।
3. **आजीविका से संबंधित अवसंरचना:** भंडारण, बाज़ार, और कौशल विकास केंद्र ।
4. **प्रतिकूल मौसमीय घटनाओं के प्रभाव को कम करने वाले कार्य:** बाढ़ नियंत्रण, मृदा संरक्षण और चरम मौसमी घटनाओं के प्रभाव को कम करने वाले कार्य ।

केंद्रीय प्रायोजित योजना (सीएसएस) संरचना

यह अधिनियम एक केन्द्रीय प्रायोजित योजना के रूप में लागू किया जाएगा, जिसे राज्यों द्वारा अधिनियम के प्रावधानों के अनुसार अधिसूचित और क्रियान्वित किया जाएगा। व्यय-साझेदारी का पैटर्न केंद्र और राज्यों के बीच 60:40, पूर्वोत्तर एवं हिमालयी राज्यों के लिए 90:10, तथा विधानसभा रहित केंद्र शासित प्रदेशों के लिए 100 प्रतिशत केंद्रीय वित्तपोषण का है। निधि राज्यवार मानकीकृत आवंटनों के माध्यम से प्रदान की जाएगी, जो नियमों में निर्दिष्ट वस्तुनिष्ठ मानकों पर आधारित होगी (धाराएँ 4(5) एवं 22(4)), जिससे पूर्वानुमेयता, वित्तीय अनुशासन और सुदृढ़ योजना निर्माण सुनिश्चित होगा, साथ ही रोज़गार तथा बेरोज़गारी भत्ते से संबंधित वैधानिक अधिकारों का पूर्ण संरक्षण बना रहेगा।

प्रशासनिक व्यय में वृद्धि

प्रशासनिक व्यय की अधिकतम सीमा को 6 प्रतिशत से बढ़ाकर 9 प्रतिशत कर दिया गया है, जिससे बेहतर मानव संसाधन उपलब्धता, प्रशिक्षण, तकनीकी क्षमता तथा मैदानी स्तर पर सहायता सुदृढ़ होगी । यह अतिरिक्त निधि स्टाफ की भर्ती, प्रशिक्षण और तकनीकी क्षमता के विकास के लिए समर्पित की जाएगी, जिससे योजना का ग्रामीण स्तर पर क्रियान्वयन अधिक पेशेवर हो सके ।

बेरोज़गारी भत्ता

यह अधिनियम, बेरोजगारी भत्ते के संबंध में पहले के अयोग्य ठहराए (निरर्हता) जाने वाले प्रावधानों को हटाता है और इसे एक अर्थपूर्ण वैधानिक सुरक्षा उपाय के रूप में पुनर्स्थापित करता है। जहां निर्धारित अवधि के भीतर रोज़गार उपलब्ध नहीं कराया जाता है, वहां पंद्रह दिनों के पश्चात बेरोज़गारी भत्ता देय होगा।

विकसित ग्राम पंचायत योजनाओं (VGPP)के माध्यम से बॉटम-अप योजना:

अधिनियम का एक युगांतरकारी पहलू 'विकसित ग्राम पंचायत योजनाओं' (VGPP) का पीएम गति शक्ति नेशनल मास्टर प्लान के साथ एकीकरण है । यह अधिनियम स्थानिक प्रौद्योगिकी का उपयोग करते हुए विकसित ग्राम पंचायत योजनाओं के निर्माण को अनिवार्य करता है, जिन्हें ब्लॉक, ज़िला और राज्य स्तर पर समेकित किया जाता है तथा समन्वित अवसंरचना योजना के लिये पीएम गति शक्ति के साथ एकीकृत किया जाता है। पीएम गति शक्ति एक एकीकृत बुनियादी ढांचा योजना मंच है जिसमें 1400 से अधिक डेटा परतें शामिल हैं । ग्राम पंचायत स्तर पर बनाई गई योजनाओं को इस मंच के साथ जोड़कर, सरकार यह सुनिश्चित करना चाहती है कि ग्रामीण कार्य केवल अलगाव में न हों, बल्कि वे राष्ट्रीय आर्थिक गलियारों और बुनियादी ढांचा प्राथमिकताओं के साथ तालमेल बिठा सकें ।

डिजिटलीकरण और तकनीकी नवाचार

विकसित भारत-जी राम जी अधिनियम का एक प्रमुख स्तंभ डिजिटल सार्वजनिक बुनियादी ढांचे (DPI) का उपयोग करके भ्रष्टाचार को समाप्त करना और पारदर्शिता लाना है । यह अधिनियम तकनीक को केवल एक साधन नहीं, बल्कि कार्यान्वयन के एक कानूनी स्तंभ के रूप में स्थापित करता है ।

तकनीकी निगरानी के प्रमुख घटक: अधिनियम निम्नलिखित तकनीकी उपकरणों के उपयोग को अनिवार्य बनाता है :

* **बायोमेट्रिक प्रमाणीकरण:** श्रमिकों की उपस्थिति और मज़दूरी भुगतान की सटीकता सुनिश्चित करने के लिए।
* **स्थानिक प्रौद्योगिकी आधारित योजना:** परिसंपत्तियों के चयन और उनकी भौतिक प्रगति की निगरानी के लिए ।
* **एआई-आधारित धोखाधड़ी पहचान:** मास्टर रोल और भुगतान डेटा में विसंगतियों का पता लगाने के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग ।
* **जीपीएस और रीयल-टाइम डैशबोर्ड:** प्रत्येक परियोजना की अद्यतन स्थिति को सार्वजनिक रूप से प्रदर्शित करने के लिए ।

विकसित भारत-रोज़गार और आजीविका के लिए गारंटी मिशन (ग्रामीण) के अपेक्षित लाभ

श्रम बाज़ार का युक्तिकरण: आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण (पीएलएफ़एस 2022–23) के अनुसार, लगभग 45% ग्रामीण श्रमिक कम उत्पादकता वाली कृषि में स्व-रोज़गार में लगे हुए हैं, जहाँ प्रच्छन्न बेरोज़गारी बनी हुई है। विकसित भारत-रोज़गार और आजीविका के लिए गारंटी मिशन (ग्रामीण) विधेयक, 2025 कृषि उत्पादकता को बढ़ावा देते हुए गैर-कृषि रोज़गार के साथ संतुलन स्थापित करने का समर्थन करता है।

राजकोषीय पूर्वानुमेयता और बेहतर योजना: बजट-सीमित, आपूर्ति-प्रेरित ढाँचा मनेरगा के अंतर्गत देखी गई खुले-आम राजकोषीय देनदारियों को सीमित करता है।

यह प्रतिक्रियात्मक व्यय के बजाय कार्यों, निधियों और परिसंपत्तियों की अग्रिम योजना बनाने में सक्षम बनाता है।

परिसंपत्तियों की गुणवत्ता और उत्पादकता में सुधार: संकट-प्रेरित रोज़गार से हटकर वीजीपीपी के माध्यम से योजनाबद्ध परिसंपत्ति सृजन की ओर बदलाव तथा पीएम गति शक्ति के साथ एकीकरण, ग्रामीण परिसंपत्तियों की संरचनात्मक मज़बूती, अभिसरण और दीर्घकालिक आर्थिक मूल्य में सुधार कर सकता है।

राज्य स्वामित्व और जवाबदेही में वृद्धि: राज्यों के अधिक वित्तीय योगदान से बेहतर पर्यवेक्षण, समयबद्ध कार्य पूर्णता और गुणवत्ता नियंत्रण को प्रोत्साहन मिल सकता है।

यह मुख्यतः केंद्र-वित्तपोषित, खुले-आम योजनाओं से जुड़ी नैतिक जोखिम को भी कम कर सकता है।

प्रौद्योगिकी के माध्यम से प्रशासनिक दक्षता: स्थानिक योजना, डिजिटल निगरानी और एआइ-आधारित प्रणालियों के उपयोग से फर्जी लाभार्थियों तथा रिसाव/लीकेज को कम किया जा सकता है, जिससे समावेशी क्रियान्वयन की स्थिति में पारदर्शिता और प्रशासनिक दक्षता में सुधार होगा।

कार्यान्वयन चुनौतियां और भविष्य की राह

अधिनियम की सफलता पूरी तरह से इसके कार्यान्वयन की दक्षता और केंद्र-राज्य समन्वय पर निर्भर करेगी।

- ★ **राज्यों की वित्तीय तैयारी:** राज्यों को अपने बजट का एक बड़ा हिस्सा (40%) इस मिशन के लिए आवंटित करना होगा। यह देखना महत्वपूर्ण होगा कि क्या आर्थिक रूप से कमज़ोर राज्य इसे प्रभावी ढंग से लागू कर पाएंगे।
- ★ **संवेदीकरण और प्रशिक्षण:** 9 प्रतिशत प्रशासनिक व्यय का उपयोग केवल कागजों पर नहीं, बल्कि वास्तव में क्षेत्र स्तर के कर्मचारियों के प्रशिक्षण और संवेदीकरण के लिए किया जाना चाहिए।
- ★ **तकनीकी लचीलापन:** अधिनियम में यह प्रावधान होना चाहिए कि तकनीकी विफलता की स्थिति में श्रमिकों को किए जाने वाले भुगतान पर कोई नकारात्मक असर न हो और ऑफ़लाइन उपस्थिति एवं भुगतान की वैकल्पिक व्यवस्था मज़बूत रहे।
- ★ **कृषि संतुलन:** 'कृषि-विराम' की अवधि का निर्धारण स्थानीय ग्राम सभाओं और कृषि कैलेंडर के अनुसार होना चाहिए।

निष्कर्ष: विकसित भारत@2047 की ओर एक कदम

विकसित भारत - रोज़गार और आजीविका के लिए गारंटी मिशन (ग्रामीण) अधिनियम, 2025 का पारित होना भारत की ग्रामीण रोज़गार गारंटी व्यवस्था के एक महत्वपूर्ण बदलाव का प्रतिनिधित्व करता है। विकसित भारत-जी राम जी अधिनियम, 2025 भारत की ग्रामीण नीति में एक साहसिक और दूरदर्शी सुधार का प्रतिनिधित्व करता है। यह अधिनियम केवल बेरोज़गारी के लिए एक राहत कार्यक्रम नहीं है, बल्कि ग्रामीण क्षेत्रों को आर्थिक विकास के इंजन में बदलाव का एक खाका है। 125 दिनों की रोज़गार गारंटी, कृषि के साथ संतुलन, और डिजिटल पारदर्शिता के माध्यम से यह अधिनियम ग्रामीण परिवारों को सम्मान और स्थिरता प्रदान करने का वादा करता है।

यद्यपि राजकोषीय बोझ और अधिकारों के संकुचन जैसी चिंताएं वास्तविक हैं, लेकिन यदि इसे 'सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास, सबका प्रयास' की भावना के साथ लागू किया जाता है, तो यह अधिनियम ग्रामीण भारत की नींव को आत्मनिर्भर और समृद्ध बनाने में सफल होगा। 2047 तक एक विकसित राष्ट्र बनने की भारत की यात्रा अनिवार्य रूप से उसके गाँवों के विकास से होकर गुज़रती है, और वीबी-जी राम जी विधेयक उस यात्रा का एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है।

अधिनियम का दीर्घकालिक प्रभाव केवल सृजित किए गए 'मैन-डेज़' (Man-days) में नहीं, बल्कि उन टिकाऊ परिसंपत्तियों में मापा जाएगा जो आने वाली पीढ़ियों के लिए ग्रामीण अर्थव्यवस्था को शक्ति प्रदान करेंगी। जल सुरक्षा, आधुनिक बुनियादी ढांचा और डिजिटल एकीकरण के माध्यम से यह अधिनियम ग्रामीण भारत को 21वीं सदी की वैश्विक चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार करता है। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि विकसित भारत-जी राम जी विधेयक 2025 न केवल ग्रामीण रोज़गार की नई परिभाषा लिखता है, बल्कि भारत के समावेशी भविष्य की नई इबारत भी तैयार करता है।

बैंकिंग में जोखिम प्रबंधन

कुंदन कुमार, वरिष्ठ प्रबंधक, क्षेत्रीय कार्यालय एनसीआर-दिल्ली

अर्थव्यवस्थाओं को सुचारु रूप से चलाने में बैंकों की भूमिका दशकों से अहम रही है। हालांकि, हाल के वर्षों में कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा, जिनमें ऋण संकट, वैश्विक मंदी, कोविड-19 महामारी, और 2023 में अमेरिका और सिंगापुर में कुछ बैंकों का पतन शामिल है। इन घटनाओं ने बैंकिंग क्षेत्र के लिए जोखिमों को और अधिक अप्रत्याशित बना दिया है, और अनुमान है कि 2025 तक यह प्रवृत्ति जारी रहेगी। यदि बैंक इन दीर्घकालिक परिवर्तनों के लिए खुद को तुरंत तैयार नहीं करते हैं,तो उन्हें नई बाधाओं और मांगों का सामना करना पड़ेगा।

बैंकिंग में जोखिम प्रबंधन: एक महत्वपूर्ण पहलू

बैंकों के लिए वित्तीय स्थिरता, पूंजी का कुशल आवंटन, ग्राहकों का विश्वास, अच्छी प्रतिष्ठा, बेहतर रिटर्न और उभरती चुनौतियों के बावजूद दीर्घकालिक विकास व स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए प्रभावी जोखिम प्रबंधन अत्यंत महत्वपूर्ण है। बैंक व्यवस्थित प्रक्रियाओं का उपयोग करके विभिन्न जोखिमों जैसे ऋण, बाज़ार, परिचालन, तरलता, ब्याज दर और अनुपालन जोखिम की पहचान, आकलन और उन्हें कम करते हैं, ताकि उनकी स्थिरता और निरंतरता बनी रहे।

बैंकिंग में जोखिम प्रबंधन क्या है?

बैंकिंग में जोखिम प्रबंधन एक व्यापक दृष्टिकोण है जिसके तहत बैंक अपने दैनिक कार्यों में आने वाले जोखिमों, जैसे वित्तीय लेनदेन, डेटा गोपनीयता, मनी लॉन्ड्रिंग विरोधी नियम और ग्राहक सुरक्षा कानूनों की पहचान, आकलन और उन्हें नियंत्रित करते हैं।

किसी भी अन्य संगठन की तरह, बैंकों को भी विभिन्न प्रकार के जोखिमों का सामना करना पड़ता है। हालांकि, वैश्विक वित्तीय प्रणालियों का एक अभिन्न अंग होने के कारण, उन्हें मजबूत जोखिम प्रबंधन प्रक्रियाओं की आवश्यकता होती है। बैंकिंग जोखिम प्रबंधन से तात्पर्य उन जोखिमों की सक्रिय और निरंतर पहचान, आकलन और नियंत्रण की प्रक्रिया से है, जिनका सामना बैंक अपनी स्थिरता और निरंतरता सुनिश्चित करने के लक्ष्य के साथ कर सकते हैं।

बैंकिंग में प्रभावी जोखिम प्रबंधन वित्तीय स्थिरता सुनिश्चित करने, जमाकर्ताओं और निवेशकों के हितों की रक्षा करने और बैंकिंग प्रणाली के समग्र स्वास्थ्य को बनाए रखने में मदद करता है। यह एक महत्वपूर्ण कार्य है जिसके लिए निरंतर ध्यान और विकसित वित्तीय परिदृश्य के अनुकूल होने की आवश्यकता होती है।

बैंकिंग में जोखिम प्रबंधन प्रक्रिया

बैंकिंग में जोखिम प्रबंधन प्रक्रिया में आमतौर पर निम्नलिखित चरण शामिल होते हैं:

- **जोखिम की पहचान:** इसमें बैंक द्वारा सामना किए जाने वाले विभिन्न प्रकार के जोखिमों की पहचान करने और उन्हें समझने के लिए एक व्यापक विश्लेषण शामिल है, जैसे कि ऋण जोखिम, बाज़ार जोखिम, परिचालन जोखिम, तरलता जोखिम, अनुपालन जोखिम और रणनीतिक जोखिम। इससे बैंक अपनी वित्तीय स्थिरता और परिचालनात्मक लचीलेपन के लिए संभावित खतरों के बारे में जानकारी प्राप्त करते हैं।
- **जोखिम आकलन:** इस चरण में, बैंक प्रत्येक पहचाने गए जोखिम के संभावित प्रभाव और संभावना का मूल्यांकन करते हैं। इसमें मात्रात्मक (सांख्यिकीय मॉडल का उपयोग करके वित्तीय नुकसान का अनुमान लगाना) और गुणात्मक (नियामक परिवर्तनों, बाज़ार की स्थितियों और उभरते खतरों जैसे व्यापक कारकों पर विचार करना) दोनों तरीके शामिल होते हैं।
- **जोखिम माप:** वित्तीय संदर्भ में जोखिमों के संभावित प्रभाव को मापना, प्रभावी जोखिम प्रबंधन के लिए महत्वपूर्ण है। जोखिमों को मापने से बैंक अपनी प्रतिक्रियाओं को प्राथमिकता दे सकते हैं और तदनुसार संसाधनों का आवंटन कर सकते हैं, जिससे बेहतर निर्णय लेने में मदद मिलती है।
- **जोखिम न्यूनीकरण:** जोखिमों को कम करने या नियंत्रित करने के लिए रणनीतियाँ लागू की जाती हैं। इनमें परिसंपत्तियों का विविधीकरण, विभिन्न गतिविधियों के लिए जोखिम सीमाएँ निर्धारित करना, हेजिंग तकनीकों का उपयोग करना और डेरिवेटिव जैसे वित्तीय उपकरणों का उपयोग करना शामिल हो सकता है।
- **निगरानी और रिपोर्टिंग:** बैंक के जोखिम प्रोफाइल की निरंतर निगरानी आवश्यक है। बैंक नियमित रूप से जोखिम शमन रणनीतियों की प्रभावशीलता का आकलन करते हैं और बदलती बाज़ार स्थितियों या उभरते जोखिमों के आधार पर अपने दृष्टिकोण को समायोजित करते हैं। जोखिम प्रबंधन गतिविधियों पर रिपोर्टिंग हितधारकों के लिए पारदर्शिता और जवाबदेही प्रदान करती है।
- **शासन और अनुपालन:** बैंकों को कानूनी और प्रतिष्ठा संबंधी जोखिमों को कम करने के लिए प्रासंगिक विनियमों और आंतरिक नीतियों का अनुपालन सुनिश्चित करना चाहिए। मजबूत शासन ढांचे में जोखिम निरीक्षण, आंतरिक नियंत्रण और एक जोखिम-जागरूक संगठनात्मक संस्कृति शामिल है।

बैंकिंग में प्रमुख जोखिम

बैंकिंग संस्थानों को कई तरह के जोखिमों का सामना करना पड़ता है, जो समय रहते संबोधित न किए जाने पर उनके संचालन और स्थिरता के लिए गंभीर खतरा पैदा कर सकते हैं। बैंकिंग में जोखिमों के मुख्य प्रकारों में शामिल हैं:

- **ऋण जोखिम:** यह उधारकर्ताओं द्वारा अपने वित्तीय दायित्वों को पूरा करने में असमर्थता के परिणामस्वरूप होने वाले नुकसान को परिलक्षित करना है। प्रभावी ऋण जोखिम प्रबंधन में उधारकर्ताओं की ऋण योग्यता का आकलन करना, उचित ऋण सीमा निर्धारित करना और विविधीकरण व संपार्श्विक के माध्यम से संभावित नुकसान को कम करना शामिल है।
- **बाज़ार जोखिम:** इसमें बाज़ार की स्थितियों में बदलाव के कारण बैंक के ट्रेडिंग और निवेश पोर्टफोलियो में नुकसान की संभावना शामिल है, जैसे कि ब्याज दरों, विनिमय दरों, इक्विटी कीमतों या कमोडिटी की कीमतों में उतार-चढ़ाव। बैंक हेजिंग, पोर्टफोलियो विविधीकरण और वित्तीय डेरिवेटिव का उपयोग करके बाज़ार जोखिम का प्रबंधन करते हैं।
- **परिचालन जोखिम:** यह अपर्याप्त या विफल आंतरिक

प्रक्रियाओं, प्रणालियों, लोगों या बाहरी घटनाओं से उत्पन्न होता है। इसमें धोखाधड़ी, त्रुटियों, सिस्टम विफलताओं, साइबर हमलों, प्राकृतिक आपदाओं और नियामक अनुपालन विफलताओं से जुड़े जोखिम शामिल हैं। स्मार्ट परिचालन जोखिम प्रबंधन में मजबूत आंतरिक नियंत्रण लागू करना, नियमित ऑडिट करना और कर्मचारियों के प्रशिक्षण को बढ़ाना शामिल है।

- **तरलता जोखिम:** यह वह जोखिम है जिसमें बैंक के पास अपनी अल्पकालिक वित्तीय आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए पर्याप्त तरल परिसंपत्तियाँ नहीं हो सकती हैं। बैंक पर्याप्त तरलता बफर बनाए रखने, फंडिंग स्रोतों में विविधता लाने और आकस्मिक फंडिंग योजनाओं को लागू करके तरलता जोखिम का प्रबंधन करते हैं।
- **ब्याज दर जोखिम:** यह बैंक की लाभप्रदता और वित्तीय स्थिति पर ब्याज दर में उतार-चढ़ाव के संभावित प्रभाव को दर्शाता है। इसके लिए हानि नियंत्रण में आमतौर पर हेजिंग टूल्स का उपयोग करना, जोखिम सीमा निर्धारित करना और ब्याज दर परिवर्तनों के प्रतिकूल प्रभावों को कम करने के लिए परिसंपत्ति-देयता मिश्रण को अनुकूलित करना शामिल है।
- **अनुपालन जोखिम:** यह कानूनों, विनियमों, नीतियों या नैतिक मानकों के उल्लंघन के परिणामस्वरूप कानूनी और नियामक प्रतिबंधों, वित्तीय हानि या प्रतिष्ठा को नुकसान से संबन्धित जोखिम है। अनुपालन जोखिम प्रबंधन में मजबूत आंतरिक नियंत्रण, निरंतर निगरानी और नियामक परिवर्तनों को संबोधित करने के लिए सक्रिय उपाय शामिल हैं।

बैंकों के लिए जोखिम प्रबंधन क्यों महत्वपूर्ण है?

बैंकों के लिए यह महत्वपूर्ण है कि वे अपने सामने आने वाले विभिन्न जोखिमों का कुशलतापूर्वक और सक्रिय रूप से प्रबंधन करें ताकि हितधारकों की बढ़ती अपेक्षाओं के बीच बैंकिंग संचालन, प्रतिष्ठा और ग्राहक परिसंपत्तियों की सुरक्षा हो सके। जोखिम प्रबंधन महत्वपूर्ण होने के पाँच कारण नीचे दिए गए हैं:

- **वित्तीय स्थिरता सुनिश्चित करना:** प्रभावी जोखिम प्रबंधन यह सुनिश्चित करता है कि बैंक गंभीर मुद्दों में बढ़ने से पहले संभावित जोखिमों की पहचान, आकलन और शमन करके स्थिर और टिकाऊ बने रहें।
- **कुशल पूंजी आवंटन को सुविधाजनक बनाना:** जोखिम प्रबंधन बैंकों को उन क्षेत्रों की पहचान करके कुशलतापूर्वक पूंजी आवंटित करने में मदद करता है जहां जोखिम सबसे अधिक महत्वपूर्ण हैं, जिससे संसाधनों का सही जगह पर उपयोग सुनिश्चित होता है।
- **विश्वास और प्रतिष्ठा:** बैंकिंग उद्योग में, भरोसा बहुत महत्वपूर्ण है। प्रभावी जोखिम प्रबंधन ग्राहकों, निवेशकों और अन्य हितधारकों के बीच विश्वास बनाने और उसे बनाए रखने में मदद करता है।
- **रिटर्न का अनुकूलन:** जोखिमों का सावधानीपूर्वक प्रबंधन करके, बैंक अपने निवेश पर रिटर्न को अनुकूलित कर सकते हैं। इसमें संभावित जोखिमों के मुकाबले संभावित रिटर्न की गणना कर एक गणनात्मक दृष्टिकोण अपनाना शामिल है।
- **दीर्घकालिक विकास और स्थिरता:** एक मजबूत जोखिम प्रबंधन ढांचा बैंकों को निर्णय लेने, अपने जोखिम-वापसी प्रोफ़ाइल को अनुकूलित करने और संभावित जोखिमों की स्पष्ट समझ के साथ विकास के अवसरों में निवेश करने की अनुमति देता है।

बैंकिंग में जोखिम प्रबंधन चुनौतियां

जोखिम प्रबंधन के स्पष्ट महत्व के बावजूद, बैंकों को इस क्षेत्र में अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जिनमें से कुछ का विवरण नीचे दिया गया है:

- **साइबर सुरक्षा खतरे:** तेजी से डिजिटल हो रहे बैंकिंग परिचालन में संवेदनशील वित्तीय जानकारी की सुरक्षा एक सतत चुनौती है, क्योंकि साइबर खतरों की प्रकृति लगातार विकसित हो रही है।
- **नियामक परिवर्तन:** बैंकों के लिए नियामक वातावरण लगातार बदल रहा है, जिसमें नए कानून और संशोधन अक्सर लागू होते रहते हैं, जिससे अनुपालन सुनिश्चित करना चुनौतीपूर्ण हो जाता है।
- **जटिल वित्तीय उत्पाद:** जटिल वित्तीय उत्पादों का नवाचार विकास के अवसर प्रस्तुत करता है, लेकिन इसके लिए विशेष जोखिम विशेषज्ञता और इन उत्पादों के जोखिम प्रोफाइल का आकलन करने की क्षमता की आवश्यकता होती है।
- **वित्तीय बाजारों का वैश्वीकरण:** वैश्विक स्तर पर परिचालन का विस्तार करने से बैंकों को अलग-अलग नियामक व्यवस्थाओं, राजनीतिक अस्थिरता और आर्थिक अस्थिरता वाले नए बाजारों का सामना करना पड़ता है, जिससे जोखिम प्रबंधन अधिक जटिल हो जाता है।
- **ऋण जोखिम प्रबंधन:** उधारकर्ताओं की ऋण-योग्यता का आकलन करना और उचित ब्याज दरें निर्धारित करना निरंतर चुनौतियां पेश करता है, खासकर आर्थिक मंदी या अप्रत्याशित परिस्थितियों में।

अप्रत्याशित जोखिमों से बचने के लिए बैंक क्या करें?

अप्रत्याशित जोखिमों से बचने के लिए बैंक निम्नलिखित कार्यप्रणालियाँ अपना सकते हैं:

- **एकीकृत जोखिम प्रबंधन ढांचा:** एक एकीकृत ढांचे को लागू करना विभिन्न जोखिम प्रकारों (जैसे, ऋण, बाज़ार, परिचालन, अनुपालन) को एक एकल, एकीकृत प्रणाली में समेकित करता है,जिससे बैंकों को अपने जोखिम प्रोफाइल को समग्र रूप से देखने में मदद मिलती है और बेहतर निर्णय लेने की सुविधा मिलती है।
- **गतिशील जोखिम वहन क्षमता:** एक स्पष्ट रूप से परिभाषित और गतिशील जोखिम वहन क्षमता निर्धारित करना, जो बैंक द्वारा अपने रणनीतिक उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए स्वीकार किए जाने वाले जोखिम के स्तर और प्रकार को रेखांकित करती है, और बैंक के वातावरण और उद्देश्यों में होने वाले परिवर्तनों के अनुकूल हो।
- **दूरदर्शी तनाव परीक्षण:** नियमित रूप से तनाव परीक्षण करना ताकि यह अनुमान लगाया जा सके कि कुछ काल्पनिक प्रतिकूल परिदृश्य (जैसे आर्थिक मंदी) बैंक के वित्तीय स्वास्थ्य को कैसे प्रभावित करेंगे, और तदनुसार जोखिम शमन रणनीतियों को समायोजित करना।
- **जोखिम-जागरूक संस्कृति का विकास करना:** वरिष्ठ नेतृत्व द्वारा समर्थित और संगठन के सभी स्तरों पर अंतर्निहित जोखिम-जागरूक संस्कृति विकसित करना, जिसमें प्रशिक्षण कार्यक्रम, प्रदर्शन प्रोत्साहन और संचार रणनीतियाँ शामिल हों, ताकि जोखिम निर्णयों में जोखिम जागरूकता और व्यक्तिगत जवाबदेही के महत्व पर जोर दिया जा सके।

पढ़ने की घटती आदत

आशुतोष सिंह राठौर, सहायक प्रबन्धक, क्षेत्रीय कार्यालय अहमदाबाद

मनुष्य के जीवन में पढ़ने की आदत सदियों से ज्ञान, विवेक और संस्कारों का स्रोत रही है। किताबें केवल शब्दों का संग्रह मात्र नहीं होतीं, वे जीवन के अनुभवों, समाज के उत्थान और मानवता के विकास की सबसे बड़ी धरोहर हैं। किंतु विडम्बना यह है कि आज के युग में, जहाँ ज्ञानार्जन के असंख्य साधन उपलब्ध हैं, वहीं पारंपरिक अर्थों में 'पढ़ने की आदत' तेज़ी से कम होती जा रही है। यह केवल भारत की समस्या नहीं है, बल्कि पूरे विश्व में एक गंभीर चिंता का विषय बन चुका है।

पढ़ने की आदत का महत्व

पढ़ना केवल जानकारी प्राप्त करने का माध्यम नहीं है, बल्कि यह व्यक्ति के सोचने की क्षमता, कल्पनाशक्ति और व्यक्तित्व निर्माण का आधार है। जो व्यक्ति नियमित पढ़ने की आदत विकसित करता है, वह जीवन की परिस्थितियों का गहन विश्लेषण कर पाता है। पढ़ने से व्यक्ति के भीतर संवेदनशीलता, धैर्य और रचनात्मक दृष्टिकोण विकसित होता है।

साहित्यकारों का मानना है कि किताबें व्यक्ति के अकेलेपन में सबसे सच्चा दोस्त होता है । वे मनोरंजन भी करती हैं और मार्गदर्शन भी। एक अच्छी पुस्तक मनुष्य को वह सिखा सकती है, जो शायद अनुभवों से वर्षों में भी न सीखा जा सके।

बदलते परिवेश में पढ़ाई का स्वरूप

यदि हम पिछले दो–तीन दशकों को देखें तो पाएँगे कि पढ़ने की आदत धीरे–धीरे इलेक्ट्रॉनिक साधनों और डिजिटल माध्यमों के सामने कमज़ोर पड़ती गई है। जहाँ पहले लोग समाचारपत्र, पत्रिकाएँ और उपन्यास नियमित पढ़ते थे, वहीं आज अधिकांश लोग मोबाइल फ़ोन की स्क्रीन पर छोटी–छोटी ख़बरें या सोशल मीडिया की पोस्ट पढ़कर ही संतुष्ट हो जाते हैं।

आज का पाठक धैर्य खो चुका है। लंबा लेख या गहन पुस्तक पढ़ने की बजाय, वह 'दो मिनट' में जानकारी पाने की प्रवृत्ति का शिकार हो गया है। यही कारण है कि 'रीडिंग कल्चर' की जगह अब 'स्क्रॉलिंग कल्चर' ने ले ली है।

पुस्तक पढ़ने की प्रवृत्ति के घटने के प्रमुख कारण:

पढ़ने की आदत में आई गिरावट के पीछे कई कारण ज़िम्मेदार हैं-

1. तकनीकी युग का प्रभाव

स्मार्टफ़ोन, टैबलेट और इंटरनेट ने जहाँ सुविधाएँ दी हैं, वहीं किताबों से दूरी भी बढ़ाई है। ऑनलाइन वीडियो, वेब सीरीज़ और गेम्स ने युवाओं का समय और ध्यान खींच लिया है।

2. तेज़ जीवनशैली

आज की भागदौड़ भरी ज़िंदगी में लोगों के पास अपने लिए समय निकालना कठिन हो गया है। कामकाज और परिवार की ज़िम्मेदारियों के बीच किताबें पढ़ना गौण हो गया है।

3. क्षणिक संतुष्टि की आदत

सोशल मीडिया ने लोगों की रुचि को त्वरित और सतही सामग्री की ओर मोड़ दिया है। पाँच मिनट के छोटे–छोटे वीडियो और मीम संस्कृति ने गहरी और गंभीर सामग्री को पीछे धकेल दिया है।

4. पुस्तकालयों और पुस्तक मेलों का अभाव

छोटे कस्बों और गाँवों में आज भी पुस्तकालय न के बराबर है यानी काफी सीमित है । पुस्तक मेलों और साहित्यिक आयोजनों की संख्या भी पहले की अपेक्षा कम हो गई है।

5. पाठ्यपुस्तक–केंद्रित सोच

बच्चों में पढ़ने की आदत केवल परीक्षा पास करने तक सीमित कर दी गई है। पढ़ने को आनंद और आत्मविकास का साधन मानने की बजाय, केवल 'अंक प्राप्त करने' का साधन बना दिया गया है।

इसके दुष्परिणाम:

पढ़ने की आदत का कम होना केवल एक सांस्कृतिक समस्या नहीं है, बल्कि यह समाज के भविष्य को प्रभावित करने वाला संकट है।

भाषा पर असर – पढ़ने से भाषा समृद्ध होती है, शब्द–भंडार बढ़ता है। किताबों से दूरी ने युवाओं की भाषा को सीमित और संक्षिप्त बना दिया है।

सोचने–समझने की क्षमता कम होना – लगातार सतही जानकारी लेने से गहन चिंतन और विश्लेषण की आदत कम हो गई है।

रचनात्मकता पर प्रहार – साहित्य और पुस्तकों का गहरा अध्ययन व्यक्ति की कल्पनाशक्ति को प्रखर करता है। पढ़ने की कमी ने रचनात्मकता को बाधित किया है।

सांस्कृतिक विरासत से दूरी – किताबें हमारी परंपरा, संस्कृति और इतिहास का संरक्षण करती हैं। नई पीढ़ी जब इन्हें नहीं पढ़ेगी, तो अपनी जड़ों से दूर होती जाएगी।

निष्कर्ष

पढ़ने की आदत का कम होना केवल व्यक्तिगत हानि नहीं है, यह सामाजिक और सांस्कृतिक क्षति भी है। किताबें हमें सोचने की गहराई, भाषा की सुंदरता और जीवन की सच्चाई से परिचित कराती हैं। यदि हम पुस्तकों से दूरी बना लेंगे, तो आने वाली पीढ़ियाँ ज्ञान से अधिक सूचना–निर्भर होंगी। सूचना क्षणिक होती है, जबकि ज्ञान शाश्वत।

इसलिए हमें मिलकर यह प्रयास करना होगा कि पढ़ने की संस्कृति को पुनर्जीवित किया जाए। परिवार, विद्यालय, समाज और सरकार—सभी स्तरों पर पहल की आवश्यकता है। यदि हम आज बच्चों और युवाओं को किताबों से जोड़ पाएँ, तो कल का समाज अधिक विवेकशील, संवेदनशील और रचनात्मक होगा ।

आइए, हम सब संकल्प लें कि चाहे तकनीक कितनी भी आगे बढ़ जाए, किताबों से हमारा रिश्ता कभी न टूटे । चूँकि किताबें ही वे दीपक हैं, जिनकी रोशनी पीढ़ियों को मार्गदर्शन देती आयी है और आगे भी देती रहेंगी ।

पढ़ना दिमाग के लिए वैसा ही है, जैसा व्यायाम शरीर के लिए।
– जोसेफ एडिसन

नौकरियों में बढ़ती निष्क्रियता: डिजिटल कामकाज और स्वास्थ्य

शिव कुमार यादव, वरिष्ठ प्रबन्धक, जोखिम प्रबंधन विभाग, केन्द्रीय कार्यालय

भारत की तेज़ी से विकसित होती डिजिटल और नॉलेज-ड्रिवन अर्थव्यवस्था ने कार्यशैली को पूरी तरह बदल दिया है। बेंगलुरु के आईटी पार्कों से लेकर गुरुग्राम के स्टार्ट-अप हब, और चेन्नै व हैदराबाद के कॉरपोरेट सेवा केंद्रों तक, करोड़ों पेशेवर अब अपने कार्यदिवस का बड़ा हिस्सा कंप्यूटर स्क्रीन के सामने बैठकर बिताते हैं। जहां एक ओर इस बदलाव ने उत्पादकता और वैश्विक जुड़ाव को बढ़ाया है, वहीं दूसरी ओर इसने जीवनशैली से जुड़ी अनेक स्वास्थ्य समस्याओं को भी जन्म दिया है। आधुनिक नौकरियों की बैठे-बैठे काम करने वाली शैली भारतीय कार्यबल के शारीरिक, मानसिक और पोषण संबंधी स्वास्थ्य को प्रभावित कर रही है।

नई हकीकत: लंबे कार्य घंटे, कम गतिशीलता

डिजिटल नौकरियों में लगातार स्क्रीन टाइम, वर्चुअल मीटिंग्स और स्वचालित कार्य प्रक्रियाएं शामिल हैं, जिनसे शारीरिक गतिविधि कम होती जाती है। महानगरों में लंबी यात्राएं, ट्रैफिक और अनियमित कार्य समय स्थिति को और खराब करते हैं। कई कर्मचारियों के लिए एक सामान्य दिन 8–10 घंटे तक बैठे रहने, कम धूप मिलने, लगभग शून्य शारीरिक गतिविधि और काम के दबाव से भरा होता है।

इसका परिणाम मोटापा, मधुमेह, उच्च रक्तचाप, मांसपेशियों व हड्डियों से जुड़ी समस्याएं, थकान और नींद संबंधी विकारों में तेजी से बढ़ोतरी के रूप में सामने आ रहा है। डॉक्टर "टेक-नेक", कर्पल टनल सिंड्रोम, आंखों में तनाव और शुरुआती आयु में मेटाबॉलिक समस्याओं के मामलों में उल्लेखनीय वृद्धि देख रहे हैं।

डिजिटल कामकाज स्वास्थ्य को कैसे प्रभावित करता है

1. **शारीरिक तनाव:** लगातार बैठने से मांसपेशियों की ताकत घटती है, रक्त प्रवाह कम होता है और रीढ़ पर दबाव बढ़ता है।
2. **स्क्रीन-जनित थकान:** अधिक स्क्रीन टाइम सिरदर्द, आंखों में जलन, धुंधली दृष्टि और नींद के चक्र में बाधा पैदा करता है।
3. **तनाव और मानसिक बोझ:** हमेशा उपलब्ध रहने की अपेक्षा चिंता, घबराहट और बर्नआउट बढ़ाती है।
4. **अनियमित भोजन आदतें:** स्नैक्स, त्वरित भोजन, कैफीन और फूड-डिलीवरी पर निर्भरता पोषण की गुणवत्ता को घटाती है।

1. निष्क्रिय जीवनशैली में आहार संबंधी सुझाव

क. पोषक तत्वों से भरपूर भोजन को प्राथमिकता दें

मिलेट्स, दाल, पनीर, सब्जियां और मौसमी फल जैसे संतुलित खाद्य पदार्थ शामिल करें। रागी और ज्वार जैसे मिलेट्स पेट भरने और ब्लड शुगर नियंत्रित रखने में सहायक हैं।

ख. भोजन की मात्रा नियंत्रित रखें

शारीरिक गतिविधि कम होने पर छोटे लेकिन संतुलित भोजन ऊर्जा बनाए रखते हैं और वजन बढ़ने से बचाते हैं।

ग. प्रसंस्कृत और मीठी चीजों का सेवन कम करें

तली-भुनी चीजें, बेकरी उत्पाद, पैक्ड फूड और अधिक चाय-कॉफी से बचें।

घ. शरीर में पानी की पर्याप्त मात्रा रखें

प्रतिदिन 2–2.5 लीटर पानी पिएं। शर्करायुक्त पेयों से बचें।

ड. तय समय पर भोजन करें

नियमित भोजन मेटाबॉलिज्म को स्थिर रखने में सहायक है।

2. शारीरिक स्वास्थ्य से जुड़े सुझाव

डिजिटल नौकरी के साथ सक्रिय रहना आवश्यक है, लेकिन यह भी समझना उतना ही महत्वपूर्ण है कि प्रारंभ में यह आसान नहीं होता।

धीरे-धीरे शुरुआत करें और क्रमशः बढ़ाएं

कई पेशेवरों के लिए, विशेष रूप से उन लोगों के लिए जो लंबे समय से निष्क्रिय दिनचर्या में हैं, अचानक सक्रिय होना मुश्किल लगता है। थकान, लंबे कार्य घंटे और बैठे-बैठे काम करने की आदत के कारण व्यायाम बोझिल लग सकता है।

इसलिए शुरुआत छोटी करें, 5–10 मिनट की वॉक, हल्के स्ट्रेच, या सरल गतिशीलता अभ्यास से। इसके बाद समय और तीव्रता को धीरे-धीरे बढ़ाएं। यह तरीका शरीर पर अतिरिक्त दबाव डाले बिना एक स्थायी दिनचर्या विकसित करने में मदद करता है। समय के साथ, नियमितता स्वाभाविक रूप से ऊर्जा, सहनशक्ति और फिटनेस को बढ़ाती है।

क. 30–2 नियम अपनाएं

हर 30 मिनट बैठने के बाद कम से कम 2 मिनट खड़े हों या चलें।

ख. प्रतिदिन 45–60 मिनट व्यायाम करें

विकल्प:

- तेज़ चाल से चलना या जॉगिंग
- योग या सूर्य नमस्कार
- बॉडीवेट स्ट्रेंथ ट्रेनिंग
- साइक्लिंग या तैराकी

शुरुआत में तीव्रता से अधिक महत्व निरंतरता का है।

ग. नियमित स्ट्रेचिंग और मोबिलिटी अभ्यास करें

यह अकड़न कम करता है और कई समस्याओं से राहत देता है।

घ. वर्कस्टेशन को एर्गोनॉमिक बनाएं

सही ऊंचाई पर स्क्रीन, सपोर्टिव कुर्सी और उचित प्रकाश व्यवस्था से कई शारीरिक समस्याएं कम होती हैं।

ड. रोजमर्रा की गतिविधियों में हल्की गतिशीलता जोड़ें

फोन पर बात करते समय चलना, सीढ़ियों का उपयोग करना, भोजन के बाद छोटी वॉक आदि।

3. मानसिक स्वास्थ्य संबंधी सुझाव

क. काम और निजी जीवन की स्पष्ट सीमाएं तय करें

निश्चित कार्य समय और दिन के अंत में डिजिटल डिसकनेक्ट मानसिक तनाव कम करता है।

ख. माइंडफुलनेस और ध्यान का अभ्यास करें

10–15 मिनट के ध्यान और श्वास अभ्यास से मन शांत होता है और ध्यान क्षमता बढ़ती है।

ग. गैर-ज़रूरी स्क्रीन टाइम कम करें

बिना उद्देश्य की स्क्रॉलिंग से बचें, विशेषकर सोने से पहले।

घ. सामाजिक संबंध बनाए रखें

परिवार और मित्रों से नियमित बातचीत मानसिक स्वास्थ्य के लिए बेहद जरूरी है।

ड. छुट्टियां और छोटे ब्रेक लें

माइक्रो-ब्रेक और अवकाश मानसिक ऊर्जा को पुनः स्थापित करते हैं।

च. स्वयं एवं सहकर्मियों दोनों के लिए पेशेवर सहायता को प्रोत्साहित करें

यदि आप अपने सहकर्मियों में बर्नआउट, अवसाद या अत्यधिक मानसिक तनाव के संकेत देखें—जैसे भावनात्मक थकान, कार्यक्षमता में गिरावट, अलग-थलग रहना, या निराशा—तो उन्हें संवेदनशीलता से मानसिक स्वास्थ्य विशेषज्ञ या काउंसलर से परामर्श लेने के लिए प्रेरित करें।

इसी प्रकार, यदि स्वयं में ऐसे लक्षण महसूस हों तो सहायता लेने में विलंब न करें। पेशेवर मार्गदर्शन समय पर राहत और सुधार में अत्यंत प्रभावी होता है।

निष्कर्ष

भारत का डिजिटल कार्यबल अवसरों और चुनौतियों के संगम पर खड़ा है। निष्क्रिय जीवनशैली के बढ़ते जोखिमों को समझते हुए यदि व्यक्ति कदम दर कदम बदलाव लाते हैं, चाहे वह संतुलित भोजन हो, नियमित व्यायाम, एर्गोनॉमिक सुधार या मानसिक स्वास्थ्य देखभाल, तो दीर्घकालिक स्वास्थ्य प्राप्त करना पूरी तरह संभव है।

धीरे-धीरे शुरू की गई छोटी-छोटी आदतें समय के साथ एक सुगठित दिनचर्या बनाती हैं और वांछित फिटनेस तथा समग्र स्वास्थ्य को हासिल करने में मदद करती हैं। एक स्वस्थ कार्यबल ही वास्तव में भारत की डिजिटल वृद्धि का मजबूत आधार बनता है।

भ्रष्टाचार

एक आदमी ने धरती से किया प्रस्थान,
और यमराज के घर घड़ियाँ ही घड़ियाँ देखकर हो गया हैरान,
हर देश की अलग-अलग घड़ी थी,
कोई छोटी तो कोई बड़ी थी
कोई दौड़ रही थी तो कोई बंद,
कोई तेज़ थी तो कोई मंद
उनकी अलग-अलग रफ़्तार देखकर आदमी चकराया,
कारण पूछा तो यमराज ने बताया –
जिस हिसाब से बढ़ रहा है उस देश में भ्रष्टाचार,
उसी हिसाब से है उस देश की घड़ी की रफ़्तार ॥
आदमी ने चारों तरफ नज़र दौड़ाई,
पर उसे भारत की घड़ी कहीं भी नज़र न आई,
आदमी मुस्कुराया और बोला –
भारत वाले भ्रष्टाचार यहाँ भी ले आये,
और सच - सच बताओं भारत की घड़ी न रखने
के कितने पैसे खाए
यमराज मुस्कुराया और बोला बेटा
तेरे दिमाग की सुई तो बिना बात उछल रही है
और मेरे बेडरूम में जाकर देख पंखे की जगह
भारत की घड़ी चल रही है ।

विश्राम मीना
प्रबंधक
लुधियाना क्षेत्र

सोशल मीडिया आधारित कस्टमर सर्विस: नई दिशा नए अवसर

आशीष कुमार कर, प्रबंधक, रायपुर क्षेत्र

डिजिटल क्रांति ने मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को प्रभावित किया है और बैंकिंग क्षेत्र इससे अछूता नहीं रहा है। जहाँ एक समय बैंकिंग का अर्थ लंबी कतारें, सीमित समय और कागज़ी कार्यवाही हुआ करता था, वहीं आज बैंकिंग का स्वरूप तेज़, तकनीक-आधारित और ग्राहक-केंद्रित हो चुका है। इस परिवर्तन में सोशल मीडिया ने एक महत्वपूर्ण और निर्णायक भूमिका निभाई है। आज सोशल मीडिया केवल संवाद या मनोरंजन का साधन नहीं रह गया है, बल्कि यह ग्राहक सेवा, सूचना प्रसार, शिकायत निवारण और विश्वास निर्माण का एक प्रभावी मंच बन चुका है। भारत के सार्वजनिक और निजी—दोनों प्रकार के बैंक अब सोशल मीडिया को एक डिजिटल शाखा के रूप में उपयोग कर रहे हैं।

सोशल मीडिया : बैंकिंग क्षेत्र में एक नई परिभाषा

बैंकिंग क्षेत्र में सोशल मीडिया की भूमिका को तीन प्रमुख स्तरों पर समझा जा सकता है:

1. सूचना और जागरूकता का माध्यम
2. सेवा वितरण का सहायक मंच
3. ग्राहक और बैंक के बीच विश्वास का सेतु

आज ग्राहक बैंक की वेबसाइट से पहले बैंक का सोशल मीडिया पेज देखता है। वहाँ उसे बैंक की योजनाएँ, डिजिटल सेवाएँ, सुरक्षा चेतावनियाँ और नई सुविधाओं की जानकारी सरल और आकर्षक तरीके से मिलती है।

ग्राहक सेवा में सोशल मीडिया की भूमिका

1. त्वरित सूचना और सरल भाषा

बैंकिंग उत्पाद अक्सर जटिल होते हैं। सोशल मीडिया पोस्ट, इन्फोग्राफिक्स और छोटे वीडियो इन जटिल सेवाओं को सरल भाषा में प्रस्तुत करते हैं। संदेश देने की भाषा क्षेत्र विशेष को ध्यान में रखकर चुनी जाती है जैसे यदि क्षेत्र मराठी भाषा उपयोग करते हैं तो उन्हे सोशल मीडिया की पोस्ट उनकी भाषा में उपलब्ध करवाई जाती हैं इससे वित्तीय साक्षरता बढ़ती है और ग्राहक आत्मनिर्भर बनता है।

2. डिजिटल सेवाओं का व्यवहारिक प्रदर्शन

सोशल मीडिया केवल यह नहीं बताता कि कोई सेवा उपलब्ध है, बल्कि यह दिखाता है कि वह सेवा कैसे उपयोग की जाए। यही कारण है कि डिजिटल सेवाओं को अपनाने की दर बढ़ी है।

3. शिकायत और संवाद का मंच

आज अधिकांश बैंक सोशल मीडिया को एक संवादात्मक मंच के रूप में उपयोग कर रहे हैं, जहाँ ग्राहक अपनी समस्या रख सकता है और समाधान की दिशा में मार्गदर्शन प्राप्त कर सकता है।

इण्डियन ओवरसीज बैंक (आईओबी) : सोशल मीडिया के प्रभावी उपयोग का उदाहरण

भारतीय बैंकिंग क्षेत्र में इण्डियन ओवरसीज बैंक ने सोशल मीडिया का उपयोग केवल प्रचार के लिए नहीं, बल्कि सेवा प्रदान करने के माध्यम के रूप में किया है। आईओबी के सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स पर उपलब्ध सामग्री यह स्पष्ट करती है कि बैंक डिजिटल बैंकिंग को ज़मीन से जोड़कर प्रस्तुत कर रहा है।

व्हाट्सऐप बैंकिंग: बैंक अब ग्राहक के मोबाइल पर

आईओबी की व्हाट्सएप बैंकिंग सेवा इस बात का उदाहरण है कि कैसे सोशल मीडिया और मैसेजिंग प्लेटफॉर्म बैंकिंग को सरल बनाते हैं। ग्राहक अब:

- बैंकिंग सेवाओं की जानकारी
- लिंक और दिशानिर्देश
- डिजिटल सुविधाओं तक पहुँच

अपने व्हाट्सएप के माध्यम से प्राप्त कर सकता है। यह सुविधा विशेष रूप से वरिष्ठ नागरिकों, ग्रामीण ग्राहकों और छोटे व्यापारियों के लिए अत्यंत उपयोगी है।

स्वयं सेवा डिजिटल हब : व्यवसायिक ग्राहकों के लिए डिजिटल समाधान

आईओबी ने स्टॉक स्टेटमेंट और बुक डेब्ट स्टेटमेंट जैसे महत्वपूर्ण दस्तावेज़ों को स्वयं सेवा डिजिटल हब के माध्यम से ऑनलाइन कर दिया है। सोशल मीडिया के ज़रिये इस सुविधा की जानकारी ग्राहकों तक पहुँचाई गई, जिससे:

- शाखाओं पर निर्भरता घटी
- समय की बचत हुई
- पारदर्शिता और दक्षता बढ़ी

डिजिटल भुगतान और जीएसटी समाधान

आईओबी भुगतान गेटवे के माध्यम से जीएसटी भुगतान जैसी सेवाओं को सोशल मीडिया पर स्पष्ट रूप से प्रस्तुत किया गया। इससे एम.एस.एम.ई. और व्यापारिक वर्ग को यह संदेश मिला कि बैंक केवल ऋणदाता नहीं, बल्कि व्यवसायिक भागीदार है।

डिजिटल खाता खोलना : बैंक अब समय और स्थान से मुक्त

वीडियो केवाइसी आधारित डिजिटल सेविंग अकाउंट की जानकारी सोशल मीडिया पर साझा कर आईओबी ने यह सिद्ध किया कि:

- बैंकिंग अब छुट्टियों में भी संभव है
- शाखा जाना अनिवार्य नहीं
- तकनीक ग्राहक के लिए है, न कि ग्राहक तकनीक के लिए

निष्कर्ष:

सोशल मीडिया और बैंकिंग का संगम भारतीय बैंकिंग व्यवस्था को अधिक समावेशी, पारदर्शी और ग्राहक-केन्द्रित बना रहा है। इंडियन ओवरसीज बैंक ने यह सिद्ध किया है कि यदि तकनीक को सही सोच और सेवा भावना के साथ अपनाया जाए, तो बैंकिंग न केवल आसान होती है, बल्कि भरोसेमंद भी बनती है। भविष्य की बैंकिंग वही होगी, जो ग्राहक से संवाद करे, उसकी भाषा में बोले और उसकी सुविधा को प्राथमिकता दे—और इस दिशा में सोशल मीडिया सबसे सशक्त माध्यम है।

राष्ट्र निर्माण में सरकारी बैंकों का योगदान

रजनी बाला, प्रबन्धक, क्षेत्रीय कार्यालय चंडीगढ़

राष्ट्र निर्माण केवल भौतिक संसाधनों या राजनीतिक संस्थाओं से नहीं होता, बल्कि यह एक समग्र प्रक्रिया है जिसमें आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक विकास शामिल होता है। इस प्रक्रिया में सरकारी बैंकों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। वे न केवल वित्तीय समावेशन को बढ़ावा देते हैं, बल्कि गरीबों, किसानों, छोटे उद्यमियों और महिलाओं को सशक्त बनाकर सामाजिक न्याय की नींव रखते हैं। राष्ट्र निर्माण एक बहुआयामी प्रक्रिया है जिसमें आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक विकास शामिल होता है। इस प्रक्रिया में सरकारी बैंक एक मजबूत आधारशिला के रूप में कार्य करते हैं। वे न केवल वित्तीय संसाधनों का प्रबंधन करते हैं, बल्कि समाज के वंचित वर्गों को मुख्यधारा में लाने का कार्य भी करते हैं। भारत जैसे विविधतापूर्ण देश में सरकारी बैंकों की भूमिका केवल आर्थिक नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन की वाहक भी रही है। किसी भी राष्ट्र की आर्थिक प्रगति का आकलन उसकी वित्तीय संस्थाओं की मजबूती से किया जा सकता है। बैंक, जो एक समय केवल धन जमा करने और ऋण देने का माध्यम थे, आज देश की सामाजिक, आर्थिक और डिजिटल क्रांति के अग्रदूत बन चुके हैं। भारत जैसे विकासशील देश में बैंकों की भूमिका केवल वित्तीय लेन-देन तक सीमित नहीं रही, बल्कि उन्होंने ग्रामीण सशक्तिकरण, महिला उत्थान, उद्यमिता, डिजिटल समावेशन और राष्ट्रीय सुरक्षा तक में योगदान दिया है। **हाल ही में राष्ट्रपति महोदया श्रीमती द्रौपदी मुर्मू ने भारत के बैंकिंग क्षेत्र की आर्थिक विकास को बढ़ावा देने, सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों (MSMEs) का समर्थन करने, ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सशक्त बनाने तथा वित्तीय समावेशन को बढ़ावा देने की बात की । उन्होंने भारतीय अर्थव्यवस्था को दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं में से एक कहा है ।**

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

बैंकिंग प्रणाली का प्रारंभ भारत में 19वीं सदी के अंतिम दशक में हुआ। इसका मुख्य उद्देश्य था विदेशी व्यापार का संचालन, मुद्रा का प्रबंधन, और आर्थिक गतिविधियों को नियंत्रित करना। ब्रिटिश शासन के दौरान, अनेक विदेशी बैंकों की स्थापना हुई, जिन्होंने भारतीय अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

प्रारंभिक बैंकिंग संस्थान:

बैंक ऑफ हिंदुस्तान (1770): भारत का पहला बैंक, कोलकाता में स्थापित हुआ। उसके बाद बैंक ऑफ बंगाल (1806),बैंक ऑफ बॉम्बे (1840),,बैंक ऑफ मद्रास (1843) की स्थापना हुई । इन तीनों का विलय होकर इंपीरियल बैंक ऑफ इंडिया बना (1921), जो बाद में स्टेट बैंक ऑफ इंडिया बना। इसके बाद अन्य बैंको की स्थापना की गई । 1969 में इंदिरा गांधी सरकार द्वारा 14 प्रमुख बैंकों का राष्ट्रीयकरण किया गया। 1980 में 6 और बैंकों को राष्ट्रीयकृत किया गया। बैंको के राष्ट्रीयकरण करने के पीछे उद्देश्य निम्न थे :

- ग्रामीण क्षेत्रों तक बैंकिंग सेवाएं पहुँचाना
- प्राथमिकता क्षेत्र को ऋण देना
- सामाजिक सरोकारों को प्राथमिकता देना

सरकारी बैंकों का उद्देश्य और कार्यक्षेत्र

सरकारी बैंक का मुख्य उद्देश्य है देश के आर्थिक विकास में योगदान देना, सामाजिक न्याय सुनिश्चित करना और वित्तीय समावेशन को बढ़ावा देना। ये बैंक निम्नलिखित कार्य करते हैं:

- **पूंजी प्रवाह और निवेश का सृजन :** सरकारी बैंक देश में पूंजी का प्रवाह सुनिश्चित करते हैं। ये बैंक विभिन्न योजनाओं और उद्योगों में निवेश करते हैं। विशेषतः, सरकार की ओर से चलाई जाने वाली योजनाओं का वित्तपोषण सरकारी बैंकों के माध्यम से ही होता है।
- **उद्योग और व्यापार का विकास :** सरकारी बैंकों ने भारत में उद्योग, व्यापार और वाणिज्य को बढ़ावा दिया है। वे बड़े उद्योगों को ऋण प्रदान करते हैं, जिससे देश की औद्योगिक आधार मजबूत होता है। उदाहरण के तौर पर, सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक सरकार के स्वामित्व में बड़े स्टील, बिजली, सड़क, और तेल उद्योगों में ऋण देते हैं। सरकारी बैंक छोटी-छोटी ऋण योजनाओं के माध्यम से आम जनता को आसान ऋण उपलब्ध कराते हैं। जैसे कि प्रधानमंत्री मुद्रा योजना, स्वरोजगार ऋण आदि। इन योजनाओं से युवा उद्यमियों को व्यवसाय शुरू करने में मदद मिलती है।
- **सूक्ष्म, लघु और माध्यम उद्यमों का समर्थन :** MSMEs (सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम) भारत के आर्थिक विकास की रीढ़ हैं। सरकारी बैंक इन उद्यमों को विशेष ऋण योजनाओं के माध्यम से वित्तीय सहायता प्रदान करते हैं। इससे रोजगार सृजन और उद्योग का विस्तार होता है।
- **विदेशी निवेश को आकर्षित करना :** सरकारी बैंक विदेशी निवेशकों को ऋण और वित्तीय सेवाएँ प्रदान कर देश में निवेश को प्रोत्साहित करते हैं। ये बैंक विदेशी मुद्रा विनिमय में भी भूमिका निभाते हैं।
- **सामाजिक समावेशन और वित्तीय समावेशन :** सरकारी बैंकों ने ग्रामीण इलाकों में बैंक शाखाएँ खोली हैं। यह ग्रामीण जनता को वित्तीय सेवाओं से जोड़ने का कार्य कर रहा है। प्रधानमंत्री जनधन योजना जैसी योजनाएँ इन प्रयासों का परिणाम हैं। बैंकिंग सेवाओं का विस्तार गरीबी रेखा से नीचे रहने वाले परिवारों तक पहुंचाया गया है। इससे वे अपने आर्थिक स्थिति में सुधार कर सकते हैं। विशेष योजनाएँ जैसे कि महिला सशक्तिकरण के लिए ऋण, किसान क्रेडिट कार्ड, आदि, इन वर्गों को वित्तीय स्वतंत्रता प्रदान करते हैं। डिजिटल लेनदेन, मोबाइल बैंकिंग, और आधार आधारित योजनाओं से वंचित वर्ग भी बैंकिंग सुविधाओं का लाभ उठा रहे हैं। इससे बैंकिंग का क्षेत्र व्यापक हुआ है।
- **सरकार की योजनाओं का क्रियान्वयन :** सरकारी बैंक इस योजना के तहत होम लोन प्रदान करते हैं। इससे गरीब और मध्यम वर्ग के लोग अपने घर का सपना पूरा कर सकते हैं। प्रत्येक योजनाओं में वित्तीय सहायता प्रदान कर, सरकार नई उद्योगों और स्टार्टअप को बढ़ावा दे रही है। बैंक खाता खोलने, बीमा, पेंशन जैसी सुविधाओं से समाज का वित्तीय सशक्तिकरण हो रहा है। किसानों को ऋण, बीमा, और नई तकनीकों का प्रशिक्षण देकर कृषि क्षेत्र का विकास किया जा रहा है।
- **स्थिरता, भरोसा और आर्थिक सुरक्षा :** सरकारी बैंक बाजार में स्थिरता बनाए रखते हैं। संकट के समय सरकार और बैंक मिलकर स्थिति को संभालते हैं। कोविड-19 जैसे संकट में सरकारी बैंकों ने राहत पैकेज, ऋण स्थगन, और आर्थिक सहायता प्रदान की। आरबीआई और सरकार के नियामक कदम वित्तीय स्थिरता और ग्राहकों की सुरक्षा सुनिश्चित करते हैं। समीक्षा और सुधार के माध्यम से बैंकिंग में नैतिकता और पारदर्शिता को बढ़ावा दिया जा रहा है।
- **शिक्षा स्वास्थ्य और सामाजिक कल्याण :** बैंक शैक्षिक ऋण, स्वास्थ्य

बीमा, और पेंशन योजनाओं के माध्यम से सामाजिक कल्याण में योगदान देते हैं। शिक्षा ऋण से लाखों छात्रों को उच्च शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिला है । प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना और प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना के तहत करोड़ों लोगों को बीमा सुरक्षा मिली। अटल पेंशन योजना ने असंगठित क्षेत्र के श्रमिकों को वृद्धावस्था में सुरक्षा दी।

- **बुनियादी ढांचे और पूंजी बाजार का विकास :** बैंक सड़क, बिजली, परिवहन और सिंचाई परियोजनाओं को वित्तीय सहायता देकर बुनियादी ढांचे के निर्माण में योगदान देते हैं। म्यूचुअल फंड और कॉर्पोरेट बॉन्ड के माध्यम से निजी निवेश को प्रोत्साहित करते हैं, इससे औद्योगिक विकास और विदेशी निवेश को बल मिलता है।
- **वित्तीय स्थिरता और नियामक सहयोग :** बैंक रिज़र्व बैंक की मौद्रिक नीति को लागू करने में सहायक होते हैं, जिससे मुद्रास्फीति और ब्याज दरों पर नियंत्रण रहता है। वे साइबर सुरक्षा, डेटा गोपनीयता और ग्राहक संरक्षण के लिए नीतिगत सहयोग करते हैं।
- **कृषि और ग्रामीण विकास :** भारत की अर्थव्यवस्था का बड़ा हिस्सा कृषि और ग्रामीण क्षेत्रों पर आधारित है। इन क्षेत्रों का विकास देश की आर्थिक स्थिरता और सामाजिक समावेशन के लिए अनिवार्य है। बैंकों का मुख्य कार्य पूंजी संकलन, ऋण वितरण, वित्तीय सेवाएँ प्रदान करना और वित्तीय समावेशन को बढ़ावा देना है। इन कार्यों के माध्यम से बैंकों ने ग्रामीण और कृषि विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। बैंकों ने ग्रामीण इलाकों में शाखाएँ खोली हैं, जिससे वहां के लोगों को वित्तीय सेवाओं का लाभ मिल रहा है। इससे बैंकिंग की पहुंच बढ़ी है और वंचित वर्ग भी वित्तीय प्रणाली से जुड़ा है। आधार आधारित डिजिटल भुगतान, मोबाइल बैंकिंग जैसी सेवाओं ने दूर-दराज़ इलाकों में भी बैंकिंग को संभव बनाया है। इससे ग्राहक आसानी से ऋण, जमा, बीमा जैसी सेवाएँ ले सकते हैं। बैंकों द्वारा कृषकों को फसल ऋण, बीज ऋण, उर्वरक ऋण, और मशीनरी ऋण प्रदान किए जाते हैं। यह ऋण किसानों को अपनी फसल की बुवाई, उर्वरक, कीटनाशक, और मशीनरी की खरीद में मदद करता है। सरकार की योजनाओं के तहत बैंकों ने किसान कर्जमाफी, रियायती ब्याज दरें, और आसान पुनर्भुगतान विकल्प प्रदान किए हैं, जिससे किसानों की आर्थिक स्थिति मजबूत हुई है। बैंकों के माध्यम से किसान फसल बीमा करवा सकते हैं, जिससे प्राकृतिक आपदाओं, सूखे, बाढ़ आदि के कारण होने वाली हानि से सुरक्षा मिलती है। बैंक ग्रामीण युवाओं और उद्यमियों को स्वरोजगार, छोटे उद्योग, डेयरी, पोल्ट्री, और हस्तशिल्प जैसे व्यवसायों के लिए ऋण देते हैं। इससे रोजगार के अवसर बढ़ते हैं और ग्रामीण अर्थव्यवस्था मजबूत बनती है।
- **आर्थिक विकास में योगदान :** देश के समग्र आर्थिक विकास के लिए वित्तीय संसाधनों का सही प्रबंधन और उनका प्रभावी उपयोग आवश्यक है। सरकारी बैंकें (सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक) देश की आर्थिक गतिविधियों का समर्थन, विकासात्मक परियोजनाओं का वित्तपोषण, और वित्तीय समावेशन के लक्ष्य प्राप्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। ये बैंक सरकार की नीतियों और योजनाओं को लागू करने में भी सहायक हैं। सरकारी बैंक जनता से बचत, आवास, व्यापार आदि के लिए जमा राशि एकत्र करते हैं, जो फिर विभिन्न आर्थिक गतिविधियों में निवेशित की जाती है। ये बैंक उद्योग, कृषि, छोटे व्यवसाय, और व्यक्तिगत उपभोग के लिए ऋण प्रदान करते हैं, जिससे उत्पादन और उपभोग दोनों बढ़ते हैं। इससे रोजगार के अवसर भी बनते हैं।सरकारी बैंक बड़े उद्योग, इंफ्रास्ट्रक्चर, सड़क, बिजली, पानी आदि परियोजनाओं के लिए वित्तपोषण करते हैं। इससे बुनियादी ढाँचा मजबूत होता है और आर्थिक गतिविधियों को बढ़ावा मिलता है।बैंक कर संग्रह में भी भूमिका निभाते हैं, जिससे सरकार के राजस्व में वृद्धि होती है और वित्तीय अनुशासन बना रहता है।सरकारी बैंक जोखिम का प्रबंधन करते हैं, ताकि वित्तीय स्थिरता बनी रहे। वे नियामक निर्देशों का पालन करते हैं और जोखिम का सावधानीपूर्वक मूल्यांकन करते हैं। सरकार की सहायता से, ये बैंक वित्तीय संकट के समय भी स्थिर रहते हैं और देश की आर्थिक स्थिरता में योगदान देते हैं ।

वर्तमान स्थिति : आज भारत में बैंकिंग प्रणाली का विशाल नेटवर्क है जिसमें सार्वजनिक, निजी, विदेशी बैंकें और सहकारी बैंक शामिल हैं। डिजिटल बैंकिंग, मोबाइल बैंकिंग, और ऑनलाइन लेनदेन जैसी नई तकनीकों ने वित्तीय सेवाओं को अधिक सुविधाजनक और पारदर्शी बनाया है। भारत में बैंकिंग क्षेत्र आज एक सशक्त, डिजिटल और समावेशी प्रणाली बन चुका है। यह न केवल आर्थिक विकास को गति दे रहा है, बल्कि सामाजिक न्याय और वित्तीय साक्षरता को भी बढ़ावा दे रहा है। भारतीय बैंकिंग प्रणाली में सरकारी बैंक सबसे बड़े और सबसे अधिक भरोसेमंद माने जाते हैं। भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) के नियामक नियंत्रण में ये बैंक देश के सकल घरेलू उत्पाद (GDP) का बड़ा हिस्सा संभालते हैं। डिजिटल भुगतान, मोबाइल बैंकिंग, और ई-कोमर्स ने बैंकिंग को अधिक सुविधाजनक और पारदर्शी बना दिया है। यूपीआई, आधार, और भीम जैसी प्रणालियों ने वित्तीय समावेशन को बहुत बढ़ावा दिया है । भारतीय बैंकिंग क्षेत्र में सरकारी बैंकों की हिस्सेदारी लगभग 70% से अधिक है, जो उनकी व्यापक पहुंच व प्रभाव का संकेत है। ये बैंक भारत में हर स्तर पर आर्थिक गतिविधियों का संचालन करते हैं, चाहे वह उद्योग हो, कृषि हो, सेवा क्षेत्र हो या व्यक्तिगत वित्तीय सेवाएँ। भारतीय सरकारी बैंक मुख्यतः केंद्रीय सरकार और राज्य सरकारों के स्वामित्व में हैं।

भारत में बैंकिंग का भविष्य : भविष्य में डिजिटल बैंकिंग मुख्यधारा बनेगी। मोबाइल बैंकिंग, वॉयस-आधारित सेवाएँ, और ई-वॉलेट्स का प्रयोग बढ़ेगा। बैंक शाखाओं का महत्व घटेगा और ग्राहक डिजिटल माध्यम से ही अपनी सभी सेवाएँ प्राप्त कर सकेंगे। AI और मशीन लर्निंग के माध्यम से ग्राहक सेवा स्वचालित होगी। चैटबॉट्स, रियल-टाइम धोखाधड़ी की पहचान, और स्मार्ट एनालिटिक्स से बैंक अधिक प्रभावी ढंग से ग्राहक की जरूरतों को समझ सकेंगे। ब्लॉकचेन तकनीक से लेनदेन और डेटा की सुरक्षा मजबूत होगी। क्रिप्टोकरेंसी का संभावित प्रवेश भी वित्तीय प्रणाली में बदलाव ला सकता है, हालांकि सरकार की नियामकीय निगरानी जरूरी है। मोबाइल और आधार आधारित सेवाओं के माध्यम से दूर-दराज के इलाकों में भी बैंकिंग का विस्तार होगा। पर्यावरणीय मुद्दों को ध्यान में रखते हुए, हरित वित्त, सस्टेनेबल निवेश का ध्यान रखा जाएगा। बैंक पर्यावरण संरक्षण के प्रयासों में भी भाग लेंगे। आने वाले वर्षों में बैंकिंग का चेहरा और भी अधिक एआई-सक्षम, सुरक्षित और वैश्विक होगा।

उपसंहार

सरकारी बैंक देश के आर्थिक और सामाजिक विकास की आधारशिला हैं। इनका प्रभाव केवल वित्तीय क्षेत्र तक सीमित नहीं है, बल्कि यह समाज के सभी वर्गों के जीवन में बदलाव लाने का माध्यम हैं। सरकार और बैंक मिलकर निरंतर सुधार, नवाचार और पारदर्शिता के साथ राष्ट्र निर्माण में अपना योगदान दे रहे हैं। वे राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया में एक सक्रिय भागीदार हैं। यदि इनकी कार्यप्रणाली को और अधिक पारदर्शी, उत्तरदायी और तकनीकी रूप से सक्षम बनाया जाए, तो ये भारत को एक विकसित राष्ट्र बनाने की दिशा में निर्णायक भूमिका निभा सकते हैं।

बैंक केवल वित्तीय संस्थाएं नहीं हैं, बल्कि वे राष्ट्र निर्माण के स्तंभ हैं। उन्होंने भारत को आर्थिक रूप से सशक्त, सामाजिक रूप से समावेशी, और डिजिटल रूप से सक्षम बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आज जब भारत विश्वगुरु बनने की ओर अग्रसर है, तो बैंकों की भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो जाती है।

ईएसजी की महत्ता और बैंकर्स की भूमिका

भारती मणिवण्णन एस, मुख्य प्रबन्धक (संकाय), स्टाफ़ प्रशिक्षण केंद्र, तिरुवनंतपुरम

आज जब पूरी दुनिया जलवायु परिवर्तन, सामाजिक असमानता और कॉर्पोरेट पारदर्शिता जैसे मुद्दों से जूझ रही है, तो ईएसजी एक ऐसा शब्द बन गया है जो हर निवेशक, नीति निर्माता और वित्तीय संस्थान की प्राथमिकता में आ गया है।

ईएसजी का अर्थ है Environmental (पर्यावरणीय), Social (सामाजिक) और Governance (प्रशासनिक) – ये तीन स्तंभ अब किसी व्यवसाय, परियोजना या उधारी प्रस्ताव का मूल्यांकन करने के महत्वपूर्ण मानक बन चुके हैं। पहले जहाँ केवल लाभ-हानि, टर्नओवर, और कैश फ्लो देखा जाता था, अब इन सभी के साथ ईएसजी स्कोर भी एक निर्णायक भूमिका निभा रहा है।

ईएसजी का बढ़ता प्रभाव – क्यों जरूरी हो गया है यह विचार?

1. जलवायु परिवर्तन और पर्यावरणीय खतरे

तेजी से बढ़ते प्रदूषण, ग्लोबल वॉर्मिंग, जल संकट और जंगलों की कटाई ने हमें यह सोचने पर मजबूर कर दिया है कि अब व्यापार और निवेश सिर्फ लाभ के आधार पर नहीं, बल्कि उनके पर्यावरणीय प्रभाव के आधार पर भी तय होने चाहिए।

2. सामाजिक जिम्मेदारियां

आज के ग्राहक और निवेशक यह देखना चाहते हैं कि कंपनी किस तरह श्रमिकों से व्यवहार करती है, क्या लैंगिक समानता है, क्या वह स्थानीय समुदायों के साथ सकारात्मक संबंध रखती है।

3. प्रशासनिक पारदर्शिता

घोटालों और कॉर्पोरेट कदाचार के मामलों ने यह सिद्ध कर दिया है कि एक मजबूत शासन प्रणाली और पारदर्शिता के बिना संस्थाएं दीर्घकालिक नहीं बन सकतीं।

बैंकिंग क्षेत्र के लिए ईएसजी का महत्व

बैंक देश की वित्तीय धारा के वाहक हैं। वे यह तय करते हैं कि किसे पूंजी मिलेगी और किसे नहीं। इसलिए ईएसजी की दिशा में सबसे बड़ा प्रभाव बैंकिंग प्रणाली डाल सकती है।

बैंकर्स के लिए ईएसजी क्यों जरूरी है?

- **क्रेडिट जोखिम में वृद्धि:** जिन कंपनियों की पर्यावरणीय नीतियाँ खराब हैं, वे कानूनी मामलों या जनविरोध का शिकार बन सकती हैं।
- **प्रतिष्ठा जोखिम:** पर्यावरण या समाज को नुकसान पहुँचाने वाली परियोजनाओं को वित्तपोषण करना बैंक की छवि खराब कर सकता है।
- **नियमकीय जोखिम:** जैसे-जैसे RBI और अन्य नियामक ईएसजी रिपोर्टिंग को अनिवार्य बना रहे हैं, अनुपालन न करना बैंक पर भारी पड़ सकता है।
- **नई व्यवसायिक संभावनाएँ:** हरित ऋण, सौर ऊर्जा, ईवी फाइनेंस जैसी योजनाएँ नए ग्राहक खंड को आकर्षित कर सकती हैं।

ईएसजी लेंडिंग क्या है?

ईएसजी लेंडिंग का आशय है ऐसे ऋण निर्णय जिनमें पर्यावरण, समाज और शासन से संबंधित जोखिमों और अवसरों को ध्यान में रखा जाए। यह केवल पर्यावरण से जुड़े प्रोजेक्ट को फाइनेंस करना नहीं है, बल्कि किसी भी क्षेत्र में ईएसजी स्कोर के आधार पर क्रेडिट मूल्यांकन, ब्याज दर निर्धारण, और निगरानी प्रणाली को नया रूप देना है।

उदाहरण के रूप में:

- सौर ऊर्जा संयंत्र को फंडिंग देना।
- ईवी खरीदार को कम ब्याज पर लोन देना।
- ग्रीन बिल्डिंग सर्टिफिकेशन वाले प्रोजेक्ट को प्राथमिकता देना।
- एमएसएमई इकाइयों को ईएसजी प्रथाओं को अपनाने के लिए प्रोत्साहित करना।

आरबीआइ **का दृष्टिकोण – ईएसजी पर क्या कहता है हमारा नियामक?**

भारतीय रिजर्व बैंक ईएसजी को वित्तीय स्थिरता से जुड़ा मुद्दा मानता है। हाल के वर्षों में आरबीआइ ने ईएसजी से संबंधित कई पहलें की हैं:

1. चर्चा पत्र – जलवायु जोखिम और सतत वित्त (2022)

इसमें बैंकों और एनबीएफसी से यह अपेक्षा की गई कि वे अपने जोखिम प्रबंधन में जलवायु जोखिमों को शामिल करें, स्ट्रेस टेस्टिंग करें और ईएसजी पर डेटा रिपोर्ट करें।

2. प्रस्तावित मास्टर डायरेक्शन (2025)

इस निर्देश में संभवतः बैंकों को अनिवार्य रूप से ईएसजी रिपोर्टिंग, ग्रीन टैक्सोनॉमी को अपनाना और क्रेडिट मूल्यांकन में ईएसजी स्कोर को शामिल करना होगा।

3. एसईबीआइ (SEBI) की बीआरएसआर रिपोर्टिंग के साथ समन्वय

आरबीआइ ने एसईबीआइ की बीआरएसआर रिपोर्टिंग का समर्थन किया है और बैंकों से अनुरोध किया है कि वे बड़े कॉर्पोरेट ग्राहकों के ईएसजी प्रदर्शन का मूल्यांकन करें।

4. ग्रीन बॉन्ड्स को प्रोत्साहन

बैंकों को हरित बांड जारी करने, ईएसजी फंड्स में निवेश और हरित वित्त से संबंधित उत्पादों को विकसित करने के लिए प्रोत्साहित किया गया है।

बैंकर्स क्या करें? – एक कार्य योजना

1. ईएसजी को क्रेडिट मूल्यांकन प्रक्रिया में शामिल करें

ऋण आवेदन और अपरेजल फॉर्म में ईएसजी से संबंधित प्रश्न शामिल करें – जैसे ऊर्जा स्रोत, श्रमिक नीति, बोर्ड की संरचना आदि।

2. ईएसजी आधारित ऋण योजनाएँ लॉन्च करें

ग्रीन हाउसिंग लोन, सोलर पैनल इंस्टॉलेशन लोन, इलेक्ट्रिक वाहन ऋण, रेन वाटर हार्वेस्टिंग यूनिट लोन आदि।

3. एमएसएमई और ग्राहकों को ईएसजी पर शिक्षित करें

एमएसएमई को ईएसजी प्रथाओं का लाभ समझाएँ – जैसे बीमा प्रीमियम में कमी, निवेशकों की रुचि, दीर्घकालिक प्रतिस्पर्धा।

4. ईएसजी पर डेटा संग्रह और रिपोर्टिंग शुरू करें

अपने ग्राहकों के ईएसजी प्रदर्शन का ट्रैक रखें और समय-समय पर रिपोर्ट बनाएं।

5. कर्मचारियों को ईएसजी पर प्रशिक्षित करें

बैंक स्टाफ को ईएसजी की अवधारणा, इसकी प्रासंगिकता और इसे क्रेडिट प्रक्रिया में कैसे अपनाया जाए – इस पर नियमित प्रशिक्षण दें।

निष्कर्ष

ईएसजी केवल एक ट्रेंड नहीं, बल्कि **भविष्य की वित्तीय नींव** है। एक ऐसा युग आ चुका है जहाँ उधारी केवल बैलेंस शीट के आधार पर नहीं, बल्कि व्यवसाय की नैतिकता, सामाजिक जिम्मेदारी और पर्यावरणीय प्रभाव पर आधारित होगी।

बैंकर्स को अब केवल ऋणदाता नहीं, बल्कि **उत्तरदायी परिवर्तन निर्माता** बनना होगा। सही ईएसजी नीतियों को अपनाकर वे जोखिम कम कर सकते हैं, ग्राहक विश्वास बढ़ा सकते हैं, और हरित अर्थव्यवस्था में नेतृत्व कर सकते हैं।

" ईएसजी अपनाएं – वित्तीय स्थिरता, पर्यावरणीय सुरक्षा और सामाजिक समावेशिता के साथ विकास का नया रास्ता बनाएं।"

विकास: एक आत्ममंथन

बिश्वजीत चंद, सहायक प्रबंधक, क्षेत्रीय कार्यालय रांची

विकास—यह शब्द जितना सरल प्रतीत होता है, उतना ही गूढ़ और बहुआयामी है। आधुनिक युग में विकास को प्रायः भौतिक प्रगति, आर्थिक वृद्धि, तकनीकी उन्नति और शहरी विस्तार के रूप में देखा जाता है। ऊँची इमारतें, चौड़ी सड़कें, तेज़ इंटरनेट, बढ़ता सकल घरेलू उत्पाद (GDP) और उपभोक्तावाद—इन सबको विकास का प्रतीक मान लिया गया है। किंतु क्या यही वास्तविक विकास है? क्या मनुष्य का आंतरिक संतुलन, नैतिकता, सामाजिक समरसता और प्रकृति के साथ सामंजस्य भी विकास का हिस्सा नहीं होना चाहिए? आज आवश्यकता है कि हम विकास की इस एकांगी परिभाषा पर आत्ममंथन करें और यह समझें कि वास्तविक विकास क्या है और किस दिशा में होना चाहिए।

विकास की पारंपरिक अवधारणा

पिछले कुछ दशकों में विकास को मुख्यतः आर्थिक दृष्टि से मापा गया है। किसी देश की प्रगति का मूल्यांकन उसकी प्रति व्यक्ति आय, औद्योगिक उत्पादन, निर्यात-आयात, विदेशी निवेश और तकनीकी क्षमता के आधार पर किया जाता रहा है। इस दृष्टिकोण से देखें तो कई देश तीव्र गति से आगे बढ़े हैं। भारत भी उनमें से एक है, जिसने सूचना प्रौद्योगिकी, अंतरिक्ष विज्ञान, डिजिटल भुगतान और बुनियादी ढांचे में उल्लेखनीय उपलब्धियाँ प्राप्त की हैं।

परंतु इस आर्थिक प्रगति के साथ कई प्रश्न भी जन्म लेते हैं—क्या इस विकास का लाभ समाज के सभी वर्गों तक पहुँचा है? क्या ग्रामीण और शहरी जीवन के बीच की खाई कम हुई है या और गहरी? क्या विकास ने मानव को अधिक सुखी, संतुष्ट और सुरक्षित बनाया है?

भौतिक विकास बनाम मानवीय विकास

भौतिक विकास जीवन को सुविधाजनक तो बनाता है, परंतु वह जीवन को अर्थपूर्ण नहीं बनाता। आज मनुष्य के पास संसाधनों की कमी नहीं है, परंतु समय, शांति और संतोष की भारी कमी है। तेज़ जीवनशैली, प्रतिस्पर्धा और उपभोग की होड़ ने व्यक्ति को भीतर से खोखला कर दिया है।

मानवीय विकास का अर्थ है—शिक्षा, स्वास्थ्य, समानता, सम्मान, स्वतंत्रता और आत्मसम्मान। संयुक्त राष्ट्र का मानव विकास सूचकांक (HDI) भी इसी विचार को पुष्ट करता है कि केवल आय ही नहीं, बल्कि जीवन की गुणवत्ता भी विकास का मापदंड होनी चाहिए। जब तक विकास मनुष्य को बेहतर इंसान नहीं बनाता, तब तक वह अधूरा ही रहेगा।

तकनीक और विकास: वरदान या अभिशाप?

तकनीक ने मानव जीवन को असाधारण रूप से आसान बना दिया है। आज एक बटन दबाते ही दुनिया हमारी उँगलियों पर है। शिक्षा, स्वास्थ्य, व्यापार और संचार—हर क्षेत्र में तकनीक ने क्रांति ला दी है। किंतु यही तकनीक जब नियंत्रण से बाहर होती है, तब सामाजिक अलगाव, मानसिक तनाव, बेरोज़गारी और निजता का हनन भी जन्म लेता है।

सोशल मीडिया ने हमें जोड़ने का दावा किया, लेकिन वास्तव में हमें भीतर से अकेला बना दिया। आभासी दुनिया में व्यस्त मनुष्य वास्तविक संबंधों से दूर होता जा रहा है। अतः विकास के साथ विवेक और संयम अनिवार्य है।

पर्यावरण और विकास का टकराव

विकास की अंधी दौड़ ने प्रकृति को सबसे अधिक नुकसान पहुँचाया है। जंगलों की कटाई, नदियों का प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन और जैव विविधता का ह्रास—ये सभी तथाकथित विकास के दुष्परिणाम हैं। पृथ्वी केवल संसाधनों का भंडार नहीं, बल्कि जीवन का आधार है।

सच्चा विकास वही है जो प्रकृति के साथ संतुलन बनाए रखे। सतत विकास की अवधारणा इसी सोच से जन्मी है—ऐसा विकास जो वर्तमान की आवश्यकताओं को पूरा करे, पर भविष्य की पीढ़ियों के अधिकारों से समझौता न करे।

सामाजिक असमानता और विकास

विकास का एक बड़ा विरोधाभास यह है कि यह असमानता को कम करने के बजाय कई बार बढ़ा देता है। अमीर और अमीर होता जा रहा है, जबकि गरीब संघर्षरत है। शिक्षा, स्वास्थ्य और अवसरों तक समान पहुँच का अभाव सामाजिक असंतोष को जन्म देता है।

यदि विकास का लाभ समाज के अंतिम व्यक्ति तक नहीं पहुँचता, तो वह विकास नहीं बल्कि असंतुलन है। महात्मा गांधी का "अंत्योदय" का सिद्धांत आज भी उतना ही प्रासंगिक है—सबसे अंतिम व्यक्ति के उत्थान में ही सच्चा विकास निहित है।

नैतिकता और मूल्यबोध का ह्रास

आज की विकासशील दुनिया में नैतिक मूल्यों का क्षरण एक गंभीर चिंता का विषय है। सफलता की परिभाषा केवल धन और पद तक सीमित हो गई है। ईमानदारी, करुणा, सहानुभूति और सेवा जैसे मूल्य हाशिए पर चले गए हैं।

जब विकास नैतिकता से विहीन हो जाता है, तब वह समाज को भीतर से खोखला कर देता है। इसलिए आवश्यक है कि शिक्षा प्रणाली में नैतिक शिक्षा, सामाजिक उत्तरदायित्व और मानवीय संवेदनाओं को पुनः केंद्र में लाया जाए।

आत्ममंथन की आवश्यकता

आज का समय आत्ममंथन का है—व्यक्ति के स्तर पर भी और समाज के स्तर पर भी। हमें यह प्रश्न स्वयं से पूछना होगा कि हम किस दिशा में जा रहे हैं? क्या हमारी प्रगति हमें बेहतर इंसान बना रही है? क्या हम अगली पीढ़ी को एक सुरक्षित, स्वच्छ और संतुलित दुनिया सौंप पाएँगे?

आत्ममंथन हमें अपनी प्राथमिकताओं पर पुनर्विचार करने का अवसर देता है। यह हमें सिखाता है कि विकास केवल बाहरी चमक नहीं, बल्कि आंतरिक स्थिरता भी है।

भारतीय संदर्भ में विकास

भारत जैसे विविधताओं से भरे देश में विकास की परिभाषा और भी व्यापक हो जाती है। यहाँ भाषा, संस्कृति, परंपरा और जीवनशैली में विविधता है। इसलिए विकास का मॉडल भी समावेशी और लचीला होना चाहिए।

"सबका साथ, सबका विकास" तभी संभव है जब नीतियाँ ज़मीनी स्तर पर प्रभावी हों। ग्राम विकास, महिला सशक्तिकरण, शिक्षा की गुणवत्ता, स्वास्थ्य सुविधाएँ और रोजगार—ये सभी विकास की रीढ़ हैं।

युवाओं की भूमिका

युवा किसी भी राष्ट्र की सबसे बड़ी शक्ति होते हैं। यदि युवा जागरूक, नैतिक और जिम्मेदार हों, तो राष्ट्र का भविष्य उज्ज्वल होता है। आज के युवाओं को केवल नौकरी पाने तक सीमित न रहकर समाज निर्माण में सक्रिय भूमिका निभानी होगी।

निष्कर्ष

विकास एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है, कोई अंतिम लक्ष्य नहीं। यह तभी सार्थक है जब वह मानवता, प्रकृति और नैतिकता के साथ संतुलन बनाकर आगे बढ़े। केवल भौतिक उन्नति हमें संपूर्ण नहीं बना सकती; इसके लिए आत्मिक, सामाजिक और नैतिक विकास भी उतना ही आवश्यक है।

आज आवश्यकता है एक ऐसे विकास मॉडल की, जो मनुष्य को केंद्र में रखे, प्रकृति का सम्मान करे और आने वाली पीढ़ियों के लिए आशा का मार्ग प्रशस्त करे। यही सच्चा विकास है—और यही आत्ममंथन का सार।

जब ग्राहक मुस्कुराता है: हिंदी में बैंकिंग की सफलता

निखील रविंद्र मेश्राम, ग्राहक सेवा सहयोगी, नागपुर क्षेत्र

बैंकिंग को अक्सर केवल आँकड़ों, खातों, ऋण और ब्याज दरों से जोड़कर देखा जाता है। लेकिन यदि गहराई से समझा जाए, तो बैंकिंग का वास्तविक उद्देश्य ग्राहक का विश्वास और संतोष अर्जित करना होता है। जब कोई ग्राहक बैंक से अपनी समस्या का समाधान पाकर संतुष्ट होकर बाहर निकलता है और उसके चेहरे पर मुस्कान होती है, तब वास्तव में बैंकिंग सफल होती है। और इस मुस्कान के पीछे सबसे सशक्त माध्यम है — सरल, सहज और प्रभावी सम्प्रेषण । इस सम्प्रेषण के लिए हिन्दी से अधिक सशक्त अन्य कोई भाषा हो सकती है भला ।

हिंदी: ग्राहक और बैंक के बीच सेतु

भारत जैसे बहुभाषी देश में अधिकांश ग्राहक हिंदी या हिंदी से जुड़ी भाषाओं में अपनी बात सहज रूप से रख पाते हैं। जब बैंक उनसे उनकी अपनी भाषा में संवाद करता है, तो ग्राहक न केवल समझता है, बल्कि जुड़ाव भी महसूस करता है। यही कारण है कि हिंदी बैंकिंग केवल राजभाषा का पालन नहीं, बल्कि ग्राहक सेवा का सशक्त माध्यम बन चुकी है।

मेरे स्वयं के बैंकिंग अनुभव में कई ऐसे अवसर आए हैं जब किसी ग्रामीण या वरिष्ठ नागरिक ग्राहक को अंग्रेज़ी शब्दावली समझने में कठिनाई होती थी। जैसे ही उनसे हिंदी में बातचीत की गई, उनके चेहरे पर तुरंत राहत और विश्वास की झलक दिखाई दी। कई बार तो ग्राहक स्वयं कह देते हैं —

"अब समझ में आ गया साहब, धन्यवाद।"

यही वह क्षण होता है, जब महसूस होता है कि हिंदी वास्तव में ग्राहक को मुस्कुराने का कारण बनती है।

इण्डियन ओवरसीज़ बैंक (आइओबी) में हिंदी की भूमिका

इण्डियन ओवरसीज़ बैंक जैसे सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक हमेशा से समावेशी बैंकिंग के पक्षधर रहे हैं। आइओबी में हिंदी का प्रयोग केवल फाइलों या परिपत्रों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह ग्राहक संपर्क, जागरूकता शिविर, ऋण परामर्श और डिजिटल बैंकिंग तक विस्तारित है।

आइओबी की शाखाओं में जब ग्राहकों को खाता खोलने, केवाईसी प्रक्रिया, सरकारी योजनाओं या डिजिटल सेवाओं की जानकारी सरल हिंदी में दी जाती है, तो न केवल शिकायतें कम होती हैं, बल्कि विश्वास भी बढ़ता है। व्यक्तिगत रूप से यह देखा गया है कि जब ग्राहक को उसकी समस्या का समाधान उसकी भाषा में मिलता है, तो वह बैंक को दोबारा चुनता है और दूसरों को भी सुझाव देता है। यही सफल बैंकिंग की पहचान है।

सरकारी पहल और हिंदी बैंकिंग

भारत सरकार द्वारा चलाई जा रही अनेक योजनाएँ जैसे—

प्रधानमंत्री जन-धन योजना, प्रधानमंत्री मुद्रा योजना, अटल पेंशन योजना, पीएमजेजेबीवाई, पीएमएसबीवाई, डीबीटी आदि — आम नागरिकों से सीधे जुड़ी हैं। इन योजनाओं की सफलता का एक बड़ा कारण यह है कि इनकी जानकारी हिंदी और स्थानीय भाषाओं में दी जाती है।

सरकार यह स्पष्ट रूप से मानती है कि वित्तीय साक्षरता तब ही प्रभावी होगी, जब जानकारी ग्राहक की भाषा में हो। इसी सोच को बैंक भी आगे बढ़ा रहे हैं। पोस्टर, पंपलेट, एसएमएस, आइवीआर, मोबाइल ऐप — हर जगह हिंदी का बढ़ता प्रयोग इस बात का प्रमाण है कि सरकार और बैंक मिलकर ग्राहक को केंद्र में रखकर काम कर रहे हैं।

नराकास और राजभाषा विभाग का मार्गदर्शन

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास) का योगदान और राजभाषा विभाग का मार्गदर्शन हिंदी बैंकिंग को दिशा देने में अत्यंत महत्वपूर्ण है। नराकास के माध्यम से बैंकों को यह मंच मिलता है जहाँ राजभाषा के प्रयोग, प्रशिक्षण, निरीक्षण और प्रेरणा पर गंभीर चर्चा होती है।

नराकास बैठकों और कार्यक्रमों से यह समझ विकसित होती है कि हिंदी का प्रयोग केवल लक्ष्य पूर्ति नहीं, बल्कि सेवा गुणवत्ता सुधार का साधन है। हिंदी कार्यशालाएँ, निबंध प्रतियोगिताएँ, हिंदी पखवाड़ा — ये सभी गतिविधियाँ कर्मचारियों में भाषा के प्रति आत्मविश्वास और संवेदनशीलता बढ़ाती हैं।

कई बार नराकास बैठकों में यह अनुभव साझा किया जाता है कि कैसे एक छोटा-सा हिंदी संवाद किसी बड़े विवाद या शिकायत को टाल देता है। यही नराकास का वास्तविक ज्ञान और उद्देश्य है।

डिजिटल युग में हिंदी बैंकिंग

आज बैंकिंग तेजी से डिजिटल हो रही है। मोबाइल बैंकिंग, इंटरनेट बैंकिंग, यूपीआई, एटीएम और सीआरएम हर जगह तकनीक का वर्चस्व है। लेकिन तकनीक तब ही सफल है, जब वह ग्राहक के लिए सरल हो। हिंदी इंटरफेस और हिंदी संदेशों ने डिजिटल बैंकिंग को आमजन के लिए सुलभ बनाया है।

जब कोई ग्राहक अपने मोबाइल पर हिंदी में बैलेंस देख पाता है, या एटीएम पर हिंदी विकल्प चुनता है, तो वह तकनीक से डरता नहीं, बल्कि उसे अपनाता है। और यही अपनापन ग्राहक की मुस्कान का कारण बनता है।

हिंदी: नियम नहीं, संवेदनशीलता

यह मानना गलत होगा कि हिंदी केवल एक नियम या दायित्व है। वास्तव में हिंदी संवेदनशीलता, सम्मान और सेवा भाव का प्रतीक है। जब बैंक कर्मचारी ग्राहक की भाषा में बात करते हैं, तो वह उसे यह संदेश देता है कि

"आप महत्वपूर्ण हैं।"

थोड़ा-सा केजुअल कहें तो —

अगर बैंक की भाषा ग्राहक की समझ में नहीं आएगी, तो चाहे सेवा कितनी भी अच्छी हो, ग्राहक खुश नहीं होगा। और अगर भाषा समझ में आ गई, तो छोटी-सी सेवा भी बड़ी लगने लगती है।

उपसंहार

अंततः कहा जा सकता है कि जब ग्राहक मुस्कुराता है, तभी हिंदी बैंकिंग वास्तव में सफल होती है। यह मुस्कान किसी लक्ष्य, किसी रिपोर्ट या किसी निरीक्षण से नहीं आती, बल्कि संवेदनशील संवाद, सरल भाषा और सेवा भाव से आती है।

इण्डियन ओवरसीज़ बैंक जैसे बैंक, सरकार की योजनाएँ, नराकास का मार्गदर्शन और कर्मचारियों का समर्पण — ये सभी मिलकर हिंदी बैंकिंग को सशक्त बना रहे हैं। हिंदी न केवल राजभाषा है, बल्कि विश्वास की भाषा है।

और जब बैंक की भाषा विश्वास बन जाए,

तो ग्राहक की मुस्कान अपने-आप खिल उठती है।

ज्ञान के मोती

- जीवन एक नदी है – बहते रहो, रुकोगे तो कीचड़ जम जाएगा।
- हर सुबह एक नया मौका है, पुरानी शाम को साथ मत ले जाना।
- अच्छे लोग कम मिलते हैं, इसलिए अच्छा बनना कभी मत छोड़ना – चाहे दुनिया हँसे।
- प्यार में जीत-हार नहीं होती, बस समझ और विश्वास बढ़ता है।
- जो तुम्हें नीचे गिराए, उसे छोड़ दो; जो ऊपर उठाए, उसे थाम लो।
- डर सबसे बड़ा दुश्मन है, लेकिन उससे लड़ने वाला सबसे बड़ा योद्धा बन जाता है।
- मुश्किलें तुम्हें तोड़ने नहीं आतीं, बल्कि नया रूप देने आती हैं।
- खुशी बाहर की चीजों में नहीं, मन की शांति में बसती है।
- जो मिला उसे गिनो, जो नहीं मिला उसे भूल जाओ – यही खुशी का फॉर्मूला है।
- छोटी-छोटी खुशियाँ इकट्ठी करके बड़ा जीवन बनता है।
- समय सब कुछ ठीक कर देता है, बस तुम्हें सब्र रखना पड़ता है।
- जल्दबाज़ी में लिया फैसला अक्सर पछतावे का कारण बनता है।
- जो धैर्य रखता है, वही असली जीत का स्वाद चखता है।
- सबसे बड़ी क्रांति तब होती है, जब तुम खुद को बदलने का फैसला लेते हो।
- खुद से बात करो, खुद को समझो – क्योंकि तुम्हारा सबसे अच्छा दोस्त और सबसे सच्चा गुरु खुद तुम ही हो।
- जो चुपके से बदलाव लाता है, वही सबसे बड़ा क्रांतिकारी होता है।
- सपने देखना आसान है, लेकिन उन्हें जिंदा रखना असली कला है।
- दुनिया बदलने से पहले, अपना सोचने का तरीका बदलो।
- जो डरता है वो कभी उड़ नहीं सकता, जो उड़ता है वो कभी डरता नहीं।
- मेहनत का फल मीठा लगता है, क्योंकि वो पसीने से सींचा होता है।
- रिश्ते टूटते नहीं, बस उनकी कीमत समझ आ जाती है।
- खुद को सबसे पहले माफ करना सीखो, फिर दुनिया से माफी मांगने की जरूरत नहीं पड़ेगी।
- असली ताकत शोर में नहीं, चुप्पी में छिपी होती है।
- जो आज तुम्हें छोटा लगता है, कल वही तुम्हारी सबसे बड़ी ताकत बनेगा।
- समय बीतता है, लेकिन अच्छे कर्म कभी नहीं बीतते।
- हारने से डरने वाले कभी जीत नहीं पाते।
- जो इंसान खुद से ईमानदार है, वो दुनिया से कभी हार नहीं मानता। नई सुबह का मतलब है – पुरानी रात को अलविदा कहना।
- लक्ष्य बड़ा हो तो रास्ते खुद-ब-खुद छोटे पड़ जाते हैं।

राजभाषा प्रश्नोत्तरी के उत्तर

1. (ख)	2. (क)	3. (ख)	4. (ख)	5. (ख)
6. (ग)	7. (ग)	8. (ख)	9. (ग)	10. (क)
11. (ख)	12. (क)	13. (ग)	14. (क)	15. (ख)

साइबर अपराध : चुनौतियाँ व सुरक्षा

मुकुल व्यास, सहायक प्रबंधक, क्षेत्रीय कार्यालय मेरठ

हमारे फोन पर मैसेज में एक लिंक आता है और हम जिज्ञासा स्वरूप उसपर क्लिक कर देते हैं और मिनटों में हमारी सारी निजी जानकारी, हमारा बैंक विवरण आदि सबकुछ साइबर अपराधियों के हाथ लग जाता है, जिसका वह पूरा फायदा उठाते हैं। हम जितनी तेज़ी से डिजिटल दुनिया की ओर बढ़ रहे हैं, ठीक उतनी ही तेज़ी से साइबर अपराध की संख्या में भी वृद्धि हो रही है। जिस गति से तकनीक ने उन्नति की है, उसी गति से मनुष्य की इंटरनेट पर निर्भरता भी बढ़ी है। एक ही जगह पर बैठकर इंटरनेट के ज़रिये मनुष्य की पहुँच, विश्व के हर कोने तक आसान हुई है। आज के समय में हर वो चीज़ जिसके विषय में इंसान सोच सकता है, उस तक उसकी पहुँच इंटरनेट के माध्यम से हो सकती है, जैसे कि सोशल नेटवर्किंग, ऑनलाइन शॉपिंग, डेटा स्टोर करना, गेमिंग, ऑनलाइन स्टडी, ऑनलाइन जॉब इत्यादि। आज के समय में इंटरनेट का उपयोग लगभग हर क्षेत्र में किया जाता है। इंटरनेट के विकास और इसके संबंधित लाभों के साथ साइबर अपराधों की अवधारणा भी विकसित हुई है। वर्तमान में भारत की बड़ी आबादी सोशल नेटवर्किंग साइट्स का उपयोग करती है। भारत में सोशल नेटवर्किंग साइट्स के उपयोग के प्रति लोगों में जानकारी का अभाव है। इसके साथ ही अधिकतर सोशल नेटवर्किंग साइट्स के सर्वर विदेश में हैं, जिससे भारत में साइबर अपराध घटित होने की स्थिति में इनकी जड़ तक पहुँच पाना कठिन होता है।

साइबर अपराध विभिन्न रूपों में किये जाते हैं। कुछ साल पहले, इंटरनेट के माध्यम से होने वाले अपराधों के बारे में जागरूकता का अभाव था। साइबर अपराधों के मामलों में भारत भी उन देशों से पीछे नहीं है, जहाँ साइबर अपराधों की घटनाओं की दर भी दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। साइबर अपराध के मामलों में एक साइबर अपराधी, किसी उपकरण का उपयोग, उपयोगकर्ता की व्यक्तिगत जानकारी, गोपनीय व्यावसायिक जानकारी, सरकारी जानकारी या किसी डिवाइस को अक्षम करने के लिये कर सकता है। उपरोक्त सूचनाओं को ऑनलाइन बेचना या खरीदना भी एक साइबर अपराध है।

हाल ही में, भारतीय साइबर अपराध समन्वय केंद्र (I4C), जो गृह मंत्रालय के अंतर्गत कार्य करता है, ने भारतीय नागरिकों को लक्षित करने वाले वित्तीय साइबर धोखाधड़ी के मामलों में तीव्र वृद्धि की रिपोर्ट दी है, जिनका अधिकांश स्रोत दक्षिण-पूर्व एशियाई देश हैं।

बढ़ते वित्तीय नुकसान: 2025 की पहली छमाही में भारत को साइबर धोखाधड़ी के कारण प्रति माह औसतन ₹1,000 करोड़ का नुकसान हुआ, जो कुल ₹7,000 करोड़ तक पहुँच गया। I4C के अनुसार, वर्ष 2025 में संभावित वार्षिक नुकसान ₹1.2 लाख करोड़ (₹1.2 ट्रिलियन) से अधिक हो सकता है, जो भारत की जीडीपी का लगभग 0.7% है।

धोखाधड़ी (स्कैम) की उत्पत्ति और प्रकृति: भारतीय नागरिकों को लक्षित करने वाली 50% से अधिक साइबर धोखाधड़ी दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों जैसे कि कंबोडिया, म्याँमार, वियतनाम, लाओस और थाईलैंड से संचालित हो रही हैं। ये धोखाधड़ी मुख्यतः उच्च-सुरक्षा परिसरों से संचालित की जाती हैं।

प्रमुख धोखाधड़ी के प्रकारों में शामिल हैं: शेयर बाज़ार/निवेश धोखाधड़ी, डिजिटल अरेस्ट स्कैम, कार्य-आधारित और निवेश-आधारित धोखाधड़ी।

भारतीय नागरिकों सहित पीड़ितों को फर्जी नौकरी प्रस्तावों के माध्यम से मानव तस्करी का शिकार बनाया जाता है और उन्हें दुबई, चीन, थाईलैंड जैसे देशों के माध्यम से साइबर धोखाधड़ी में लगाया जाता है।

संरचनात्मक खामियाँ एवं प्रवर्तन: भारत के साइबर धोखाधड़ी पारिस्थितिकी तंत्र का दुरुपयोग के कारणों में डिजिटल बैंकिंग लेनदेन में खामियाँ, टेलीकॉम सेक्टर में पीओएस एजेंटों द्वारा फर्जी सिम कार्ड जारी करना, आव्रजन में कमज़ोर सत्यापन प्रक्रियाएँ, आदि शामिल हैं, जिससे गुमनाम और सीमापार साइबर अपराध संभव हो पाते हैं।

I4C की स्थापना गृह मंत्रालय द्वारा वर्ष 2020 में की गई थी, जिसका उद्देश्य साइबर अपराधों (विशेष रूप से वित्तीय धोखाधड़ी) के लिये एक समन्वित और समग्र प्रतिक्रिया प्रदान करना है।

I4C का मुख्य उद्देश्य राष्ट्रीय नोडल एजेंसी के रूप में कार्य करना, जो साइबर अपराधों की निगरानी, रोकथाम और जाँच में समन्वय करना, विशेषकर महिलाओं, बच्चों और महत्त्वपूर्ण अवसंरचना को लक्षित करने वाले अपराधों के मामले में, प्रारंभिक चेतावनी प्रणाली विकसित करना और प्रवृत्ति विश्लेषण, पैटर्न की पहचान तथा डेटा साझा करने की सुविधा प्रदान करना'; साइबर अपराध की शिकायत दर्ज कराने की सुविधा प्रदान करना एवं साइबर स्वच्छता तथा धोखाधड़ी की रोकथाम पर जन-जागरूकता बढ़ाना; राज्यों/ केंद्रशासित प्रदेशों को साइबर फॉरेंसिक और जाँच में पुलिस, अभियोजकों और न्यायिक अधिकारियों की क्षमता निर्माण में सहायता देना है।

साइबर धोखाधड़ी वे आपराधिक गतिविधियाँ हैं, जो डिजिटल प्रौद्योगिकी (इंटरनेट) का उपयोग करके व्यक्तियों या संस्थानों को वित्तीय नुकसान पहुँचाने हेतु की जाती हैं। ये साइबर सुरक्षा, डिजिटल प्लेटफॉर्म या मानव व्यवहार की कमज़ोरियों का फायदा उठाकर धन, डेटा या पहचान की चोरी करते हैं।

प्रकार	विवरण
डिजिटल गिरफ्तारी	पुलिस या आयकर अधिकारी बनकर डराकर धन वसूली करना।
ऑनलाइन जॉब/कार्य-आधारित धोखाधड़ी	घर बैठे कार्य के फर्जी प्रस्ताव और अग्रिम भुगतान की मांग।
मालवेयर	कंप्यूटर पर नियंत्रण पाने हेतु व्यक्तिगत जानकारी चुराने वाला सॉफ्टवेयर।
रैनसमवेयर	फाइलों को एन्क्रिप्ट कर उन्हें खोलने के बदले फिरौती माँगना (जैसे: 2016 का WannaCry हमला)।
फिशिंग	भरोसेमंद दिखने वाले ईमेल के ज़रिये उपयोगकर्त्ता को फर्जी लिंक पर क्लिक कराकर संवेदनशील जानकारी हासिल करना (जैसे: क्रेडिट कार्ड नंबर)।
साइबर बुलीइंग	किसी व्यक्ति को धमकी देना, मानसिक रूप से परेशान करना या ब्लैकमेल करना।
साइबर जासूसी	संवेदनशील डेटा, निजी जानकारी या बौद्धिक संपदा तक पहुँच प्राप्त करने के लिये नेटवर्क को निशाना बनाना।
बिज़नेस ईमेल समझौता	वैध ईमेल हैक कर सप्लायर, कर्मचारी या टैक्स अधिकारियों की पहचान में धोखा देना (वाइट कॉलर अपराध)।
डेटिंग हुडविंक्स	डेटिंग साइट्स/ऐप्स का उपयोग कर भावनात्मक जुड़ाव के ज़रिये निजी जानकारी हासिल करना।
एटीएम/पीओएस धोखाधड़ी	कार्ड डिटेल्स की चोरी या अनधिकृत लेनदेन (स्किमिंग)।

ऐसे मामलों में व्यक्तिगत नुकसान जैसे अनधिकृत वित्तीय लेनदेन, खाते तक पहुँच खोना और निजी डेटा का दुरुपयोग कर ब्लैकमेल। व्यावसायिक जोखिम जैसे कानूनी दंड, नियामक जुर्माना और ग्राहक डेटा लीक होने पर ब्रांड की विश्वसनीयता और बाज़ार मूल्य में गिरावट। राष्ट्रीय सुरक्षा को खतरा जैसे साइबर उल्लंघनों द्वारा रक्षा और महत्त्वपूर्ण सूचना प्रणालियों को निशाना बनाया जाना आदि कई नुकसान शामिल हैं।

साइबर सुरक्षा पर वैश्विक पहल करते हुए बुडापेस्ट कन्वेंशन ऑन साइबरक्राइम संधि की गई। यह साइबर अपराध से निपटने के लिये बना पहला अंतरराष्ट्रीय संधि-पत्र है, जो कानूनी समरूपता (legal harmonization), जाँच में सहयोग (investigative cooperation) और क्षमता निर्माण को बढ़ावा देता है। यह 1 जुलाई, 2004 से लागू हुआ था। भारत इस संधि का पक्षकार नहीं है।

इंटरनेट गवर्नेंस फोरम : आईजीएफ संयुक्त राष्ट्र के अंतर्गत एक बहु-हितधारक मंच है, जो इंटरनेट गवर्नेंस और साइबर सुरक्षा से संबंधित सार्वजनिक नीति के मुद्दों पर सरकारों, निजी क्षेत्र, शिक्षाविदों और नागरिक समाज के बीच संवाद को बढ़ावा देता है।

भारत में साइबर सुरक्षा ढाँचे को मज़बूत करने के लिए:

अवसंरचना एवं कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित सुरक्षा : डिजिटल अवसंरचना को मज़बूत किया जाना चाहिये, जिसमें फायरवॉल, नियमित सॉफ्टवेयर/हार्डवेयर अपडेट तथा कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित खतरा पहचान प्रणाली शामिल हो।

AI-आधारित उपकरणों को रैनसमवेयर की पूर्व-भविष्यवाणी, घटनाओं की त्वरित प्रतिक्रिया, और फॉरेंसिक विश्लेषण में सक्षम बनाया जाना चाहिये।

साइबर जागरूकता एवं साक्षरता: ग्रामीण समुदायों, युवाओं और वरिष्ठ नागरिकों को लक्षित करते हुए स्थानीय भाषाओं में राष्ट्रव्यापी साइबर साक्षरता कार्यक्रम शुरू किये जाएँ।

स्कूलों और विश्वविद्यालयों में साइबर सुरक्षा शिक्षा को शामिल किया जाए, ताकि प्रारंभिक स्तर से डिजिटल समुत्थानशीलता विकसित हो सके। इसके लिए सुरक्षित डिजिटल अवसंरचना और प्रशिक्षित स्टाफ की उपलब्धता सुनिश्चित की जाए।

संस्थागत सुधार एवं ऑडिट तंत्र: बैंकिंग, स्वास्थ्य सेवा और उपयोगिता क्षेत्रों जैसे महत्त्वपूर्ण क्षेत्रों में अनिवार्य साइबर सुरक्षा ऑडिट, तनाव परीक्षण (stress tests) और कर्मचारी तैयारियों का मूल्यांकन किया जाना चाहिये।

ज़िला-स्तरीय साइबर सुरक्षा इकाइयाँ स्थापित की जाएँ जो स्थानीय खतरों से निपटने और CERT-In के साथ समन्वय कर सकें।

कॉर्पोरेट एवं बैंकिंग सुरक्षा उपाय: व्यवसायों और बैंकों में दो-चरणीय प्रमाणीकरण (2FA), डेटा एन्क्रिप्शन और सतत् निगरानी प्रणाली को अनिवार्य किया जाए।

वित्तीय संस्थानों को संदिग्ध लेनदेन पर नज़र रखनी चाहिये, विदेशी आइपी लॉगिन का पता लगाना चाहिये तथा चोरी किये गए धन को क्रिप्टोकरेंसी में बदलने से रोकना चाहिये।

नागरिकों को सुरक्षित डिजिटल व्यवहार अपनाने के लिये प्रेरित किया जाना चाहिए, जैसे: संदिग्ध संचार (ईमेल, कॉल, SMS आदि) से बचना, मज़बूत एवं अद्वितीय पासवर्ड का प्रयोग, सुरक्षा चेतावनियों को नज़रअंदाज़ न करना। इससे व्यक्तिगत स्तर पर साइबर धोखाधड़ी की भेद्यता में कमी लाई जा सकती है।

हिंदी सिनेमा के 'ही-मैन' धर्मेंद्र

अनिरुद्ध पुरी, प्रबंधक, लुधियाना क्षेत्र

भारतीय सिनेमा के इतिहास में कुछ व्यक्तित्व ऐसे होते हैं जो केवल सफल कलाकार नहीं होते, बल्कि अपने समय की आत्मा बन जाते हैं। धर्मेंद्र ऐसा ही एक नाम है। वे सिर्फ परदे पर दिखाई देने वाले नायक नहीं रहे, बल्कि आम भारतीय के सपनों, संघर्षों, भावनाओं और उम्मीदों का प्रतीक बने। उनकी जीवन-यात्रा गांव की मिट्टी से शुरू होकर सिनेमा के शिखर तक पहुँचती है। यह जीवनी धर्मेंद्र के जीवन को केवल घटनाओं के क्रम में नहीं, बल्कि एक जीवंत कथा के रूप में प्रस्तुत करती है — जहाँ संघर्ष है, सफलता है, असफलता है, प्रेम है और सबसे बढ़कर एक साधारण इंसान का असाधारण बन जाना है।

धर्मेंद्र का जन्म 8 दिसंबर 1935 को पंजाब के लुधियाना जिले के पास स्थित नसराली गांव में हुआ। उनका पूरा नाम धर्मेंद्र केवल था। उनका परिवार एक साधारण, ग्रामीण और अनुशासित परिवार था। बचपन से ही धर्मेंद्र ने कठिन परिस्थितियों में जीना सीखा।

गांव का जीवन सरल था, लेकिन संघर्षों से भरा हुआ था । सीमित साधन, खेतों में मेहनत और सादा दिनचर्या — यही उनका प्रारंभिक संसार था। इन परिस्थितियों ने उनके व्यक्तित्व को मजबूत बनाया। वे बचपन से ही शारीरिक रूप से मजबूत थे, लेकिन उससे भी अधिक मजबूत था उनका मन।

बचपन और सिनेमा से पहला परिचय धर्मेंद्र का बचपन साधारण बच्चों जैसा ही था, लेकिन उनके भीतर कल्पनाओं की एक अलग दुनिया बसती थी। गांव या पास के कस्बे में जब भी कोई सिनेमा टेंट लगता, वे उसे देखने के लिए बेचैन हो उठते। परदे पर चलती फिल्में उनके लिए किसी जादू से कम नहीं थीं। उस दौर में दिलीप कुमार उनके सबसे बड़े आदर्श थे। दिलीप कुमार के अभिनय को देखकर धर्मेंद्र के मन में पहली बार यह विचार जन्मा कि अभिनय भी अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम हो सकता है।

हालांकि उस समय यह केवल एक आकर्षण था, सपना नहीं। गांव के एक सामान्य परिवार से आने वाला युवक फिल्मों में जाएगा — यह विचार ही अव्यावहारिक लगता था। फिर भी सिनेमा उनके मन में धीरे-धीरे अपनी जगह बनाता चला गया।

शिक्षा और युवावस्था धर्मेंद्र की प्रारंभिक शिक्षा गांव में ही हुई। आगे की पढ़ाई के लिए वे फगवाड़ा के रामगढ़िया कॉलेज गए। पढ़ाई में वे बहुत उत्कृष्ट छात्र नहीं थे, लेकिन खेलकूद और सामाजिक गतिविधियों में सक्रिय रहते थे। कॉलेज जीवन ने उनके व्यक्तित्व को और निखारा। लंबा कद, मजबूत शरीर और सहज मुस्कान उन्हें भीड़ से अलग पहचान देती थी।

कॉलेज के दिनों में ही उन्हें यह एहसास होने लगा कि वे सामान्य नौकरी या सीमित जीवन में बंधकर नहीं रहना चाहते। इसी दौरान उन्हें फिल्मफेयर द्वारा आयोजित एक टैलेंट हंट प्रतियोगिता के बारे में पता चला। दोस्तों के प्रोत्साहन पर उन्होंने उसमें भाग लिया। यह निर्णय उनके जीवन का निर्णायक मोड़ साबित हुआ। प्रतियोगिता जीतने के बाद उन्हें मुंबई जाने का अवसर मिला — और यहीं से उनके संघर्ष की असली कहानी शुरू होती है।

मुंबई सपनों का शहर और संघर्ष की धरती उस दौर में सपनों का शहर कहलाती थी, लेकिन इन सपनों की कीमत संघर्ष से चुकानी पड़ती थी। धर्मेंद्र जब मुंबई पहुँचे, तो उनके पास न तो पर्याप्त पैसे थे और न ही कोई प्रभावशाली पहचान। वे छोटे-छोटे कमरों में रहते, सीमित साधनों में जीवन बिताते और हर दिन खुद को साबित करने की कोशिश करते।

फिल्मी दुनिया बाहर से जितनी आकर्षक दिखती है, भीतर से उतनी ही कठोर है। कई बार ऑडिशन देने के बाद भी उन्हें निराशा हाथ लगी। कई लोग उन्हें केवल एक खूबसूरत चेहरा समझते थे और उनके अभिनय की गहराई को नहीं पहचाना। लेकिन धर्मेंद्र ने हार नहीं मानी। गांव की मिट्टी में पले व्यक्ति

के लिए संघर्ष नया नहीं था।

फिल्मी करियर की शुरुआत 1960 में धर्मेंद्र को फिल्म 'दिल भी तेरा हम भी तेरे' में काम करने का अवसर मिला। यह उनकी पहली फिल्म थी। फिल्म व्यावसायिक रूप से बहुत बड़ी सफलता नहीं बनी, लेकिन इससे उन्हें फिल्मी दुनिया में प्रवेश का रास्ता मिला। शुरुआती वर्षों में उन्हें साधारण भूमिकाएँ और कम बजट की फिल्में मिलीं।

धर्मेंद्र ने इन फिल्मों को केवल काम नहीं, बल्कि सीखने का अवसर माना। हर भूमिका के साथ उनका अभिनय निखरता गया। उनकी आंखों की भाषा, संवाद अदायगी और स्वाभाविकता दर्शकों को धीरे-धीरे आकर्षित करने लगी।

'फूल और पत्थर': जीवन का निर्णायक मोड़ 1964 में आई फिल्म 'फूल और पत्थर' धर्मेंद्र के करियर का सबसे बड़ा मोड़ साबित हुई। इस फिल्म में उन्होंने एक ऐसे चरित्र को निभाया जो बाहरी तौर पर कठोर, लेकिन भीतर से संवेदनशील था। उनका अभिनय दर्शकों के दिल को छू गया। फिल्म सुपरहिट रही और धर्मेंद्र रातों-रात स्टार बन गए।

यह वही क्षण था जब एक संघर्षरत अभिनेता भारतीय सिनेमा का नया चेहरा बन गया। निर्माता-निर्देशकों की नजरें अब उन पर टिक चुकी थीं।

सुपरस्टार बनने की यात्रा (विशेष फोकस) 'फूल और पत्थर' की सफलता के बाद धर्मेंद्र का जीवन पूरी तरह बदल गया। 1960 और 1970 का दशक उनके करियर का स्वर्णिम काल माना जाता है। इस दौर में उन्होंने लगातार सफल फिल्में दीं और खुद को हर तरह की भूमिका में साबित किया।

धर्मेंद्र की सबसे बड़ी विशेषता थी उनकी बहुआयामी प्रतिभा। वे रोमांटिक हीरो भी थे, एक्शन हीरो भी और संवेदनशील कलाकार भी। 'अनुपमा' में उनका गंभीर और संयमित अभिनय, 'सीता और गीता' में सहजता, 'मेरा गांव मेरा देश' में देशज नायक का रूप और 'शोले' में वीरू का अमर किरदार — ये सभी उनकी अभिनय क्षमता के प्रमाण हैं।

'शोले' में वीरू का चरित्र भारतीय सिनेमा के इतिहास में मील का पत्थर बन गया। वीरू का हँसमुख, बेफिक्र लेकिन भीतर से भावुक व्यक्तित्व दर्शकों के दिलों में बस गया। धर्मेंद्र संवाद नहीं बोलते थे, वे उन्हें जीते थे। यही कारण था कि उनका अभिनय कभी बनावटी नहीं लगा।

धर्मेंद्र की लोकप्रियता महानगरों से लेकर गांवों तक फैल गई। वे सिर्फ सिनेमा के हीरो नहीं थे, बल्कि आम आदमी के प्रतिनिधि बन गए। उनकी सादगी, ईमानदारी और जमीन से जुड़ाव ने उन्हें हर वर्ग का प्रिय बना दिया।

असफलताएँ, आलोचना और स्वयं को ढालना हर सफल व्यक्ति के जीवन में उतार-चढ़ाव आते हैं। धर्मेंद्र का जीवन भी इससे अछूता नहीं रहा। समय के साथ दर्शकों की पसंद बदली, नई पीढ़ी के कलाकार सामने आए और कुछ फिल्में असफल रहीं। आलोचनाएँ भी हुईं।

लेकिन धर्मेंद्र ने कभी हार नहीं मानी। उन्होंने अपनी छवि को समय के अनुसार बदला और चरित्र भूमिकाएँ स्वीकार कीं। यह निर्णय उनके आत्मसम्मान और परिपक्वता को दर्शाता है। वे हर दौर में प्रासंगिक बने रहे।

निजी जीवन धर्मेंद्र का निजी जीवन भी हमेशा चर्चा में रहा। उन्होंने पहली शादी प्रकाश कौर से की, जिनसे उन्हें चार संतानें हुईं। बाद में हेमा मालिनी से विवाह ने उनके जीवन में नया अध्याय जोड़ा। इस रिश्ते को लेकर विवाद भी हुए, लेकिन समय के साथ उन्होंने संतुलन बनाए रखा।

धर्मेंद्र एक पारिवारिक और सादगीप्रिय व्यक्ति थे। वे खेती, प्रकृति और साधारण जीवन से जुड़े रहना पसंद करते थे। इस जुड़ाव उन्हें जमीन से जोड़े रखा ।

सम्मान और उपलब्धियाँ धर्मेंद्र को उनके योगदान के लिए कई पुरस्कार और सम्मान मिले। उन्हें पद्म भूषण से सम्मानित किया गया। इसके अलावा फिल्मफेयर और अन्य संस्थानों द्वारा भी उन्हें सम्मान प्राप्त हुआ। ये सम्मान उनके अभिनय और योगदान की स्वीकृति हैं।

भारतीय सिनेमा पर प्रभाव धर्मेंद्र ने भारतीय सिनेमा को एक ऐसा नायक दिया जो ताकतवर भी था और संवेदनशील भी। उन्होंने अभिनय को स्वाभाविक बनाया। उनके बाद आने वाले कई कलाकारों ने उनसे प्रेरणा ली।

धर्मेंद्र की जीवनी केवल एक अभिनेता की कहानी नहीं है, बल्कि यह उस साधारण इंसान की कथा है जिसने अपने सपनों पर अटूट विश्वास रखा। उनका जीवन यह सिखाता है कि मेहनत, धैर्य और ईमानदारी के साथ कोई भी व्यक्ति असाधारण बन सकता है। धर्मेंद्र वास्तव में एक अभिनेता नहीं, बल्कि एक युग थे।

मोबाइल फोन: सुविधा की चमक और चेतना की कीमत

निर्मल सिंह, सहायक प्रबंधक, देहरादून क्षेत्र

जेब में दुनिया, मन में बेचैनी

आज के दौर में मनुष्य की हथेली पर चमकती मोबाइल की स्क्रीन महज एक उपकरण नहीं, बल्कि उसके अस्तित्व का अनिवार्य हिस्सा बन चुकी है। इक्कीसवीं सदी के मनुष्य की सबसे स्थायी संगत यदि कोई वस्तु है, तो वह मोबाइल फोन है। यह हमारे हाथ में नहीं रहता, बल्कि धीरे-धीरे हमारे ध्यान, समय और सोच में बसता जा रहा है। सुबह आँख खुलते ही हम जिस दुनिया में प्रवेश करते हैं, वह अक्सर वास्तविक दुनिया नहीं होती, बल्कि एक डिजिटल संसार होता है—मैसेज, नोटिफिकेशन, खबरें और सोशल मीडिया की अंतहीन धारा। सुबह की पहली किरण से लेकर रात की आखिरी नींद तक, हम एक ऐसी आभासी दुनिया से घिरे हैं जिसने जीवन को सरल तो बनाया है, लेकिन हमारी आंतरिक चेतना पर गहरे घाव भी छोड़े हैं।

निस्संदेह, मोबाइल फोन ने सूचनाओं का लोकतंत्रीकरण किया है। आज ज्ञान, मनोरंजन और सेवाएं एक 'क्लिक' की दूरी पर हैं। इसने सात समंदर पार बैठे अपनों को पल भर में सामने लाकर खड़ा कर दिया है। बैंकिंग से लेकर शिक्षा तक, हर क्षेत्र में इसने समय और श्रम की बचत की है। लेकिन इस चमक ने एक ऐसा सम्मोहन पैदा किया है, जिसमें हम यह भूल गए हैं कि तकनीक हमारी सहूलियत के लिए थी, न कि हमारी चेतना पर कब्जा करने के लिए।

इस तकनीकी सुविधा के बदले हम जो कीमत चुका रहे हैं, वह अदृश्य है लेकिन बहुत भारी है। हमारी एकाग्रता इसकी बेदी पर पहली बलि बनी है। सोशल मीडिया के 'शॉर्ट्स' और 'रील्स' ने हमारे मस्तिष्क को अल्पकालिक संतुष्टि का आदी बना दिया है, जिससे गहन चिंतन और धैर्य धीरे-धीरे लुप्त हो रहे हैं। हम दुनिया भर की खबरों से तो जुड़े हैं, लेकिन अपने भीतर की शांति और सन्नाटे से डरने लगे हैं।

जब हम किसी खूबसूरत प्राकृतिक दृश्य को आँखों से देखने के बजाय कैमरे के लेंस से कैद करने को प्राथमिकता देते हैं, तो हमारी जीवंत चेतना पर तकनीक की परत चढ़ जाती है। संवेदनाओं का स्थान 'इमोजी' ने ले लिया है और संवाद का स्थान 'डाटा' ने। हम भीड़ में होकर भी अकेले हैं, क्योंकि हमारी चेतना उस भौतिक वातावरण में नहीं, बल्कि स्क्रीन के भीतर के मायाजाल में उलझी हुई है। मोबाइल ने जीवन को सुविधाजनक, तेज़ और जुड़ा हुआ बनाया है। लेकिन इसी सुविधा के साथ एक मौन प्रश्न भी जन्म लेता है—क्या हम तकनीक का उपयोग कर रहे हैं, या तकनीक हमारा उपयोग कर रही है?

आज की चुनौती मोबाइल को अपनाने की नहीं, बल्कि उसके साथ संतुलित संबंध बनाने की है।

मोबाइल का उजला पक्ष: आधुनिक जीवन का अनिवार्य उपकरण

मोबाइल फोन आधुनिक सभ्यता की एक बड़ी उपलब्धि है। इसके बिना आज के सामाजिक, आर्थिक और शैक्षणिक ढाँचे की कल्पना अधूरी है।

संवाद और संबंधों की नई परिभाषा

मोबाइल ने संवाद को तात्कालिक बना दिया है। दूर बैठे माता-पिता से वीडियो कॉल, विदेश में पढ़ते बच्चों से नियमित संपर्क—यह सब मोबाइल की देन है। आपात स्थिति में मोबाइल जीवन और मृत्यु के बीच सेतु सकता है।

ज्ञान तक सार्वभौमिक पहुँच

मोबाइल और इंटरनेट ने ज्ञान को सीमाओं से मुक्त कर दिया है। अब शिक्षा केवल कक्षा तक सीमित नहीं। कोई भी व्यक्ति, कहीं भी, कभी भी सीख सकता है। यह सूचना-क्रांति सामाजिक समानता की दिशा में एक बड़ा कदम है।

कार्य और अर्थव्यवस्था में बदलाव

डिजिटल भुगतान, ऑनलाइन बैंकिंग, रिमोट वर्क और फ्रीलांसिंग के ज़रिए मोबाइल ने कार्य-संस्कृति को नया रूप दिया है। छोटे व्यवसायों को बड़े बाज़ार मिले हैं और समय की बचत बढ़ी है।

रचनात्मकता और अभिव्यक्ति

मोबाइल ने आम व्यक्ति को मंच दिया है। लेखन, संगीत, फोटोग्राफी, वीडियो—हर व्यक्ति अब रचनाकार हो सकता है। यह लोकतांत्रिक अभिव्यक्ति का युग है।

स्पष्ट है कि मोबाइल केवल समस्या नहीं, बल्कि संभावनाओं का द्वार भी है। लेकिन हर शक्ति के साथ जिम्मेदारी आती है।

जब सुविधा निर्भरता बन जाती है

मोबाइल की समस्या उसकी उपस्थिति नहीं, बल्कि उसकी अत्यधिक और अनियंत्रित उपस्थिति है।

ध्यान की चोरी: सबसे बड़ा नुकसान

आज का मनुष्य जानकारी से गरीब नहीं, ध्यान से गरीब है।

मोबाइल ऐप्स इस तरह डिज़ाइन किए गए हैं कि वे हमारा ध्यान अधिकतम समय तक बाँधे रखें। लगातार स्क्रॉल करना, छोटे-छोटे वीडियो देखना और नोटिफिकेशन पर प्रतिक्रिया देना—यह सब हमारे मस्तिष्क को लगातार उत्तेजना की अवस्था में रहने की आदत डाल देता है।

परिणामस्वरूप गहराई से सोचने, पढ़ने या किसी एक कार्य पर टिके रहने की क्षमता कम होती जाती है

मानसिक स्वास्थ्य पर अदृश्य दबाव

सोशल मीडिया हमें दूसरों के जीवन का एक चमकदार, संपादित संस्करण दिखाता है। हम अनजाने में अपनी तुलना उनसे करने लगते हैं।

यह तुलना असंतोष, हीनभावना और चिंता को जन्म देती है।

"कुछ छूट न जाए" का डर (फियर ऑफ मिसिंग आउट -फोमो) हमें लगातार स्क्रीन से जुड़े रहने को मजबूर करता है, जिससे मन को विश्राम नहीं मिल पाता है।

रिश्तों में दूरी और संवाद की कमी

विडंबना यह है कि संवाद के सबसे बड़े साधन ने वास्तविक संवाद को कम कर दिया है। हम अक्सर परिवार एक साथ होते हुए भी अलग-अलग स्क्रीन में खोए रहते हैं। हम सुनने से ज़्यादा प्रतिक्रिया देने लगे हैं। संबंध सतही होते जा रहे हैं।

शरीर पर प्रभाव

लंबे समय तक स्क्रीन देखने से आँखों में जलन, सिरदर्द, गर्दन और पीठ दर्द आम समस्याएँ बन गई हैं। मोबाइल से निकलने वाली नीली रोशनी नींद के प्राकृतिक चक्र को बाधित करती है, जिससे अनिद्रा और थकान बढ़ती है और यही थकान शारीरिक निष्क्रियता जीवनशैली से जुड़ी बीमारियों को जन्म देती है।

बच्चों और युवाओं पर गहरा प्रभाव

बच्चों के लिए मोबाइल एक आसान मनोरंजन है, लेकिन अत्यधिक उपयोग उनके मानसिक और सामाजिक विकास को प्रभावित करता है। कल्पनाशील खेल, धैर्य और आमने-सामने संवाद की क्षमता कम हो रही है। युवाओं में आत्म-मूल्य अब स्क्रीन पर मिलने वाले लाइक्स और फॉलोअर्स से जुड़ने लगा है, जो एक अस्थिर आधार है।

असली प्रश्न: हम मोबाइल से क्यों चिपके रहते हैं?

मोबाइल केवल बाहरी उपकरण नहीं, वह हमारी भीतरी बेचैनी को शांत करने का माध्यम बन गया है। हम ऊब, अकेलेपन और मौन से डरते हैं। मोबाइल उस खालीपन को तुरंत भर देता है—लेकिन केवल अस्थायी रूप से। जैसे ही स्क्रीन बंद होती है, बेचैनी फिर लौट आती है।

समाधान: त्याग नहीं, समझदारी

मोबाइल को छोड़ देना समाधान नहीं है। समाधान है—जागरूक उपयोग और स्पष्ट सीमाएँ।

जागरूकता से शुरुआत

हर बार मोबाइल उठाने से पहले स्वयं से पूछना "क्या यह आवश्यकता है या केवल आदत?" यह प्रश्न हमें स्वचालित व्यवहार से बाहर लाता है।

समय और स्थान की सीमाएँ

- सोने से कम से कम एक घंटा पहले मोबाइल से दूरी
- भोजन और पारिवारिक समय में फोन अलग रखना
- सुबह उठते ही स्क्रीन देखने की आदत छोड़ना

ये छोटे नियम मन को बड़ा विश्राम देते हैं।

नोटिफिकेशन का अनुशासन

हर ऐप का नोटिफिकेशन आवश्यक नहीं। कम नोटिफिकेशन का अर्थ है—कम व्यवधान और अधिक एकाग्रता।

डिजिटल डिटॉक्स

दिन में कुछ घंटे या सप्ताह में एक दिन मोबाइल से दूरी बनाना मानसिक संतुलन लौटाता है। इस समय पढ़ना, टहलना, लिखना या प्रकृति के साथ समय बिताना उपयोगी होता है ।

बच्चों के लिए उदाहरण बनना

बच्चों को मोबाइल से दूर रखने का सबसे प्रभावी तरीका है—स्वयं संतुलित उपयोग। उपदेश से ज़्यादा प्रभावी होता है व्यवहार।

मोबाइल को साधन बनाएँ, केंद्र नहीं

मोबाइल का उपयोग सीखने, स्वास्थ्य, ध्यान और रचनात्मकता के लिए किया जाए, तो वह जीवन को समृद्ध बनाता है।

लेकिन यदि वही जीवन का केंद्र बन जाए, तो धीरे-धीरे जीवन की गुणवत्ता कम होने लगती है।

निष्कर्ष: स्क्रीन के बाहर भी जीवन है

मोबाइल आधुनिक जीवन का अनिवार्य हिस्सा है, लेकिन जीवन स्वयं नहीं। जीवन उन क्षणों में है जहाँ हम पूरी तरह उपस्थित होते हैं—किसी व्यक्ति के साथ, किसी विचार के साथ, या स्वयं के साथ। स्क्रीन हमें दुनिया दिखा सकती है, लेकिन जीवन का अनुभव केवल स्क्रीन से बाहर ही संभव है।

मोबाइल को जेब में रखें, लेकिन चेतना में नहीं।

क्योंकि दुनिया स्क्रीन में समा सकती है, पर जीवन नहीं।

विश्व हिंदी दिवस: संक्षिप्त परिचय

विश्व हिंदी दिवस हर साल 10 जनवरी को मनाया जाता है। इसकी शुरुआत 1975 में नागपुर में हुए प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन से हुई थी, जिसका उद्घाटन तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने किया था। इस सम्मेलन में मॉरीशस के प्रधानमंत्री सर शिव सागर रामगुलाम मुख्य अतिथि थे। यही वह दिन था जब हिंदी को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर एक नई पहचान मिली। बाद में 2006 से भारत सरकार ने इसे हर साल आधिकारिक रूप से मनाना शुरू किया। 2007 में तत्कालीन प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने यह निर्णय लिया कि सभी भारतीय दूतावासों में विश्व हिंदी दिवस मनाया जाएगा, जिससे हिंदी का वैश्विक प्रचार-प्रसार और तेज़ हुआ।

अब तक कुल 12 विश्व हिंदी सम्मेलन आयोजित हो चुके हैं। इनमें से 4 भारत में हुए हैं। यूरोप में केवल 1 सम्मेलन हुआ है, जो 1999 में लंदन में आयोजित किया गया था। इसके अलावा मॉरीशस, त्रिनिदाद और टोबैगो, सूरीनाम, अमेरिका, दक्षिण अफ्रीका और फिजी जैसे देशों में भी सम्मेलन हुए हैं। इस तरह हिंदी ने अपनी पहुँच को विश्व के अलग-अलग महाद्वीपों तक फैलाया है।

विश्व हिंदी सचिवालय मॉरीशस के फीनिक्स शहर में स्थित है। इसकी स्थापना भारत और मॉरीशस के सहयोग से 1999 के समझौते के बाद हुई थी। इसका मुख्य उद्देश्य हिंदी को संयुक्त राष्ट्र की आधिकारिक भाषा बनाने की दिशा में काम करना और विश्वभर में हिंदी गतिविधियों का समन्वय करना है। सचिवालय से कई पत्रिकाएँ प्रकाशित होती हैं। इनमें विश्व हिंदी पत्रिका, विश्व हिंदी साहित्य पत्रिका और विश्व हिंदी समाचार पत्रिका शामिल हैं।

1. विश्व हिंदी दिवस हर साल किस तारीख को मनाया जाता है?
   क)14 सितंबर ख) 10 जनवरी
   ग) 2 अक्टूबर घ) 15 अगस्त
2. पहला विश्व हिंदी सम्मेलन किस वर्ष आयोजित हुआ था?
   क)1975 ख) 1983
   ग) 1999 घ) 2006
3. प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन कहाँ आयोजित हुआ था?
   क)दिल्ली ख) नागपुर
   ग) भोपाल घ) लंदन
4. प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन का उद्घाटन किस प्रधानमंत्री ने किया था?
   क)अटल बिहारी वाजपेयी ख) इंदिरा गांधी
   ग) नरेंद्र मोदी घ) राजीव गांधी
5. प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन में मुख्य अतिथि कौन थे?
   क)महेंद्र चौधरी ख) शिव सागर रामगुलाम
   ग) जॉर्ज फर्नांडिस घ) मनमोहन सिंह
6. भारत सरकार ने आधिकारिक रूप से विश्व हिंदी दिवस कब से मनाना शुरू किया?
   क)1999 ख) 2003
   ग) 2006 घ) 2010
7. भारत के किस प्रधानमंत्री ने निर्णय लिया कि सभी भारतीय दूतावासों में विश्व हिंदी दिवस मनाया जाएगा?
   क) इंदिरा गांधी ख) अटल बिहारी वाजपेयी
   ग) मनमोहन सिंह घ) नरेंद्र मोदी
8. अब तक कुल कितने विश्व हिंदी सम्मेलन आयोजित हो चुके हैं?
   क)10 ख) 12
   ग) 15 घ) 20
9. भारत में अब तक कितने विश्व हिंदी सम्मेलन आयोजित हुए हैं?
   क)2 ख) 3
   ग) 4 घ) 5
10. यूरोप में अब तक कितने विश्व हिंदी सम्मेलन हुए हैं?
   क)1 ख) 2
   ग) 3 घ) 4
11. हिंदी दिवस कब मनाया जाता है?
   क)10 जनवरी ख) 14 सितंबर
   ग) 2 अक्टूबर घ) 26 जनवरी
12. हिंदी दिवस और विश्व हिंदी दिवस में मुख्य अंतर क्या है?
   क) हिंदी दिवस भारत में, विश्व हिंदी दिवस अंतरराष्ट्रीय स्तर पर
   ख) दोनों एक ही हैं
   ग) हिंदी दिवस साहित्य के लिए, विश्व हिंदी दिवस राजनीति के लिए
   घ) कोई अंतर नहीं
13. विश्व हिंदी सचिवालय कहाँ स्थित है?
   क)दिल्ली ख) भोपाल
   ग) फीनिक्स, मॉरीशस घ) लंदन
14. विश्व हिंदी सचिवालय की स्थापना किस वर्ष हुई थी?
   क)1999 के समझौते के बाद ख) 1975
   ग) 2006 घ) 2015
15. विश्व हिंदी सचिवालय का मुख्य उद्देश्य क्या है?
   क)हिंदी को भारत में बढ़ावा देना
   ख) हिंदी को संयुक्त राष्ट्र की आधिकारिक भाषा बनाना
   ग) हिंदी साहित्य का प्रचार करना
   घ) हिंदी को केवल प्रवासी भारतीयों तक सीमित रखना

नोट : राजभाषा प्रश्नोत्तरी के उत्तर के लिए पृष्ठ संख्या 51 देखें

संकलनकर्ता:
आदर्श गुप्ता
प्रबंधक
क्षेत्रीय कार्यालय दिल्ली

प्रतिस्पन्दन

आपके बैंक की तिमाही गृह पत्रिका 'वाणी' का राजभाषा विशेषांक प्राप्त करते हुए अति प्रसन्नता हुई। सर्वप्रथम हमारी ओर से आपके बैंक को प्रतिष्ठित राजभाषा कीर्ति प्रथम पुरस्कार प्राप्त करने हेतु बहुत - बहुत बधाई ।

राजभाषा हिंदी को समर्पित पत्रिका का यह विशेषांक स्वयं में सारगर्भित एवं महत्वपूर्ण विषयों को समेटे हुए है। राजभाषा किसी भी राष्ट्र की सांस्कृतिक और राष्ट्रीय पहचान का प्रतीक है, जिसे पत्रिका में बखूबी स्थान दिया गया है। पत्रिका में प्रकाशित अन्य लेखों के विषय पत्रिका को संतुलित करते है। पत्रिका के माध्यम से कैथी लिपि को उजागर करता लेख हमारे भाषा संबंधी ज्ञान का विस्तार करता है। पत्रिका में प्रकाशित बैंकिंग तथा समसामयिक विषयों पर लेख अत्यंत संतुलित हैं। पत्रिका में लेख जहां समसामयिक विषयों को गंभीरता से दिखाते हैं, वहीं चुटकुले पाठकों को गुदगुदा भी जाते हैं। पत्रिका की भाषा सरल एवं प्रवाहमयी है, जो पाठकों को बोझिल नहीं करती।

'वाणी' पत्रिका के लगातार प्रकाशित होते विशेषांक बैंकिंग जगत में समसामयिक आर्थिक विषयों से पाठकों को अवगत कराते हैं, जोकि एक सराहनीय प्रयास है। पत्रिका के सफल संपादक के लिए संपूर्ण संपादकीय समूह को आगामी अंक हेतु शुभकमनाएं।

गजराज देवी सिंह ठाकुर
महा प्रबन्धक सह मुख्य राजभाषा अधिकारी, पंजाब एंड सिंध बैंक, प्रधान कार्यालय

आपकी तिमाही पत्रिका 'वाणी' की प्रति हमें प्राप्त हुई। एतदर्थ हार्दिक धन्यवाद।

'वाणी' पत्रिका का यह अंक राजभाषा विशेषांक के रूप में प्रकाशित किया गया है जिसमें विभिन्न विषयों पर सामयिक लेखों को समाहित किया गया है। पत्रिका में प्रकाशित 'साहित्य का अध्ययन क्यों?' और 'तकनीकी शिक्षा में हिंदी की स्थिति' लेख तथा 'मौसम' और 'माँ' कविताएँ हृदय को स्पर्श करती रचनाएं हैं।

पत्रिका में समाहित श्रीमती सोनू जोशी, प्रबंधक द्वारा लिखित 'भगवती चरण वर्माः एक बहुआयामी व्यक्तित्व' वास्तव में एक उत्साहवर्धक आलेख है जिसके माध्यम से प्रत्येक कर्मचारी हिंदी के प्रति जागरूक होगा।

'वाणी' पत्रिका के इस अंक में प्रकाशित सृजनात्मक लेखों हेतु रचनाकारों को अनंत शुभकामनाएँ एवं संपादक मंडल को हार्दिक बधाई।

आगामी अंकों हेतु अशेष शुभकामनाएँ,

डॉ. हेमलता
मुख्य प्रबन्धक एवं प्रभारी – राजभाषा, यूको बैंक

बैंक की गृह पत्रिका “वाणी” का 146वाँ अंक (सितम्बर 2025 संस्करण) प्राप्त हुआ, जिसके लिए हार्दिक धन्यवाद। यह अंक प्रत्येक बार की भाँति अत्यंत रोचक, ज्ञानवर्धक एवं आकर्षक रूप में प्रकाशित हुआ है। माननीय प्रबंध निदेशक व मुख्य कार्यपालक अधिकारी जी का संदेश अत्यंत प्रेरणास्पद है, जो बैंक के सतत विकास एवं उत्कृष्ट कार्य संस्कृति को सुदृढ़ दिशा प्रदान करता है। कार्यपालक निदेशक श्री जयदीप दत्ता रॉय एवं श्री धनराज टी के संदेश भी बैंक को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाने हेतु कर्मचारियों में उत्साह एवं प्रतिबद्धता का संचार करते हैं।श्री एन के सिन्हा, महा प्रबंधक जी द्वारा ऋण जोखिम प्रबंधन पर प्रस्तुत विचार अत्यंत सूक्ष्म, व्यावहारिक एवं मार्गदर्शक हैं, जो बैंकिंग कार्यप्रणाली को और अधिक सुदृढ़ बनाने में सहायक सिद्ध होंगे।श्री अरबिन्द्र मोहन बनर्जी जी का आलेख “सोशल मीडिया के दौर में बैंकिंग” वर्तमान डिजिटल युग में बैंकिंग सेवाओं के विस्तार, जनसंपर्क एवं लाभप्रदता की नई संभावनाओं को प्रभावशाली ढंग से रेखांकित करता है। इसी क्रम में श्री गोपाल एस, महा प्रबंधक द्वारा प्रस्तुत आलेख “तकनीकी शिक्षा में हिंदी की स्थिति” जैसे समसामयिक एवं ज्वलंत विषय पर गहन विश्लेषण प्रस्तुत करता है, जो भाषा और शिक्षा के भविष्य पर महत्वपूर्ण विमर्श को प्रोत्साहित करता है।पत्रिका में प्रकाशित विभिन्न गतिविधियाँ बैंक में राजभाषा कार्यान्वयन की उत्कृष्ट उपलब्धियों को भली-भाँति प्रतिबिंबित करती हैं। समग्र रूप से यह अंक सामग्री की गुणवत्ता, विषयों की विविधता तथा प्रस्तुति की आकर्षकता — सभी मानकों पर पूर्णतः खरा उतरता है।यह पत्रिका न केवल ज्ञानवर्धन का माध्यम है, बल्कि कर्मचारियों एवं पाठकों को प्रेरणा, नवाचार और सकारात्मक सोच की दिशा भी प्रदान करती है। उत्कृष्ट प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।

शुभकामनाओं सहित

संजय किशोर
महा प्रबंधक, दिल्ली क्षेत्र

प्रतिस्पन्दन

हमारे बैंक की गृह पत्रिका वाणी (राजभाषा विशेषांक) का 146वां अंक प्राप्त हुआ। पत्रिका के आवरण पृष्ठ पर माननीय केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह से वर्ष 2024-25 हेतु राजभाषा कीर्ति – प्रथम पुरस्कार (लगातार 3 वर्षों से) प्राप्त करने के लिए हमारे प्रबंध निदेशक व मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री अजय कुमार श्रीवास्तव एवं केंद्रीय कार्यालय के राजभाषा विभाग की पूरी टीम को हार्दिक बधाई।

प्रबंध निदेशक व मुख्य कार्यपालक अधिकारी महोदय का प्रेरणादायी संदेश राजभाषा कार्यान्वयन के प्रति जागरूकता प्रदान करता है तथा साथ ही बैंकिंग क्षेत्र में तिमाही-दर-तिमाही सफलता प्राप्त करने हेतु नई प्रेरणा प्रदान करता है।

सितंबर में हिन्दी दिवस होने के कारण यह तिमाही वैसे भी राजभाषा कार्यान्वयन हेतु प्रमुख है। सभी क्षेत्रीय कार्यालयों और केंद्रीय कार्यालय में हिन्दी दिवस समारोह आयोजित करने के कारण यह एक उत्सव जैसा प्रतीत होता है। राजभाषा विशेषांक के शीर्षक के रुप में पत्रिका में संकलित समस्त रचनाएं विषयानुकूल,पठनीय एवं सारगर्भित है। विशेषकर तकनीकी शिक्षा में हिन्दी की स्थिति और सोशल मीडिया के दौर में बैंकिंग अत्यंत ज्ञानवर्धक है।

सभी रचनाकारों को उनकी रचनाओं हेतु बधाई एवं संपादकीय टीम को इस सुसज्जित अंक के लिए बधाई एवं आगामी अंक हेतु शुभकामनाएं।

निधिर कान्त
मुख्य क्षेत्रीय प्रबन्धक, जयपुर क्षेत्र

आपकी तिमाही गृह पत्रिका "वाणी" का 146वां राजभाषा विशेषांक प्राप्त हुआ तदर्थ धन्यवाद! वर्ष 2024-25 हेतु माननीय श्री अमित शाह, केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री, भारत सरकार से प्रतिष्ठित राजभाषा कीर्ति प्रथम पुरस्कार प्राप्त करना हमारे बैंक व अन्य स्टाफ सदस्यों के लिए अत्यंत गर्व की बात है। यह आपकी मेहनत एवं विभाग के प्रति कर्तव्यबोध एवं दृढ़ संकल्प को परिलक्षित करता है। पत्रिका में निहित कार्यपालकों के संदेश सारगर्भित व प्रेरणादायक हैं। इसमें मौजूदा आलेख अत्यंत रोचक, ज्ञानवर्धक एवं गागर में सागर भरने वाली कथ्य को चरितार्थ करते हैं। पत्रिका का आवरण, साज-सज्जा, कलेवर अत्यंत आकर्षक और मनमोहक है। पत्रिका के सफल सम्पादन एवं प्रकाशन हेतु संपादक मण्डल को बधाई! पत्रिका के आगामी अंक हेतु अग्रिम शुभकामनाएं।

शरद कुमार मिश्रा
मुख्य क्षेत्रीय प्रबन्धक, कोलकाता - 1 क्षेत्र

बैंक की तिमाही गृह पत्रिका वाणी का 146वां अंक प्राप्त हुआ। सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका का आवरण पृष्ठ अत्यंत आकर्षक है। माननीय गृह मंत्री श्री अमित शाह से बैंक को प्राप्त राजभाषा कीर्ति- प्रथम पुरस्कार के लिए हार्दिक बधाई। हिंदी दिवस के अवसर पर माननीय गृह मंत्री श्री अमित शाह का प्रेरणादायी संदेश, जिसमें उन्होंने भाषाओं के माध्यम से देश को एकता के सूत्र में बाँधने का संदेश दिया है, हम सभी के अंदर नई ऊर्जा का संचार किया है। हमारे प्रबंध निदेशक व मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री अजय कुमार श्रीवास्तव ने अपने संदेश में राजभाषा विभाग द्वारा प्रकाशित "ज्ञान क्षितिज पर हिंदी" पुस्तक के विमोचन पर प्रसन्नता व्यक्त की है। साथ ही उन्होंने हमारे बैंक की सितंबर तिमाही के परिणामों के संबंध में महत्वपूर्ण जानकारी साझा की है, जो अत्यंत प्रेरणादायक एवं उत्साहवर्धक है। कार्यपालक निदेशक श्री जयदीप दत्ता रॉय, श्री धनराज टी एवं महा प्रबंधक श्री नितेश कुमार सिन्हा का संदेश अत्यंत प्रेरणादायक है। पत्रिका में संकलित समस्त रचनाएं विषयानुकूल, ज्ञानवर्धक, पठनीय एवं संग्रहणीय है। यह पत्रिका न केवल विभिन्न क्षेत्रों के नवाचारों, उपलब्धियों तथा श्रेष्ठ प्रक्रियाओं को साझा करने का माध्यम है, बल्कि सभी सहकर्मियों को हिंदी के संवर्धन हेतु प्रेरित भी करती है। सभी रचनाकारों को शुभकामनाएं। पत्रिका के सफल संपादन एवं प्रकाशन हेतु संपादन मंडल को हर्दिक बधाई एवं आगामी अंकों के श्रेष्ठ प्रकाशन हेतु शुभकामनाएं।

रवि कुमार गुप्ता
वरिष्ठ क्षेत्रीय प्रबंधक, विशाखापट्टणम क्षेत्र

गतिविधियाँ

क्षेत्रीय प्रमुखों हेतु आयोजित बिजनेस कॉन्फ्रेंस को संबोधित करते हुए **प्रबंध निदेशक व मुख्य कार्यपालक अधिकारी** एवं साथ में हैं, **कार्यपालक निदेशक द्वै व अन्य कार्यपालक गण**

हमारे अध्यक्ष **श्री श्रीनिवासन श्रीधर** एवं एमडी व सीईओ **श्री अजय कुमार श्रीवास्तव** बैंक के यूट्यूब चैनल के गोल्डन बटन का अनावरण करते हुए

आइओबी
आपकी प्रगति का सच्चा साथी

विशिष्ट सरकारी और प्रतिष्ठित संस्थानों के कर्मचारियों के लिए प्रीमियम बैंकिंग

आइओबी प्रीमियम वेतन खाता

- 1.10 करोड़* तक का निःशुल्क वैयक्तिक दुर्घटना बीमा
- 1.50 लाख* प्रति वर्ष तक का निःशुल्क साइबर धोखाधड़ी बीमा कवर
- 30,000* (प्रति वर्ष) तक का निःशुल्क अस्पताल नकद (मेडिक्लेम)

*नियम और शर्तें लागू

www.iob.in हमें फॉलो करें @IOBindia 1800 890 4445 | 1800 425 4445